अहल्या द्रौपदी तारा, कुन्ती मन्दोदरी तथा ।
पञ्चकन्याः स्मरेन्नित्यं, महापातक नाशनीः ॥
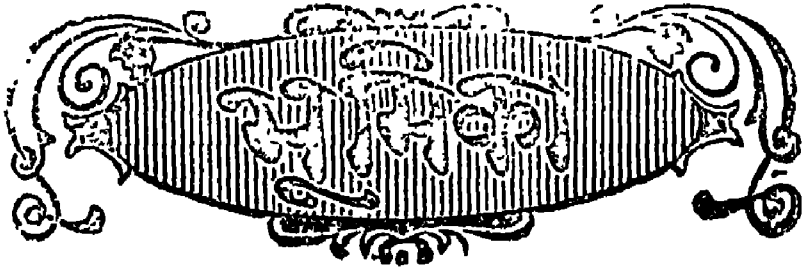
महिमामयी द्रौपदी, पतिव्रता-वीर-पत्नी थी। क्षमा और दयाकी साक्षात् मूर्ति थी! पाण्डवों पर जब विपत्ति आई और कौरव-सभामें दुर्मति दुर्योधनकी आज्ञासे दुःशासनने चीर खींचकर अपमान करना चाहा, तो स्वयं भगवान् कृष्णने द्रौपदीका चीर बढ़ाकर—उनकी लज्जा रखी। भगवान् कृष्णमें द्रौपदीकी अपूर्व श्रद्धा थी। भगवान् कृष्ण भी द्रौपदी पर प्रसन्न थे। भगवान् तो भक्त वत्सल हैं ही। महाभारतका युद्ध आरम्भ होनेसे पहले भगवान् कृष्ण जब पाण्डवोंके दूत बनकर कौरव-कैम्पमें जाने लगे, तो द्रौपदीने अपने केश दिखाकर कहा था:—"भैया, इन केशोंके अपमानकी बात न भूलना!" द्रौपदी के इस वाक्यमें भयङ्कर राजनीति भरी हुई है। वीर लोग स्त्रियोंका अपमान सहन नहीं कर सकते। द्रौपदी श्रीकृष्णको भाई कहती थी। आज उसने उनको अपने उस अपमानकी बात याद कराकर उत्तेजित कर दिया कि देखना कहीं अपमान-जनक सन्धि मत कर डालना और सन्धि करते समय इन केशोंके उस अपमानकी बात याद रखना!

दुर्मति दुर्योधन तो युद्धके लिये तुला बैठा था। उसने पाण्डवोंके दूत श्रीकृष्णको छलसे पकड़कर पहले तो वहीं वध कर देना चाहा परन्तु सर्वान्तर्यामी भगवान् श्रीकृष्ण उसके छलको समझ गये और उन्होंने तत्काल अपना विराट् रूप दिखाकर उसे किंकर्त्तव्यविमूढ़ कर दिया। इसपर फिर पाण्डवदूत—श्रीकृष्णने पूछा और कहा कि

पाण्डवोंको पांच गांव ही दे दो ! इसपर दुर्योधनने उत्तेजित होकर कहाः—शूच्यग्रं नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव ! अर्थात् कृष्ण तुम तो पांच गांव देनेकी बात कह रहे हो। मैं बिना युद्धके 'सूई' के अग्र भागके बराबर भी पाण्डवोंको जगह नहीं देना चाहता। इस पर श्रीकृष्ण चले आये और उसका परिणाम हुआ महाभारतका भयङ्कर महायुद्ध, जिसके स्मरणमात्रसे आज भी रोमाञ्च हो उठता है।

देवी-द्रौपदी, एक तो अपने सद्गुणोंके कारण ही—आदर्श है। फिर श्रीकृष्णकी धर्मभगिनी होनेसे जो कार्य-कलाप उस द्वारा हुए हैं, उनसे उसकी विमल ज्योतिसे रमणी-समाज आलोकित हो उठा है। उसी देवी-द्रौपदीके पवित्र चरित्रको बड़ी सरस और सरल भाषामें पं० रमानाथशास्त्रीने लिखकर हिन्दी पाठक पाठिकाओंपर एहसान किया है।

इससे पहले हमारे पौराणिक उपाख्यान सावित्री-सत्यवान, नल-दमयन्ती, शैव्या हरिश्चन्द्र, सीता-देवी, सती-पार्वती और शकुन्तला प्रकाशित हो चुके हैं। हिन्दी-संसारने उनको अपनाकर हमारा उत्साह बढ़ाया है। 'देवी-द्रौपदी' का—कलेवर उपरोक्त उपाख्यानों की अपेक्षा कुछ बढ़ जाने और चित्रोंका यथेष्ट समावेश रहने पर भी मूल्य वही—सर्वसुलभ ।|=) मात्र रखा गया है। आशा है हमारे कृपालु पाठक-पाठिकायें, पूर्व प्रकाशित उपाख्यानोंकी तरहसे इसे भी उदारतापूर्ण कृपाकी दृष्टिसे देखकर हमारा उत्साह सम्वर्द्धन करेंगे।

वसन्त-पञ्चमी }
सम्वत् १९८१ } उमादत्त शर्मा।

देवी-द्रौपदी

प्रथम परिच्छेद

जन्म और बाल्यकाल ।

——:o:——
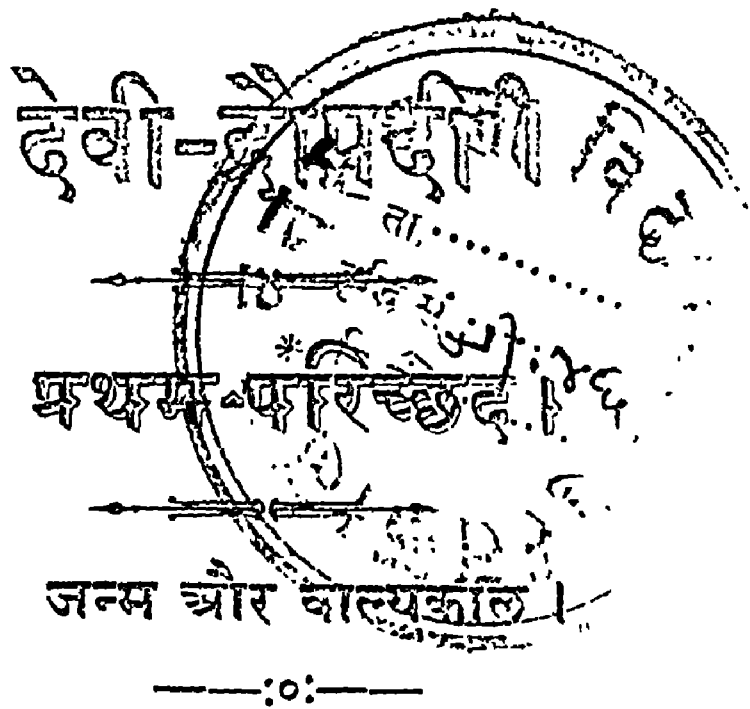
द्रुपद-पाञ्चाल देशके राजा थे और द्रोण लङ्गोटिया यार ! द्रुपद राजपुत्र थे और द्रोण एक गरीब ब्राह्मण । द्रुपद का राज्याभिषेक हुआ । वे पञ्चाल देशके राजा होगये । पर द्रोणकी दरिद्रता दूर न हुई । वे अपने मित्र द्रुपदके यहां गये । अपनी दरिद्रता दूर करनेके लिये द्रुपदसे कहा । पर द्रुपदराज बचपनकी बात भूल गये । राज्य प्राप्तिसे उन्हें अभिमान होगया । मैं राजा और यह गरीब ब्राह्मण ! इसकी मेरी मैत्री कैसी ? यह सोच उन्होंने द्रोणका तिरस्कार किया ।

पाञ्चाल राजाने कहा—द्रोण ! तुम्हारी हमारी मैत्री कैसी ? मैं पञ्चाल देशका राजा और तुम गरीब ब्राह्मण, भला राजाका भी कोई मित्र होता है ?

इस बातसे द्रोणको बड़ा दुःख हुआ । उन्होंने कहा—हे पाञ्चाल राज, यह तुम स्मरण रखना कि मुझे भिखमङ्गा ब्राह्मण न समझना । मैं गरीब तो अवश्य हूं पर मुझमें शक्ति है । मैं तुम्हारे

इस अपमानका बदला अवश्य लूंगा। मैं तुम्हारे राज्यसे जाता हूं, पर मेरी बात स्मरण रखना।

इस अपमानका वदला लेनेकी चिन्तामें वे वहांसे चल पड़े। वे हस्तिनापुर चले गये। वहां पर वे पाण्डव और कौरवोंकी अस्त्रशस्त्र-विद्याके आचार्य नियुक्त हुए। उन्होंने पाण्डव और कौरवोंको अस्त्र-शस्त्र-विद्याकी पूर्ण शिक्षा दी। जब उनकी शिक्षा समाप्त हुई, तब गुरु-दक्षिणामें द्रोणने कौरव और पाण्डवोंसे द्रुपदराजको कैद कर लानेके लिये कहा। कौरव और पाण्डवोंने इस बातको स्वीकार किया।

कौरव और द्रुपदमें युद्ध छिड़ गया, पर कौरव हार गये। जिस समय कौरवोंकी सेना तितर बितर हो रही थी, उसी समय प्रवल पराक्रमी अर्जुन समरभूमिमें जा पहुंचे। वे अपने शस्त्रप्रहारसे शत्रु सेनाका नाश करने लगे। शत्रुसेना त्राहि त्राहि कर भाग चली। अर्जुनने द्रुपदको हरा कर कैद कर लिया। और उन्होंने उनको लाकर द्रोणके सामने खड़ा कर दिया।

द्रुपदको कैद करके लाते हुए अपने प्रिय शिष्य अर्जुनको द्रोणने देखा। उसें देख वड़े ही प्रसन्न हुए। उन्होंने द्रुपदसे कहा, "द्रुपद, कहो ? इस समय तुम मेरे कैदी हो। मैं चाहूं तो तुम्हारा सिर उतार लूं। कहो तुम्हारे साथ क्या वर्ताव किया जाय ?" द्रुपद मारे लज्जा और क्रोधके सिर नीचा किये हुए थे। वे कुछ न कह सके। चुपचाप सिर नीचा किये रह गये।

द्रोणने कहा—"द्रुपद ! डरो मत। मैं तुम्हारा वध करना नहीं चाहता। कहो तुम्हारे साथ क्या किया जाय ?"

मारे लज्जा और अपमानके द्रुपद कुछ भी न बोल सके। सिर नीचा किये ही रह गये।

इस समय वे द्रोणके कैदी हैं । द्रोण जो कहें वह उनको मानना ही पड़ेगा । अतः द्रोणने उनसे उनके राज्यका आधा भाग ले लिया और आधा उनको दे दिया । इस अपमानसे द्रुपदको बड़ा कष्ट हुआ । इस असह्य वेदनाको वे नहीं सह सके । वे द्रोणके वधके लिये दिन रात सोचने लगे । इसके लिये उन्होंने बहुत कुछ प्रयत्न किया पर सफल मनोरथ नहीं हुए । अन्तमें उन्होंने याज और उपयाज नामक महर्षियोंकी सहायतासे पुत्रेष्टि यज्ञ किया । इससे धृष्टद्युम्न नामका उन्हें एक पुत्र हुआ । इसी यज्ञसे उन्हें एक रूपवती कन्या हुई । जिसका नाम कृष्णा रखा गया । बादमें इसका नाम द्रौपदी और पाञ्चाली पड़ा ।

द्वितीय-परिच्छेद।

स्वयंवर और विवाह।

ज्यों ज्यों द्रौपदो बड़ी होने लगी, त्यों त्यों उसका रूप लावण्य भी बढ़ने लगा। उसने कौमार-अवस्थामें पदार्पण किया। यह देख राजा द्रुपदको उसके विवाहके लिये चिन्ता हुई। उन्होंने अपने मनमें यह पक्का इरादा कर लिया कि मैं इसका विवाह उसीके साथ करूंगा जो सबसे बड़ा भारी धनुर्धारी होगा। इसके लिये स्वयं वर की तलाश करने लगे।

सबसे बड़े धनुर्धारीकी परीक्षा करनेके लिये उन्होंने एक आकाशयन्त्र बनवाया। यह यन्त्र अधरमें लटका हुआ हिला करता था। उसी यन्त्रमें एक निशाना लटकाया गया था।

नगरसे थोड़ी ही दूर पर स्वयंवर-स्थान बनाया गया। सभा-स्थानके चारों ओर दीवारें बनवायी गयीं, खाइयां खोदी गयीं। उसमें स्थान स्थान पर बड़े बड़े द्वार बनवाये गये। रङ्गभूमिके चारों ओर समतल भूमि पर दूधके समान शुभ्र राजभवन, मणियोंसे युक्त उनकी छतें, रङ्ग विरङ्गके फूलोंकी मालाओंसे शोभित चंदवे इत्यादि विचित्र छटा दिखा रहे थे।

यह सब तैयारियां करके राजा द्रुपदने यह मनादी करवा दी कि जो कोई हिलते हुए यन्त्रके छेदके भीतरसे पांच ही बाणोंमें निशाना मार सकेगा उसीको मैं कन्यादान दूंगा।

न। [illegible]

आने लगे। कर्णको लेकर दुर्योधन आदि कौरव भी आये। बलदेव, कृष्ण आदि यादव लोग भी आये। और शल्य आदि राजा भी आये। अनेक स्थानोंसे ऋषि महर्षि और ब्राह्मण लोग भी उत्सव देखनेके लिये आये। तथा पांचों पाण्डव भी ब्राह्मणके वेशमें आये।

राजा द्रुपदने स्वयम्बरमें आये हुए लोगोंका यथायोग्य आदर सत्कार किया। उन लोगोंके मन वहलावके लिये नाच, गाना, बाजा, खेल-कूद, कला कौशल और कसरतें दिखानेके लिये अच्छी व्यवस्था कर दी गयी।

स्वयंवरका दिन आ पहुंचा। रङ्गभूमिमें सुगन्धित जल छिड़का गया। दर्शक लोगोंके बैठनेवाले मञ्चों पर अच्छे अच्छे आसन बिछाये गये। अस्त्र-शस्त्र विद्याके जानने वाले बड़े वड़े शूरवीर राजा लोग आये। वे उत्तम वस्त्र और गहने पहने हुए थे, अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित थे। वे लोग आसनोंके सबसे ऊपर वाली कतारमें जा बैठे। वे अपने कुल शील, और ऐश्वर्यके घमण्डमें चूर हो रहे थे। एक दूसरेको डाह भरी आंखोंसे देख रहा था। स्वयंवरका शुभ मुहूर्त्त आ पहुंचा। राजा द्रुपदके पुरोहितने विधिवत आहुति देकर अग्निको तृप्त किया। ब्राह्मणसे स्वस्तिवाचन कराया। यह सब हो, जाने पर बाजा बजना बन्द हो गया। रङ्गभूमिमें सन्नाटा छा गया। इसके बाद उत्तमोत्तम वस्त्र और अलङ्कारोंसे सुसज्जित, हाथमें विचित्र काञ्चन-माला लिये हुए परम सुन्दरी द्रौपदी अपने भाई धृष्टद्युम्नके साथ सभामण्डपमें आयी। उसके भाई धृष्टद्युम्नने मधुर और ऊंचे स्वरसे हाथ उठाकर कहा—हे नरेशगण! आपलोग मेरी बातें सुनिये। यह धनुष वाण और निशाना है इस हिलते हुए यन्त्रके बीचों-बीचके छेदसे धनुष पर वाण चढ़ा कर और पांच वाण चलाकर जो निशाने

उस समय त्रैलोक्यसुन्दरी द्रौपदीको देख राजा लोग मोहित हो गये। मोहवश वे अन्धे हो रहे थे। एक दूसरेको जीतनेकी इच्छा से अपने अपने आसनोंसे वे उठे। रङ्गभूमिके सभी लोग द्रौपदीकी ओर टकटकी लगाये रह गये।

राजकुमार तो अपने अपने प्राण द्रौपदी पर निछावर कर चुके थे। वे ईर्षा और दुराशासे अपना अपना ओंठ चबा रहे थे। एक दूसरेके निशानेका फल देखनेके लिये व्यग्र हो रहे थे। एक एक करके दुर्योधन, शल्य, बङ्ग नरेश, विदेहराज आदि राजकुमारोंने अपने अपने बल-वीर्यको दिखलाया; पर उस विकट धनुषको पूरी तौरसे तानकर उस पर प्रत्यञ्चा (डोरी) चढ़ाना तो दूर रहा, उसको जरासा झुकाते ही वे इधर उधर गिरने लगते थे। अतः राजकुमारों को हार माननी पड़ी। लज्जासे उनका सिर नीचा हो गया और चेहरे फीके पड़ गये। उनके मनसे द्रौपदीके पानेकी आशा जाती रही।

राजकुमारोंकी यह दशा देख महावीर कर्ण झट धनुषके पास जा पहुंचे। उन्होंने धनुष उठा लिया और उस पर प्रत्यञ्चा चढ़ा दी। इसके बाद उन्होंने पांच वाण उठा लिये और वह आकाशयन्त्रके पास पहुंचकर निशाना मारनेके लिये तैयार हुए। यह देख लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। सभीने समझ लिया कि निशाना यही मारेंगे और जयमाल पावेंगे। इससे ब्राह्मण-वेशधारी पाण्डव लोग घबड़ा गये। सब एक मुंहसे कहने लगे कि यह राधाका पुत्र है, सारथि अधिरथने इसका पालन किया है। इसका जन्म सूतवंशमें हुआ है। इ तरहकी अनेक तिरस्कार सूचक बातें सुनकर द्रौपदी सहसा उठी,—“मैं सूत पुत्रको न वरूंगी।” यह सुनते ही अभिमानी को क्रोधयुक्त हंसी आयी। उन्होंने उसी समय धनुष-वाण रख

अर्जुनका लक्ष्य-भेद ।

इसके बाद बाकी क्षत्रिय लोग भी अपने अपने भाग्यकी परीक्षाके लिये उठ खड़े हुए। एक एक करके सभीने आजमाया, पर सफल कोई भी नहीं हुआ। कितने ही राजा तो धनुषके धक्केको न सह सके और जमीनपर गिर पड़े। यहांतक कि चेदीराज शिशुपालका घुटनाही धक्केसे टूट पड़ा। सभीको हार माननी पड़ी। सब निराश होकर बैठ गये।

ब्राह्मण-वेशधारी पांचों पाण्डव भी दर्शकमण्डलीमें बैठे हुए थे। राजाओंकी ऐसी दुर्दशा देख अर्जुनसे बैठा न रहा गया। वे अपने ब्राह्मणवेशको भूल गये। क्षत्रिय-तेजसे उत्तेजित और द्रौपदीकी सुन्दरतासे मोहित होकर वे सहसा उठ खड़े हुए और जिधर निशाना मारा जाता था उस ओर बढ़े।

यह देख ब्राह्मण मण्डलीमें बड़ी खलबली मची। कुछ लोग तो चिल्लाकर अर्जुनको उत्साहित करने लगे और कुछ दुःखी होकर कायरकी भांति उसे हताश करने लगे किन्तु अर्जुनने किसीकी बातपर ध्यान नहीं दिया और वे लक्ष्यवेधके स्थान पर जा खड़े हुए। वहां जाकर सबसे पहले अर्जुनने शिवजीको मन ही मन प्रणाम किया। इसके बाद उन्होंने धनुषकी प्रदक्षिणा की। इसी समय अपने बाल्यसखा कृष्णकी ओर उनकी दृष्टि पड़ी, जो स्नेहभरी दृष्टिसे अर्जुनकी ओर देख रहे थे। अपने मित्रको स्नेहसे देखते हुए अर्जुनने बड़े उत्साहसे धनुषको उठा लिया। यह देख जिन धनुर्धारी शूरवीर राजाओंके हजार प्रयत्न करने पर भी धनुष नहीं उठा था, वे बड़े लज्जित हुए। अर्जुनने धनुष पर झट प्रत्यञ्चा चढ़ा दी। पांच बाणमें हिलते हुए यन्त्रके छेदके बीचसे निशाना मारकर पृथ्वीपर गिरा दिया। इस कामको उन्होंने बड़ी शीघ्रतासे किया उनको बाण चढ़ाते और निशाना मारते विरले ही किसीने देखा।

[illegible]मिमें हलचल मच गयी। देवतागण अर्जुनपर पुष्पोंकी वर्षा

करने लगे। ब्राह्मण लोग स्वजातीयको विजयी देख अपने कमण्डलु मृगचर्म आदि हिला हिलाकर आनन्द प्रकट करने लगे। बाजेवालोंने बाजा बजाना आरम्भ किया। सूतमागध स्तुति पाठ करने लगे।

द्रौपदीको अर्जुनके शरीरका सङ्गठन और अतुल कान्तिको देख बड़ी खुशी हुई। उसने बड़े ही आनन्दके साथ अर्जुनके गलेमें जयमाल पहना दी। राजा द्रुपदको भी अर्जुनके अद्भुत पराक्रम और फुर्तीलेपनसे बड़ा आनन्द हुआ। वे कन्यादानकी तैयारी करनेमें लग गये।

द्रुपदको इस ब्राह्मणकुमारको कन्या देते हुए देख, आये हुए राजाओंको बड़ा क्रोध हुआ। वे आपसमें कहने लगे—द्रुपदराजने हम लोगोंका पहले तो खूब आदर-सत्कार किया। पर इस समय उन्होंने हम लोगोंका निरादर किया है हमलोगोंमेंसे किसीको भी कन्या-दान देनेके योग्य न समझा। भला इस ब्राह्मणको वरमाल पानेका अधिकार ही क्या है? स्वयंवरकी विधि शास्त्रमें क्षत्रियोंके लिये है न कि ब्राह्मणोंके लिये। इस राजाने अपनी रीति छोड़ दी है। आओ हमलोग इस नीच राजाको मार डालें। इसके साथही इसके पुत्रको भी यमलोक पठा दें। यदि कन्या हमलोगोंमेंसे किसी को न वरे तो उसको भी अग्निकुण्डमें भस्म कर दें।

राजा लोग क्रोधसे अन्धे हो रहे थे। अनेक हथियारबन्द राजा द्रुपदकी ओर झपटे। इससे द्रुपद डर गये। यह काण्ड देख अर्जुन और भीमने भी हथियार उठा लिये। वे पाञ्चालनरेशकी रक्षाके लिये आगे बढ़े। भीमसेनने एक पेड़ उखाड़ लिया और उसीको गदा बनाकर काममें लाने लगे। अर्जुनने परीक्षावाला धनुष उठा लिया।

इधर ब्राह्मण लोग भी अपना अपना कमण्डलु हिला हिलाकर अर्जुन और भीमको उत्साहित करने लगे। वे कहने लगे—डरो मत हमलोग तुम्हारी सहायता करेंगे।

यह देख अर्जुन जरा मुस्कराये और उन्होंने कहा—आपलोग एक ओर खड़े होकर तमाशा देखिये । मैं स्वयं सब काम करता हूं ।

महातेजस्वी कर्ण अर्जुनसे भिड़ गये और मद्रराज शल्य भीम से ! अर्जुन अपने विकट बाणोंकी कर्णपर वर्षा करने लगे । उनके तेज बाणोंकी मारसे कर्णके नाकोंमें दम आ गया ।

कर्णने कहा—हे ब्राह्मण, तुम्हारा बल, अस्त्र चलानेकी योग्यता और शीररकी दृढ़ता देख मैं बड़ा प्रसन्न हुआ । मुझे जान पड़ता है कि तुम स्त्रयं धनुर्वेद हो । मुझे क्रोध आनेपर स्वयं इन्द्र या कुन्ती-पुत्र अर्जुनको छोड़कर अन्य कोई मेरा सामना करनेवाला नहीं है ।

अर्जुनने कहा—मैं न तो इन्द्र हूं, न धनुर्वेद । मैं अस्त्र विद्या जाननेवाला एक ब्राह्मण हूं । तुमको हरानेके लिये ही मैं युद्धके मैदानमें आया हूं । यह बात सुनते ही कर्णने ब्रह्मतेजकी प्रधानता मान ली और युद्धसे अपना पीछा छुड़ाया ।

इधर भीम और शल्यमें लात मूंकोंसे बेढब लड़ाई हो रही थी । अन्तमें भीमने एक ऐसा दांव चलाया कि शल्य चारों पांव चित्त जमीन पर गिर पड़े । शल्य लज्जित हो गये और हार मान ली । यह देख और राजा लोग डर गये । उनका साहस न हुआ कि वे युद्ध करें ।

राजकुमार लोग आपसमें बातचीत करने लगे—ये ब्राह्मण-कुमार हैं कौन ? किसके लडके हैं ? कहांके रहनेवाले हैं ? आदि बातें मालूम नहीं होतीं । ये बातें जाननी आवश्यक हैं ।

इधर कृष्णने भी मौका पाकर कहा—हे नरेशगण, ब्राह्मण कुमारने धर्मसे राजकन्याको पाया है । आप लोग शान्त हों । युद्धकी आवश्यकता ही क्या है ? अन्तमें सबने युद्ध करनेका विचार छोड़ िया और सबने अपने अपने घरकी रा ली ।

इधर द्रौपदीको लेकर पांचों पाण्डव भी खुशी खुशी अपने डेरेको आये। सन्ध्या हो गयी थी। कुन्ती घरमें बैठी सोच रही थी कि अभी तक मेरे पुत्र नहीं आये! इतनेमें पाण्डवोंने द्वार पर जाकर कहा—माता! भिक्षामें आज एक बड़ी ही सुन्दर वस्तु मिली है।

कुन्तीने विना सोचे विचारे घरके भीतर ही से कहाः—पुत्र जो कुछ मिला है सब लोग मिलकर उसे भोग करो।

किन्तु जब उसने द्रौपदीको देखा तब उसे बड़ा पश्चात्ताप हुआ कि मैंने कैसा बुरा काम किया। उसने युधिष्ठिरसे कहाः—"हे पुत्र; मुझे यह न मालूम था कि तुम क्या लाये हो। बिना देखे सुने ही मेरे मुंहसे यह बात निकल गयी कि 'सब लोग मिलकर उसे भोग करो। अब कोई ऐसी युक्ति निकालो जिससे मेरी बात भी झूठी न हो और अधर्म भी न हो।"

युधिष्ठिरने कुछ देर सोचकर निःस्वार्थ भावसे कहा—"हे अर्जुन, तुमने द्रौपदीको जीता है, इसलिये द्रौपदीसे साथ तुम्हीं विवाह करो।"

इसके उत्तरमें अर्जुनने भी धर्मका विचार कर कहा—"हे आर्य, मुझे अधर्ममें लिप्त न कीजिये। पहले बड़े भाईका विवाह होना उचित है। इसलिये मेरी और द्रुपदराजकी भलाईका ख्याल रख कर कर्तव्य स्थिर कीजिये। हमलोगोंको अपना आज्ञाकारी समझिये।"

युधिष्ठिरने अपने भाइयोंको उदास देखा। वे उनके मनकी बात ताड़ गये। इस बातसे भाइयोंमें पीछे विगाड़ न पैदा हो जाय, इससे वे बहुत घवड़ा गये। उन लोगोंको एकान्तमें ले जाकर कहा—द्रौपदी हम सबकी हो। इस कठिनाईसे पार पानेका यही एक सुगम मार्ग है। इसमें दो लाभ हैं एक तो माताकी बात रह जाती है; दूसरे हम लोगोंमें ईर्षाका कोई कारण नहीं रह जायगा।

इधर जब पाण्डव लोग द्रौपदीको लेकर चले आये, तब ये लोग कौन हैं कहां जाते हैं यह बात जाननेके लिये धृष्टद्युम्नने छिपे छिपे उनका पीछा किया। जब पाण्डव एक कुम्हारके घरमें घुस गये तब वे पास ही छिप कर बैठ गये। यहां उनको पाण्डवोंकी बातचीतका सारांश सुन पड़ा और वे उलटे पांव पिताके पास लौट गये।

जिनके कुलशीलका पता नहीं, ऐसे ब्राह्मणकुमारोंके साथ द्रौपदीको जाते हुए देख, द्रुपद उदास मन बैठे थे। धृष्टद्युम्नको देख उन्होंने आग्रहसे पूछा—"हे पुत्र, द्रौपदी किसके साथ और कहां गयी?"

धृष्टद्युम्नने कहा—"हे पिता, घबड़ानेकी कोई बात नहीं। न पश्चात्ताप ही की कोई बात है। मैंने छिपे छिपे उनका पीछा किया था। आचार, व्यवहार और बातचीतसे मालूम होता है कि वे क्षत्रिय हैं। इधर यह भी सुननेमें आता है कि पांचों पाण्डव लाक्षा-ग्रहमें जलनेसे बच गये हैं। वे गुप्तवेशमें घूम रहे हैं। आप निश्चय समझें कि ये लोग वे ही पांचों भाई हैं। यह मेरे भाग्यका फल है कि द्रौपदीको उन्होंने जीता है। अर्जुनको छोड़कर कर्णका तेज सहनेवाला और कौन है? भीमके अतिरिक्त शल्यको पछाड़नेकी शक्ति और किसमें है? दुर्योधन आदि बड़े बड़े राजाओंका सिर नीचा करनेवाला पाण्डवोंके सिवा और कौन है?

यह सुन द्रुपदको सन्तोष हुआ। उन्होंने पुरोहितको बुलवाया। उनसे कहा—महाराज आप कुम्हारके घर जाइये और निशाना मारने-वालेके कुलशीलका पता लगा आइये।

राजाकी आज्ञासे पुरोहित पाण्डवोंके पास गये। उन्होंने पहले उन लोगोंकी खूब प्रशंसा की। इसके बाद चतुरतापूर्वक वे कहने लगे—[illegible] बड़े ही प्यारे मित्र थे। [illegible]

सम्बन्धको स्थिर बनाये रखनेके लिये द्रुपदराजकी इच्छा थी कि द्रौपदीका विवाह अर्जुनके साथ करें।

युधिष्ठिरने इसके उत्तरमें कहा—पञ्चाल नरेशकी इच्छा फलवती हुई है। द्रौपदीको अर्जुनने ही जीता है।

इसी बीचमें एक दूत राजसी ठाटबाटके साथ दो रथ और खाने पीनेकी सामग्री लेकर वहां आया। उसने कहा—महाराज द्रुपदने आप लोगोंको द्रौपदीके विवाहके लिये महलमें आदर सहित बुलाया हैं। अब विलम्ब न करिये शीघ्र चलिये।

यह सुनकर युधिष्ठिरने पहले पुरोहितको विदा किया। फिर एक रथपर द्रौपदी और कुन्तीको बैठाया और दूसरे पर आप सब लोग बैठकर राजमहलकी ओर चले।

पुरोहितसे द्रुपदको मालूम हो गया कि ये असलमें पाण्डव ही हैं! उनके आदर सत्कारका यथोचित प्रबन्ध किया गया। उनके आते ही गाय बैल, खेतीकी सामग्री, खेलनेके कामकी अनमोल चीजें अस्त्रशस्त्र आदि बहुतसी चीजें द्रुपदने उनको भेंट कीं। पर पाण्डवोंने उनमेंसे और कुछ सामान न लेकर केवल युद्धका सामान ले लिया। यह देख सब लोग बड़े प्रसन्न हुए। पाण्डवोंको मृगचर्म धारण किये देख राजा, राजकुमार, मन्त्री, मित्र नौकर चाकर आदि बड़े प्रसन्न हुए, कुन्ती द्रौपदीके साथ महलमें गयी। वहां स्त्रियोंने कुन्ती का खूब आदर सत्कार किया।

सबको बहुत आदर सत्कारके साथ खिलाने पिलानेके बाद राजा द्रुपदने युधिष्ठिरसे कहा—आज शुभदिन है। आज ही अर्जुनका विवाह द्रौपदीके साथ हो जाना उचित है।

युधिष्ठिरने कहा,—मैं सबसे जेठा हूं। मेरा विवाह हुए बिना अर्जुनका विवाह कैसे हो सकता है ?

द्रुपदने कहा,—तब तुम्हीं मेरी कन्याके साथ विवाह करो या और कोई कन्या पसन्द हो तो उसके साथ करो।

युधिष्ठिरने कहा—महाराज मेरे किसी भी भाईका विवाह अभी नहीं हुआ है। अर्जुनने आपकी कन्याको जीता है, यह बात सच है। पर हम लोग एक दूसरेको इतना चाहते हैं कि यदि कोई अच्छी चीज़को पाता है तो हम सब उस चीज़को भोगते हैं।

यह बात सुन राजा द्रुपद बड़े चक्करमें पड़े। वे कहने लगे—"हे कुरुनन्दन! एक पुरुषकी बहुतसी स्त्रियां होती हैं। पर एक स्त्रीके बहुतसे पति होना कहीं सुना नहीं गया। तुम अपने निर्मल स्वभाव और धर्मके लिये प्रसिद्ध हो। ऐसी बात तुम्हारे मुंहसे शोभा नहीं पाती। यह बात लोक और वेद दोनोंके विरुद्ध है।"

युधिष्ठिरने कहा—महाराज, धर्मतत्व बहुत गूढ़ हैं। हम लोग पूर्वजोंकी चाल पर चलना ही धर्म समझते हैं। पर सच बात यह है कि जो बात एक स्थान पर अधर्म है वही बात दूसरे स्थान पर धर्म, ऐसे ही जो बात एक जगह धर्म है वह दूसरी जगह अधर्म। एक तो हमारी माता विवाहके लिये आज्ञा दे चुकी हैं, दूसरे यह सभी जानते हैं कि मेरे मनमें अधर्मकी बात नहीं आती है। अतः इस विषयमें जो मैं कहता हूं वह करना कई कारणोंसे ठीक है। अब इसके सम्बन्धमें अधिक कुछ न कहिये। मेरे कहने ही ...हा:—
समझिये। ...लोग विधि-

द्रुपदने कहा—हे धर्मराज, इस विषयमें तुम्हारी यह
तो मैं और कह ही क्या सकता हूं। पर अपनी ...पुष्य नक्षत्रमें है।
विषयमें फिर अच्छी तरहसे सलाह कर लो। आप
बात निश्चय करोगे, वही होगा। ...यी, और बहुतसी
...गरनिवासी, ब्राह्मण

महर्षि द्वैपायन आ पहुंचे । उनको देख कर सब खड़े हो गये और भक्तिपूर्वक सबने प्रणाम किया । महर्षिके कुछ विश्राम कर लेने पर द्रुपदने कहा—महात्मन् ! युधिष्ठिरका कहना है कि द्रौपदीका विवाह पांचों भाइयोंसे हो । पर एक स्त्रीके अनेक पति नहीं होते फिर यह धर्म सङ्गत कैसे होगा । अतः हे ब्राह्मणश्रेष्ठ, इस विषयमें आप जो उचित समझिये; वह आज्ञा दीजिए ।

धृष्टद्युम्नने कहा—हे महर्षि ! बड़ा भाई छोटे भाईकी स्त्री से कैसे विवाह करेगा ? मैं धर्मकी गूढ़ बातोंको तो नहीं समझता पर मैं द्रौपदीका विवाह पांचों पाण्डवोंके साथ कदापि न करूंगा ।

इतनेमें युधिष्ठिरने कहा—हे पितामह, आपको मालूम है कि मेरे मुंहसे कभी झूठी बात नहीं निकलती । मैं सदा सच बोलता हूं । मेरे मनमें अधर्म नहीं आता इसलिये यदि यह बात धर्मके विरुद्ध होती तो मेरे मनमें कैसे आती ? पुराणोंमें भी लिखा है कि जटिला नामक गौतमवंशकी एक कन्याका विवाह सात ऋषियोंके साथ हुआ था । वार्क्षी नामक मुनि-कन्याका विवाह प्रचेता नामक दस भाइयोंके साथ हुआ था । इसके अतिरिक्त भिक्षामें पायी हुई अन्य चीजोंके समान माताने द्रौपदीको भी हम सब भाइयोंको मिल कर भोग करनेको कहा है । बड़ोंका कहना अधर्म नहीं है । मैं तो इसे परमधर्म ही

हुए, ढूं ।

का खूब औ कहा—युधिष्ठिरने जो कहा, मैंने भी वही कह डाला

सबको बे बहुत डरती हूं । इसलिये हे महात्मन् ! कोई ऐसी युक्ति

द्रुपदने युधिष्ठिरसे झूठ बोलनेका पाप न लगे ।

विवाह द्रौपदीकेअसली बात समझ गये और उन्होंने सबको शान्त

युधिष्ठिरने व पदको धर्मके गहन विषयोंको समझा दिया । उन्होंने

[illegible] औ अवस्थ [illegible]

जो बात एक समय एक स्थल और एक दशामें अधर्म होती है, वही बात दूसरे समय, दूसरे स्थल और दूसरी दशामें धर्म होती है ।

इसके बाद उन्होंने निम्नलिखित घटनाका उल्लेख कर द्रुपदका सन्देह दूर किया ।

"किसी तपोवनमें एक परम सुन्दरी ऋषिकन्या रहती थी । जब विवाहके योग्य उसकी उम्र हुई, तब उसने योग्य पति पानेकी इच्छा से शिवजी की तपस्या की । इससे शिवजी प्रसन्न हुए । उन्होंने वर मांगनेको कहा । उस कन्याने पांच बार कहा—भगवन्, मुझको ऐसा पति मिले जिसमें सब गुण हों ।"

शिवजीने कहा—"हे पुत्री, तूने पांच बार पति मांगा है । इसलिये अगले जन्ममें तुझे पांच पति मिलेंगे ।"

व्यासदेवने कहा—हे द्रुपदराज, वही कन्या आपके यहां पैदा हुई है । द्रौपदी अपने ही कर्मोंके फलसे पांच पाण्डवोंकी स्त्री होगी इसलिये इस बातको अधर्म समझ कर तुम्हें दुःखी न होना चाहिये ।

व्यासदेवकी बातें सुन कर द्रुपदके मनकी व्याकुलता दूर हुई । उनको शान्ति मिली । उन्होंने कहा—पहले मुझे यथार्थ बात मालूम न थी । इसलिये सन्देह किया था । अब आपसे सब बातें जानकर मुझे विवाह करनेमें कोई आपत्ति नहीं है ।

इसके बाद राजा द्रुपद सभामें गये और सबके सामने कहाः—मेरी कन्या पांचों पाण्डवोंके लिये पैदा हुई है । पाण्डव लोग विधिपूर्वक उससे विवाह करें ।

व्यासदेवने युधिष्ठिरसे कहा—आज चन्द्रमा पुष्य नक्षत्रमें है । आज ही सबसे पहले तुम अपना विवाह करो ।

द्रौपदी अच्छे अच्छे वस्त्राभूषणोंसे सजायी गयी, और बहुतसी कन्याओंके साथ सभामें [illegible]ी गयी । [illegible]ष्ट मित्र नगरनिवासी, ब्राह्मण

आदि झुण्डके झुण्ड विवाहोत्सव देखनेके लिये आने लगे। युधिष्ठिर आदि भी स्नान करके विवाहके लिये तैयार हो गये और फिर उत्तम उत्तम वस्त्र पहन कर विवाह मण्डपमें आये। वेदज्ञ पुरोहितने अग्निकी स्थापना की। वेदमन्त्रसे पहले युधिष्ठिरका द्रौपदीके साथ विवाह कराया गया। फिर बाकी चार पाण्डवोंके साथ एक एक करके विवाह-क्रिया समाप्त की गयी।

वैवाहिक-कृत्य समाप्त हो जाने पर राजा द्रुपदने दामादोंको बहुतसा धन, हाथी, घोड़े, सुनहले रथ, तुरङ्ग आदि दिये। पाण्डव लोग द्रौपदीको पाकर बड़े आनन्दसे पाञ्चाल राज्यमें रहने लगे। पांचालराज और पाण्डव एक दूसरेकी सहायता पाकर वैरियोंसे निडर हो गये।

तृतीय-परिच्छेद ।

—:*:o:*:—

विनाशकाले विपरीत बुद्धिः ।

दुर्योधन पाण्डवोंका अभ्युदय देख मन ही मन कुढ़ा करता था। उनके नाशके लिये सदा वह उपाय ढूंढ़ा करता था। अन्तमें अपने मामा शकुनी आदिकी सलाहसे जुआ खेलनेका विचार किया और इस कुटिल नीतिसे पाण्डवोंका नाश करना चाहा। युधिष्ठिर सीधे सादे आदमी उसके कुटिल-नीतिचक्रमें फंस गये। जुआ खेलनेके लिये तैयार हो गये। सभामें कौरव और पाण्डवोंमें जुआ होने लगा। पर पाण्डवोंकी हार ही होती गयी। यहां तक कि युधिष्ठिरने अपना सब कुछ हार कर अपने भाइयोंको भी दांव पर रख दिया और हार गये। स्वयं अपनेको भी दांव पर रखा और हार गये। अन्तमें उन्होंने द्रौपदीको भी दांव पर रख दिया और हार गये। द्रौपदीके जीतनेसे दुर्योधन मारे खुशीके उछल पड़ा। उसने विदुरसे कहा,—हे विदुर, तुम जल्दी जाकर पाण्डवोंकी प्यारी द्रौपदीको ले आओ। दासियोंके साथ द्रौपदी हमारे घरमें झाड़ू लगावेगी।

विदुरने कहा—रे मूढ़, तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बुरे दिन आ गये हैं। इसीसे ऐसे दुर्वचन कहनेका साहस तुमने किया है। गीदड़ होकर तुमने सिंहको क्रोधित किया है। तुमने लोभवश किसीके अच्छे उपदेशको नहीं सुना है। इससे वंश सहित शीघ्र ही तुम्हारा [illegible]

मदोन्मत्त दुर्योधन विदुरसे केवल धिक् कहके चुप रह गया और प्रतिकामीकी ओर देखकर कहा—हे प्रतिकामी, जान पड़ता है कि विदुर डर गये हैं। इससे तुम शीघ्र जाकर द्रौपदीको ले आओ। पाण्डव तुम्हारा कुछ नहीं कर सकते।

यह आज्ञा पाते ही प्रतिकामी पाण्डवोंके घर गया। उसने द्रौपदी से कहा—हे द्रौपदी, जुवेसे पागल होकर युधिष्ठिरने तुमको जुवेके दांव पर रखा था। वे तुमको हार गये हैं और दुर्योधनने जीता है। उन्होंने तुम्हें सभामें बुलाया है।

द्रौपदीने कहा - हे प्रतिकामी, तुम कैसी बातें कहते हो? क्या कोई राजकुमार स्त्रीको भी दांव पर रख कर जुआ खेलता है? क्या युधिष्ठिरके पास और कुछ न था कि मुझे दांव पर रखा?

प्रतिकामीने कहा—हे द्रौपदी, युधिष्ठिरने पहले अपना सब धन फिर भाइयोंको अपने साथ दांव पर रखा और हार गये। अन्तमें तुमको दांव पर रखा और हार गये।

द्रौपदीने कहा—हे प्रतिकामी, पहले युधिष्ठिरके पास जाओ और उनसे पूछो कि उन्होंने पहले किसको दांव पर रखा है। मुझे या अपने को?

द्रौपदीके कहनेसे प्रतिकामी लौट गया और भरी सभामें मुंह लटकाये हुए युधिष्ठिरसे उसका प्रश्न पूछा। उस समय युधिष्ठिर अपने होशमें न थे। प्रतिकामीकी बातका उन्होंने कुछ उत्तर न दिया।

दुर्योधनने कहा—हे प्रतिकामी उससे कह दो कि जो कुछ पूछना हो यहां आकर पूछे।

प्रतिकामी फिर लौट गया और दुःखित होकर कहा—हे राज-कुमारी, उद्दण्ड दुर्योधन बार बार तुम्हें बुला रहा है।

द्रौपदीने कहा—हे प्रतिकामी, मेरे भाग्य ही में ऐसा लिखा था। संसारमें सबसे बड़ा धर्म है। अतः सभ्यजनोंसे पूछ आओ कि इस समय धर्मानुसार मुझे क्या करना चाहिये। वे लोग जो कहेंगे वही मुझको करना होगा।

प्रतिकामी लौट गया। जाकर भरी सभामें द्रौपदीकी यह बात कह सुनायी। दुर्योधनका आग्रह देख कर किसी भी सभासदकी हिम्मत उसके विरुद्ध कहनेको न पड़ी। द्रौपदीसे भी अधर्मकी कोई बात वे न कह सके। अपना सा मुंह लटकाये सबके सब चुपचाप बैठे रह गये।

दुर्योधनने द्रौपदीको सभामें लानेके लिये दृढ़ संकल्प कर लिया था, यह देख युधिष्ठिरने छिपे छिपे उसके पास अपने दूतसे कहला भेजा कि वह सभामें चली आवे और श्वसुरसे अपना दुःख कह सुनावे।

आनेवाली विपत्ति देख कर प्रतिकामीने दुर्योधनका कुछ भी ख्याल न किया। उसने सभासदोंको उत्तेजित करनेके लिये फिर कहा—मैं द्रौपदीसे जाकर क्या कहूं?

यह सुन रुष्ट होकर दुर्योधनने कहा—हे दुःशासन, यह प्रतिकामी बहुत ही नादान है। जान पड़ता है कि यह भीमसेनसे डरता है। तुम स्वयं जाकर द्रौपदीको लाओ। शत्रु परवश हैं। वे तुम्हारा कर ही क्या सकते हैं?

यह आज्ञा पाते ही दुरात्मा दुःशासनने शीघ्रतासे द्रौपदीके यहां जाकर कहा—हे द्रौपदी, तुम जुवेमें जीत ली गयी हो। इसलिये लज्जा छोड़ दो और सभामें चलो।

द्रौपदी दुःशासनकी लाल आंखें देख कर बहुत ही भयभीत हुई। उसने मनमें सोचा कि अब गांधारीकी शरणमें जाना चाहिये। यह सोच वह बड़ी शीघ्रतासे गांधारीके पास जानेके लिये दौड़ी।

किन्तु निर्लज्ज दुःशासनने क्रोधसे चिल्लाते हुए उसका पीछा किया और दौड़ कर उसने उसके लम्बे केश पकड़ लिये ! हवासे हिलते केलेके पत्तेके समान द्रौपदी कांपने लगी। उसने बड़ी नम्रतासे कहा—हे दुःशासन, इस समय मैं एकवस्त्रा हूं। ऐसी दशामें मुझे सभामें ले जाना उचित नहीं।

दुःशासनने कहा—चाहे तुम एकवस्त्रा हो या बेवस्त्रा तुम हमारी जीती हुई दासी हो, तुमको हमारी आज्ञा माननी ही पड़ेगी।

द्रौपदीकी विनय पर दुष्ट दुःशासनको ज़रा भी दया न आयी। उसके केश जोरसे खींचते हुए अनाथनीके समान वह उसको सभामें ले आया।

राजसूय यज्ञके अन्तिम स्नानके समय मन्त्रसे पवित्र किये हुए जलसे द्रौपदीके जो बाल भीगे थे, उन्हींको दुराचारी दुःशासनके हाथके स्पर्शसे कलङ्कित होते देख सभामें बैठे हुए लोग शोकसे अधीर हो उठे।

जोरसे खींचे जानेसे द्रौपदीके बाल बिखर गये, उसके शरीर परका आधा वस्त्र भी कुछ खिसक पड़ा। इससे लज्जा और क्रोध से जल कर द्रौपदीने कहा:—रे दुष्ट, इस सभामें इन्द्रके समान पराक्रमी और तेजस्वी मेरे गुरुजन हैं, उनके सामने तू क्या समझ कर मुझे इस दशामें ले आया। तुझे इतना साहस कहांसे हुआ ? यदि स्वयं इन्द्र भी तेरा सहायक हो तो पाण्डव तुझे क्षमा न करेंगे !

इस प्रकार उसके कहने पर भी किसीके मुंहसे कुछ न निकला। यह देख कि दुःशासनको कोई मना नहीं करता, अभिमानिनी द्रौपदी ने कहा:—हाय ! भरतवंशवालोंके धर्मको धिक्कार है। आज मैं जान गयी कि क्षत्रियोंका पवित्र धर्म नष्ट हो गया। [illegible]

उनमें नहीं रहा। इसीसे कुलकी मर्यादा टूटती हुई देख कर भी सभाके लोग मौन साधे बैठे हैं। चुपचाप बैठ कर मेरा अपमान देख रहे हैं। उनको कुछ कहनेका साहस नहीं होता! इस सभा में एक भी सभासद ऐसा नहीं जिसमें मनुष्यत्व हो। धिक्कार है इन मनुष्योंको जिनके सामने एक अबला पर इस प्रकार अत्याचार हो रहा है!

यह कह कर रोती हुई द्रौपदीने अपने पतियोंकी ओर देखा। धन, दौलत, मान, सम्मान आदि सब कुछ चले जानेकी जितनी पीड़ा पाण्डवोंको न हुई थी, उससे कहीं हजार गुणा अधिक पीड़ा द्रौपदीके उस चितवनसे हुई। उनके हृदयमें अग्निज्वाला भवक उठी। वह ज्वाला इतनी तेज थी कि उसकी शान्ति किसी तरह भी नहीं हो सकती थी।

शकुनिने भी द्रौपदीका अपमान करनेमें पूरी सहायता दी। कर्ण भी अपना अपमान याद कर बड़ा प्रसन्न हुआ। दुःशासनने तो दासी कह कर बड़े जोरसे कहकहा मारा।

भीष्म कहने लगे बेटी! जो परवश है, वह किसी भी चीजको अपना कह कर दांव पर नहीं रख सकता। स्त्रीके ऊपर पतिका सदा अधिकार है। मैं यह ठीक तौरसे नहीं कह सकता कि धर्मानुसार तुम दुर्योधनके अधीन हो या नहीं।

प्रियतमा द्रौपदीके अपमानसे भीम पागल हो उठे। वे कहने लगे,—हे युधिष्ठिर, जुवा खेलने वाला घरकी दासीको भी दांव पर नहीं रखता, उस पर भी दया करता है। पर देखो, तुमने बड़े दुःख से पाये हुए धन और अपने अधीनस्थ हम लोगोंको परवश कर दिया। इस पर भी मुझे क्रोध नहीं आया, पर तुम्हारा अन्तवाला कृत्य बडा ही घृणास्पद । तुम्हारे ही अपराधका यह फल है कि

आज इस असहाया द्रौपदीको कौरव सता रहे हैं ! तुम्हारे इस पाप का प्रायश्चित्त तुम्हारे दोनों हाथ आगमें जला देने ही से हो सकता है। सहदेव शीघ्र आग लाओ।

यह सुन जेठे भाई भीमका तिरस्कार कर अर्जुन बोले! हे आर्य! तुमने ऐसे दुर्वचनको पहले कभी नहीं कहा था। कहीं जोश में आकर शत्रुओंके मनकी बात न कर बैठना। वे यही चाहते हैं। बड़े भाईने क्षत्रिय-धर्मके अनुसार जुवा खेला है। धर्मानुसार ही सिर झुका कर हार मान ली है।

भीमने कहा—निःसन्देह उन्होंने क्षत्रियधर्मके अनुसार काम किया है। इसीसे अब तक उनके दोनों हाथ मैंने भस्म नहीं किये।

पाण्डव और द्रौपदीकी यह दुर्दशा देख, धृतराष्ट्रके पुत्र विकर्ण को बड़ी दया आयी। उसने कहा—हे नरेश्वरो! द्रौपदीके प्रश्नका उत्तर देने वाला तुममें कोई नहीं है? यह काम धर्मके विरुद्ध है, बार बार पांचाली रो रही है, पर सब बूढ़े कौरव मौन साधे बैठे हैं!

इस पर भी किसीके मुंहसे चूं तक न निकली। तब फिर उसने कहा—और कोई कहे या न कहे, मेरी समझमें जुवारीका किया काम नहीं माना जा सकता। फिर द्रौपदी पांचों पाण्डवोंकी पत्नी है, उसे अकेले युधिष्ठिर दांव पर कैसे रख सकते हैं? इससे यह कहना अनर्थक है कि द्रौपदी जुवेमें जीत ली गयी है।

विकर्णकी ये बातें सुन सभासदोंने उसकी खूब प्रशंसा की और वे कहने लगे जो कुछ विकर्णने कहा है वह बहुत ही उचित कहा है।

यह सुन कर्णने रुष्ट होकर विकर्णका हाथ पकड़ कर कहा—

हे विकर्ण, कौरव वृद्ध क्यों मौन हैं, वे सभासदोंके मनकी बात जानना चाहते हैं। तुम लड़कोंके समान अंडबंड कह कर सभासदोंका मन डांवांडोल कर रहे हो। जब युधिष्टिरको अपना सब कुछ दांव पर रखनेका अधिकार है तो वे अपनी स्त्रीको भी दांव पर रख सकते हैं। हे दुःशासन, यह विकर्ण अभी निरा छोकरा है। पाण्डवोंके पास जो कुछ था, वह धर्मसे जीता गया है। अतः पाण्डव और द्रौपदीके दुपट्टे ले लो।

यह सुन पाण्डवोंने अपने अपने दुपट्टे दे दिये। पर द्रौपदीके पास एक ही साड़ी थी। वही पहने और वही ओढ़े हुए थी। एकवस्त्रा द्रौपदीका वस्त्र दुःशासन भरी सभामें खींचने लगा। द्रौपदी दुःख और लज्जासे विह्वल होकर आर्त्तनादसे भगवान्‌को पुकारने लगी। परमपिता परमेश्वर सबकी लाज रखने वालेने द्रौपदीकी लाज रख ली। उसकी पुकार सुन ली। उसको कपड़ेकी कमी न रही। दुःशासन खींचते खींचते थक गया। पर द्रौपदीका वस्त्र समाप्त न हुआ, बढ़ता ही गया! अन्तमें दुष्टात्मा दुःशासन लज्जित होकर सभामें आ बैठा।

यह देख सभामें बड़ी खलबली मच गयी। भीमसे बैठे न रहा गया। उनके होंठ क्रोधसे कांपने लगे। उन्होंने भरी सभामें प्रतिज्ञा की—"हे क्षत्रिय गण, सुनो, भरतवंशमें उत्पन्न इस अधम कुलाङ्गार दुःशासनकी छाती युद्धमें फाड़ कर, यदि इसका रुधिर मैं पान न करूं तो मुझको अपने पूर्व पुरुषोंकी गति प्राप्त न हो!"

सारे सभासद धृतराष्ट्रके पुत्रोंको धिक्कारने लगे। विदुरने अपने दोनों हाथोंको ऊपर उठा कर इस हलचलको शान्त किया और कहा—हे सभासद, निरपराधिनी द्रौपदी पर और अत्याचार होनेके पहले ही उसके प्रश्नका उत्तर देकर इस मामलेका निपटारा

कीजिये। अधर्म होते हुए देख कर चुप रहना भी पाप है। आप लोग शीघ्र फैसला करें कि युधिष्ठिर द्रौपदीको दांव पर रख सकते थे या नहीं।

शोकार्त्त द्रौपदीको देख कर भी दुर्योधनके भयसे किसीने कुछ नहीं कहा। तब दुर्योधन बोला,—हे द्रौपदी, तुम अपने पतियोंसे ही अपने प्रश्नका उत्तर पूछ लो। वे जो कहेंगे उसको मैं मान लूंगा। यदि भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव सब कह दें कि उनपर युधिष्ठिर का अधिकार नहीं है, तो तुम दासीपनेसे मुक्त हो सकती हो।

पाण्डव कुछ न बोले। दुर्योधन अपनी जीतसे बड़ा प्रसन्न हुआ। हंस कर उसने द्रौपदीकी ओर देखा और अपनी बाईं जङ्घा पर हाथ रख कर उसने अपमान सूचक इशारा किया।

इससे भीमसेनके हृदयपर बड़ा भारी आघात पहुंचा। उन्होंने मदमाते हाथीके समान फिर प्रतिज्ञा की—"हे राजाओ! यदि मैं युद्धमें अपनी गदासे इस जांघको चूर चूर न करूं, तो मैं सद्गति को न पाऊं!"

विदुरने कहा,—हे भूपतिगण! देखिये भीमसेन बड़ी भयङ्कर प्रतिज्ञा कर रहे हैं। स्त्री पर अत्याचार आदि अधर्म सभामें हो रहे हैं। मेरी समझमें द्रौपदीको युधिष्ठिर दांव पर नहीं रख सकते थे। आप लोग जहां तक बने, जल्दीसे इस मामलेको निपटावें। इस अशुभ कामको और अधिक देर तक रहने देना उचित नहीं है।

पर विदुरके कहनेका कुछ फल नहीं हुआ। उनके कहने पर फिर दुर्योधनने द्रौपदीसे कहा—हे द्रौपदी, यदि चारों पाण्डव युधिष्ठिरकी प्रभुताको न मानें तो दासीपनेसे शीघ्र ही मुक्त हो सकती हो।

इस पर अर्जुनने कहा,—निस्सन्देह धर्मराज हम लोगोंके प्रभु थे। पर अब वे स्वयं परवश हैं। अतः वे कैसे किसीके प्रभु हो सकते हैं। इसका विचार कौरव स्वयं कर लें।

सभाकी दशा यह थी। उधर महलमें बड़े बड़े अपशकुन होने लगे, यह सुनकर धृतराष्ट्र बहुत ही डरे और पुत्रके किये हुए पापोंको दूर करनेका प्रयत्न करने लगे। दुर्योधनको डाटकर कहा,—"अरे, उद्धत दुर्योधन! तुम क्या सोचकर पाण्डवोंकी स्त्रीकी ऐसी दशा कर रहे हो?"

फिर उन्होंने द्रौपदीसे कहा—हे कल्याणी! तुम मेरी बहुओंमें सर्वश्रेष्ठ हो। तुम जो चाहो वर मांगो।

द्रौपदीने कहा—यदि आप प्रसन्न हैं तो मेरे पतियोंको दासत्वसे मुक्त होनेकी आज्ञा दीजिये।

धृतराष्ट्रने कहा—यही होगा। यह कहकर पाण्डवोंको दासत्वसे मुक्त कर दिया और उनको स्वतन्त्रता दे दी।

यह देख कर्णने दिल्लगी करके कहा—स्त्रियोंके अद्भुत कामोंकी बातें बहुत सुनी हैं। पर अकेली द्रौपदीने नाव होकर विपद् सागरसे अपने पतियोंका उद्धार किया है।

इसपर भीम बोले—हां पाण्डवोंकी रक्षा स्त्रीने ही की। यह कह करके युधिष्ठिरसे बोले—महाराज! यदि आज्ञा हो तो अभी मैं आपके शत्रुओंका नाश कर दूं। आप इस पृथ्वी पर निश्चिन्त हो-कर राज्य करें।

युधिष्ठिर भीमको रोककर दोनों हाथ जोड़कर धृतराष्ट्रसे बोले—हे राजन्! इस समय हम लोग आपके अधीन हैं। इसलिये आप जो आज्ञा दें हम लोग वही करें।

ध ाष्ट्रने कह — ध ज। । हई नी

लेकर राज्य करो । पर मेरा आग्रह तुमसे इतना ही है कि दुर्योधनके
कटुवाक्य और निष्ठुर वर्तावको अपने सद्गुणोंसे क्षमा कर दो ।

यह सुन दुःशासनके पेटमें बिल्ली कूदने लगी । वह दुर्योधनके
पास गया और रो रो कर पाण्डवोंके राज्य लौटा देनेकी बात कही ।
यह सुन दुर्योधन, कर्ण, शकुनी आदि धृतराष्ट्रके पास पहुंचे । उनको
उलटा सीधा समझाकर जुवा और एक बार फिर खेलनेकी आज्ञा
ले ली ।

दुर्योधन तत्काल युधिष्ठिरके पास पहुंचा और उसने कहा—हे
युधिष्ठिर, पिताजीकी आज्ञा है कि एक बार और हम लोग जुवा खेलें ।

इसके उत्तरमें युधिष्ठिरने कहा—जुवा सर्वसंहारक है, यह मुझे
पूरे तौरसे मालूम है । पर चाचाकी यह आज्ञा है तो मैं एक बार और
जुवा खेल सकता हूं । यह कह कर युधिष्ठिर अपने भाइयोंके साथ
जुवा खेलनेके स्थानपर चले गये ।

जुवामें इस बार यह होड़ लगाया गया कि जो हारे, वह बारह
वर्ष वनवास करे और एक वर्ष अज्ञातवास । यदि अज्ञातवासके समय
पता लग जाय तो फिर बारह वर्ष बनवास करे । इस पर भी युधि-
ष्ठिर खेलनेको राजी हो गये ।

सभासदोंने बड़ी व्याकुलतासे युधिष्ठिरको मना किया । पर वे
यह समझकर कि न खेलूंगा तो मेरी निन्दा होगी, लोग कहेंगे कि ये
खेलनेसे डर गये, लोगोंके मना करनेपर भी वे खेलने लगे । इस बार
भी वही फल हुआ जो पहले । युधिष्ठिर हार गये । तथा युधिष्ठिर
आदि पाण्डव अपनी प्रतिज्ञानुसार बन जानेकी तैयारी करने लगे ।

पाण्डवोंको बन जाते देख द्रौपदी भी वनकी तैयारी करने लगी ।
द्रौपदी कुन्तीके पास गयी उनको और अन्य राजवधुओंको प्रणाम
किया और वन जानेकी आज्ञा मांगी ।

—

यह देख कि द्रौपदी विना वन गये न मानेगी, कुन्तीको बड़ा दुःख हुआ । वे शोकसे विह्वल हो उठीं । वे द्रौपदीको समझाने लगीं बेटी ! इस कठिन दुःखसे घवड़ाना नहीं । तुम सदासे सुशीला और पतिव्रता हो, तुमको मैं और उपदेश ही क्या दे सकती हूं । तुम मेरे कुलकी गौरव स्वरूपा हो । कौरवोंको अपना भाग्य मनाना चाहिये जो तुम्हारे कोपसे नहीं जले । हे वहू ! मैं सदा तुम्हारी मङ्गल-कामना किया करूंगी । तुम निस्सन्देह जाओ । तुम्हारा वाल भी टेढ़ा न होगा । नकुल और सहदेवको अच्छी तरहसे रखना ।

द्रौपदीने कहा—आपकी आज्ञा शिरोधार्य है ।

इसके वाद द्रौपदीने अपनी चोटी खोल दी और इस वातकी प्रतिज्ञा की कि इस वेणीका अपमान करनेवालोंसे जव तक वदला न लूंगी तव तक मैं अपनी चोटी न वांधूंगी !

अपनी साससे विदा होकर उसने एक वस्त्र धारण किया और आंसू भरे नेत्रोंसे अपने पतियोंके पीछे पीछे चलने लगी ।
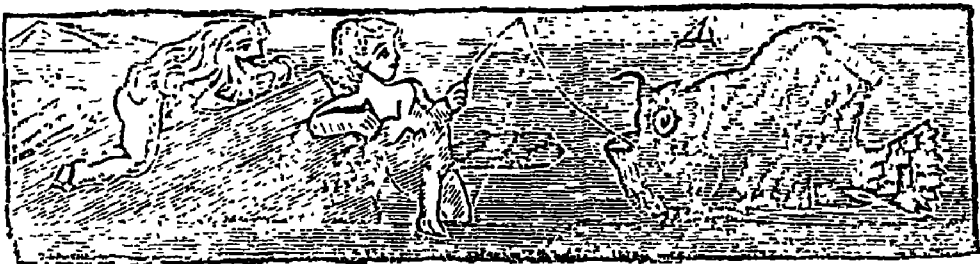
चतुर्थ-परिच्छेद।

वन गमन।

पाण्डवोंसे वनवासका हाल सुन नगरनिवासी, क्रोधसे जल उठे। सभी प्रजाके दलके दल पाण्डवोंके साथ वन जानेके लिये तैयार हो गये। पर युधिष्ठिरने सबको समझा बुझा कर लौटा दिया।

अपने पुरोहित धौम्य ऋषिकी सलाहसे युधिष्ठिरने सूर्य भगवान् की आराधना की। सूर्य भगवान् प्रसन्न हुए, उन्होंने स्वयं युधिष्ठिरके सामने आकर कहा:—

हे युधिष्ठिर! मैं तुम पर प्रसन्न हूं। तुमको यह अक्षय स्थाली देता हूं। प्रतिदिन जब तक द्रौपदी भोजन न करेगी तब तक इस थालीमें अनेक प्रकारके अन्न मौजूद रहेंगे। यह कह कर सूर्यदेव अन्तर्ध्यान हो गये। युधिष्ठिरने वह थाली द्रौपदीको सौंप दी।

द्रौपदी प्रतिदिन भोजन बनाती। वह पहले वनवासी ब्राह्मणोंको भोजन कराती, फिर अपने पतियोंको खिलाती। जब सब खा लेते थे तब सबसे पीछे वह भोजन करती। यही उसका प्रतिदिनका नियम था। जब तक वह भोजन न कर लेती थी, तब तक उस सूर्य भगवान्‌की दी हुई थालीमें षट्‌रस अन्न बराबर बना रहता था।

इधर पाण्डवोंके वनवासकी खबर द्वारिकामें पहुंची। यादव बड़े दुःखी हुए। पाण्डवोंसे मिलनेके लिये वे काम्यक वनमें आये। कृष्णको आते हुए देख कर पाण्डवोंने बड़े प्रेमपूर्वक उनकी अगवानी की। जब सब लोग बैठ गये तब कृष्णने युधिष्ठिरसे कहा—हे

न।

धर्मराज ! यह पृथ्वी दुर्योधनादिके रक्तका अवश्य पान करेगी। इन पापियोंको परास्त कर मैं तुम्हें शीघ्र ही राज्य दिलाऊंगा।

द्रौपदी अपने मनकी बात सुनकर अपने गुप्त भावको प्रकट कर बोली,—"हे कृष्ण ! मैं धृष्टद्युम्नकी बहन, पाण्डवोंकी पत्नी और तुम्हारी बहन होकर भी दुष्टात्मा दुःशासनके द्वारा भरी सभामें खींची गयी ! पाण्डव, पाञ्चाल और यादवोंके जीते जी मेरे साथ दासियोंकासा बर्त्ताव किया गया। धिक्कार है भीमसेनके बाहुबल और अर्जुनके गाण्डीवको ! एक तुच्छ आदमी द्वारा मेरा अपमान होते हुए देखकर भी इन लोगोंने कुछ परवा न की। हे मधुसूदन ! पाण्डव लोग शरणागतकी सदा रक्षा करते हैं। पर मेरे शरण मांगनेपर किसी ने मेरी सहायता न की !"

इसी तरह दुःख भरी बातें कहकर मधुरभाषिणी द्रौपदी अपने हाथसे अपना मुंह छिपाकर रोने लगी। इस पर भी श्रीकृष्णको चुप देख कर वह फिर आर्त्तस्वरसे कहने लगी:—

मैं जानती हूं इस समय मेरा कोई नहीं है, न माता है न पिता, न भाई, न पति, न पुत्र केवल एक तुम्हारा ही भरोसा था तुम भी मुझे छोड़ बैठे हो !

यह सुन कृष्णने द्रौपदीको धीरज देते हुए कहा—हे द्रौपदी, शान्त हो। जिसने तुम्हारा अपमान किया है, उनकी स्त्रियां युद्धके मैदानमें अर्जुनके बाणोंसे छिन्नभिन्न रक्तसे सराबोर अपने पतियोंकी लोथ देख तुमसे अधिक दुःखी होंगी। जहांतक होगा मैं पाण्डवोंकी मदद करनेमें अपनेसे उठा न रखूंगा। हे द्रौपदी ! चाहे आकाश टूट पड़े, हिमाचल चूर चूर हो जाय, या समुद्र सूख जाय पर मेरी बात कभी असत्य न होगी। मेरी बातोंका तुम विश्वास करो।

श्रीकृष्णकी इन बातोंसे द्रौपदीको कुछ शान्ति मिली। उसने कटाक्षपूर्ण नेत्रोंसे अर्जुनकी ओर देखा। अर्जुनने कृष्णकी बातों का समर्थन करते हुए कहा:—प्रिये! रोओ मत, धीरज धरो, कृष्णकी बात झूठ न होगी। उन्होंने जो कुछ कहा वह अवश्य होगा।

यादवोंके चले जानेपर युधिष्ठिरादि द्वैतवनमें चले गये। वहां एक दिन शामको युधिष्ठिर और भीमसेनके साथ द्रौपदी बैठी हुई थी। द्रौपदी युधिष्ठिरसे इस प्रकार कहने लगी—हे नाथ! देखिये, दुष्ट दुर्योधन कैसा निर्दयी है। उसने हम लोगोंको इतना सताया पर उसके जीमें जरा भी दया न आयी। जिस समय आपने वन-वासके लिये मृगचर्म धारण किया, उस समय दुर्योधन, शकुनी, कर्ण और दुःशासन इन पाषाणहृदय पापियोंके नेत्रोंमें तनिक भी आंसू नहीं आये, अन्य सबने रो दिया। हा नाथ! प्रतिदिन मैं आपको सभामें राजाओंके बीचमें बैठा हुआ देखती थी। आज आपको इस वनमें कुशासन पर बैठा हुआ देख कैसे धीरज धरूं। जिन भीमसेन का सदा आदर होता था, आज वेही दीनके समान दासोंका काम कर रहे हैं। जो अर्जुन संसारका धन जीत कर धनञ्जय नामसे प्रसिद्ध हैं, आज वे ही तपस्वियोंके वेशमें दुःख भोग रहे हैं। तरुण अवस्था वाले नकुल और सहदेवके सुकुमार शरीर भी वनवासके कठिन दुःखोंसे कृश हो रहे हैं। हे प्राणवल्लभ, ये हृदयविदारक दृश्य देख कर भी आप शान्त हैं, तब यही कहना पड़ता है कि आपमें क्रोधका नाम नहीं है। पर लोग कहते हैं कि क्रोधहीन क्षत्रियको जो चाहता है, वही दबा लेता है। सदा उसका तिरस्कार हुआ करता है। जो शत्रुओंको क्षमा करता है, उसकी उन्नति नहीं होती।

इसके उत्तरमें युधिष्ठिरने कहा—प्रिये, क्रोधसे भलाई और बुराई

चाहिये । जिस समय जिस स्थान पर क्रोध करना आवश्यक है, वहीं क्रोध करना चाहिये । असमय जो क्रोधको नहीं रोकता उसका नाश अवश्य होता है । दुःखीको दुःख देना, घायलको घायल करना, मरेको मारना, सताये हुएको सताना, बहुत ही निन्दित कर्म हैं । यदि लोग ऐसा किया करते तो अब तक संसार नष्ट हो गया होता । सनातनधर्म क्षमा करना ही है । अतः मैंने दुर्योधनादिसे क्षमाका व्यवहार किया है ।

इस प्रकारसे युधिष्ठिर और द्रौपदीमें बातें हो रही थीं । इतनेमें द्वैपायन मुनि वहां आये । उनकी बातें सुन वे बोले—हे धर्मराज ! दुर्योधनके पक्षवालोंसे डरना ठीक है, पर मैं उस डरके दूर होनेका उपाय बताये देता हूं । मैं तुम्हें श्रुतिस्मृति नामकी विद्या देता हूं । इसकी सहायतासे दिव्यास्त्र पानेके लिये अर्जुन तपस्या करें । तपस्यासे इन्द्र और महादेवको प्रसन्न कर वे नाना प्रकारके दिव्यास्त्र पा सकते हैं । उनके उपयोग करनेका ढङ्ग भी मालूम कर सकेंगे । इससे तुम्हारे भयका कारण दूर हो जायगा । यह कह श्रुतिस्मृति-विद्या युधिष्ठिरको देकर व्यासदेव लौट गये ।

युधिष्ठिरने व्यासदेवके बताये हुए उपायको अर्जुनसे कहा । अर्जुन बड़े भाईकी आज्ञा पाकर दिव्यास्त्र पानेके लिये चले गये और कैलाश पर्वत पर जाकर तप करने लगे । उनके चले जाने पर पाण्डव लोग काम्यकवनको लौट आये ।

अर्जुनके चले जाने पर कैलाशसे कुछ तपस्वी आये । उनसे यह सुनकर कि अर्जुन तपके लिये कठिन शारीरिक दुःख भोग रहे हैं, पाण्डव बड़े दुःखी हुए । पतिपरायणा द्रौपदी तो दुःखसे अधीर हो कर युधिष्ठिरसे कहने लगी—प्राणनाथ ! अर्जुनके विरहसे मेरा

अन्धकार ही अन्धकार मुझे दिखायी दे रहा है। यहां रहना मेरे लिये असह्य हो रहा है। उनकी याद आते ही मुझे अत्यन्त वेदना हो रही है। हाय! परमात्मा वह दिन कब दिखावेगा जिस दिन महाबाहु अर्जुनके दर्शन होंगे?

भीमसेनने कहा प्रिये! तुमने मेरे मनकी बात कही, तुम्हारी बातें सुन कर मुझे बड़ी खुशी हुई। मेरे हृदयमें तुमने अमृत बरसाया। अर्जुनके बिना मुझे इस काम्यकवनमें सुख नहीं, चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखायी देता है।

यह सुन नकुल और सहदेवका भी दुःखसे गला भर आया। वे युधिष्ठिरसे बोले—हे राजन्! इन लोगोंने हमारे मनकी ही बात कही है। यहां पल भर भी रहनेको जी नहीं चाहता। इसलिये कहीं अन्यत्र चलना चाहिये।

इनकी दुःख भरी आहें सुनकर धर्मराज बड़े घबड़ाये। इसी समय नारदमुनि आ पहुंचे। द्रौपदी सहित पाण्डवोंने उनका यथोचित आदर सत्कार किया। आतिथ्य-सत्कार ग्रहण करके नारदजीने कहा—हे धर्मराज! आप लोग इतने खिन्न क्यों हैं? मुझसे कहिये मैं सदुपदेश देनेका प्रयत्न करूंगा।

युधिष्ठिरने सारी बातें सुनादीं। यह सुन नारदमुनि बोले—सुना है कि इन्द्रलोकसे अर्जुनका समाचार लेकर लोमश ऋषि यहां आ रहे हैं। उनसे अर्जुनका समाचार सुन तुम लोग अवश्य आनन्दित होगे। मैं भी समझता हूं यहां रहना उचित नहीं है। महर्षि लोमश बहुतसे तीर्थोंमें भ्रमण कर चुके हैं, और वे उन तीर्थों का इतिहास भी जानते हैं। उनके साथ तीर्थयात्रा करनेसे तुम लोगों का समय आनन्दसे कटेगा और किसी अच्छे स्थानमें पहुंच कर अर्जुनके आनेकी प्रतीक्षा भी कर सकोगे। यह कह नारदमुनिने

अनेक तीर्थोंका इतिहास उन लोगोंको सुनाया। इससे पाण्डवोंके मनका दु:ख कुछ हलका हुआ। बादमें नारद चले गये।

नारदके जानेके थोड़ी देर बाद ही महर्षि लोमश आ गये। पाण्डवोंने उनका खूब आदर सत्कार किया। इसके बाद बड़े ही आग्रहसे युधिष्ठिरने अर्जुनका समाचार उनसे पूछा।

महर्षि लोमश कहने लगे:—हे युधिष्ठिर! मैं इन्द्रकी आज्ञासे तुम लोगोंको अर्जुनका शुभ समाचार सुनाने आया हूं। द्रौपदी सहित तुम लोग एकाग्र चित्तसे सुनो। इन्द्रकी कृपासे यम, वरुण, कुवेर आदि देवताओंने अर्जुनको उत्तम उत्तम दिव्यास्त्र दिये हैं और उनके चलानेका ढङ्ग भी सिखा दिया है। यही नहीं किन्तु अर्जुनने तप करके साक्षात् महादेवजीका दर्शन किया है और उनसे पाशुपत-अस्त्र पाया है। इन्द्रके बुलानेसे देवकार्यके लिये वे स्वर्गलोक गये हैं, वहां पर गाने बजाने वाली गांधर्वविद्याका भी अच्छा अभ्यास किया है। इन्द्रने यह भी कहा है कि कर्णके कवचके लिये तुम चिन्ता न करो उसको तोड़नेके लिये मैं स्वयं प्रयत्न कर रहा हूं।

ये आनन्द समाचार सुन द्रौपदी और पाण्डव बड़े प्रसन्न हुए।

युधिष्ठिरने महर्षि लोमशसे तीर्थ-भ्रमण की बातें छेड़ीं। महर्षि लोमश तीर्थ यात्राके लिये तैयार हो गये। इसके बाद नियत दिन को कुछ इने गिने ब्राह्मणोंको लेकर पाण्डव द्रौपदी सहित तीर्थयात्राके लिये चल दिये।

महर्षि लोमश पाण्डवोंको अनेक तीर्थोंमें घुमाते फिराते और उनका वर्णन करते तीर्थयात्रा कराने लगे। इस प्रकार तीर्थयात्रा करने से द्रौपदी और पाण्डवोंका मन कुछ प्रसन्न रहने लगा।

अनेक तीर्थोंमें भ्रमण करते हुए महर्षि लोमश गन्धमादन

पर्वतके नीचे जा पहुंचे। सब लोग पहाड़ पर चढ़ने लगे। पर द्रौपदी बहुत ही थक गयी थी। उसके लिये एक पग भी आगे चलना बड़ा कठिन काम था। वह थहराकर भीमकी गोदमें सिर रख कर बैठ गयी और एक दम बेहोश हो गयी। यह देख पाण्डव बड़े व्याकुल हुए।

धीरे धीरे भीगे पह्लेसे उसके मुंह पर हवा की गयी और जलका छींटा दिया गया, वह होशमें आयी। उसको अनेक तरहसे धीरज देकर युधिष्ठिर भीमसे बोले—हे भाई! अभी बहुतसे पहाड़ पार करने हैं, वे बर्फसे ढके हैं, उन पर चलना बड़ा कठिन काम है। द्रौपदी उन्हें कैसे पार कर सकेगी?

भीमने कहा—महाराज! आप चिन्ता न करें। मैं स्वयं द्रौपदीको उठा ले चलूंगा। जरूरत पड़ने पर आप लोगोंको भी सहारा दूंगा। हिडिम्बाके पुत्र घटोत्कचमें राक्षसोंके समान अद्भुत शक्ति है, उसने याद करते ही आजानेका वचन दिया है। वह हम सबको ले चल सकता है। यदि आज्ञा हो तो उसको बुला लूं?

युधिष्ठिरकी आज्ञासे भीमने अपने पुत्र घटोत्कच को याद किया। वह शीघ्र आ गया और उसने गुरुजनोंको प्रणाम किया। भीमने आनन्दसे उसका आलिङ्गन कर कहा—हे पुत्र! तुम्हारी मां बहुत थक गयी हैं, अब वे एक पग भी नहीं चल सकतीं। इसलिये उनको अपने कन्धे पर चढ़ा लो और आकाशमें मेरे पीछे पीछे चलो।

घटोत्कचने कहा—हे पिता! आप चिन्ता न करें। मैं अपने साथियोंको बुलाता हूं। मैं माताको ले चलूंगा और वे आप लोगोंको।

पहुंचे और पाण्डवोंको उठा कर ले चले। बहुत जल्दी ही बद्रिका-श्रमके समीप एक अत्यन्त रमणीय वनमें पाण्डवोंको उतार दिया।

वहां फल फूलोंके भारसे वृक्ष झुक रहे थे, नाना प्रकारकी चिड़ियां उन पर चहचहा रही थीं। उन्हीं वृक्षोंकी छायामें बैठ कर सबने थकावट दूर की। पतितपावनी—गङ्गाके पवित्र तट पर बद्रिकाश्रम-वासी तपस्वियोंके जपतपमें वे लोग सहायता करने लगे। उनके दिन वहां बड़े आनन्दसे कटने लगे।

अनेक प्रकारके प्राकृतिक सौन्दर्य्य अवलोकन कर द्रौपदीको वहां बड़ा आनन्द होता था। उमङ्गमें आकर जल थलमें अनेक तरहके खेल खेला करती। उसको प्रसन्न देख पाण्डव भी बड़े प्रसन्न रहते।

एक दिन बड़े वेगसे हवाका एक झोंका आया। हवाके उस झोंकेसे सूर्यके समान हजार पत्तोंवाला एक कमल द्रौपदीके पास आ गिरा। उसने बड़ी ही प्रसन्नतासे उस फूलको उठा लिया। उसने हंस कर भीमसे कहा—आहा! यह सुन्दर फूल कैसा सुगन्धित है? मैं इसे धर्मराजको उपहार दूंगी। हे नाथ! यदि तुम मुझे प्यार करते हो तो ऐसे फूल मुझे बहुतसे ला दो।

महावीर भीम प्रिया द्रौपदीकी इच्छा पूरी करनेके लिये हथियार लेकर फूलोंकी तलाशमें निकल पड़े। अधिक विलम्ब होनेसे युधिष्ठिर कहीं चिन्तित न हों इस भयसे मार्गमें आनेवाली लताएं और पौधों को तोड़ते तोड़ते बड़े वेगसे वे पहाड़ पर चढ़े चले जाते थे।

कुछ समयके बाद वे एक केलोंके सघन वनमें जा पहुंचे। इसीके बीचके एक तङ्ग रास्तेसे जाते हुए वे केलोंके पेड़ोंको तोड़कर इधर उधर फेंकने लगे। यह देख उस वनके बन्दर, मृग आदि डरसे इधर

भीम उसके पास पहुंच कर बड़े जोरसे गर्जे। उनके गर्जनसे पशु-पक्षी डर गये। उनका गर्जना सुन कर बन्दरने अपना पलक उठा बड़े गर्वसे भीमकी ओर देखा। उसने भीमसे कहा—मैं सुखकी नींद सो रहा था। तुमने मुझे क्यों जगाया? अब मुझे अधिक सता कर अपनी मौत न बुलाना।

भीमने कहा—चाहे मेरी मृत्यु आवे या अन्य कोई विपद् मैं तुम्हारा उपदेश लेना नहीं चाहता। मेरा रास्ता छोड़ दो। मेरे हाथोंको व्यर्थमें कष्ट न दो।

बन्दर बोला—भाई मैं बूढा हूं, मैं उठ नहीं सकता, तुम जवान और बलवान आदमी हो, तुम मेरी पूंछ राह परसे हटाकर चले जाओ। मुझे कष्ट न दो।

भीमने गर्वसे उसकी पूंछ पकड़ दूर फेंकना चाहा। पर बलपूर्वक खींचने पर भी वे जरा न हटा सके। इससे वे बड़े विस्मित हुए। उन्होंने लज्जासे अपना सिर झुका लिया। उसके सामने खड़े होकर और हाथ जोड़ कर उन्होंने पूछा—हे बानर श्रेष्ठ! तुम कौन हो? बानरके वेशमें यहां क्यों पड़े हो? कृपा कर मुझे अपना परिचय दो।

बानरने प्रसन्न होकर कहा—मैं वायुपुत्र हनुमान और भगवान् रामचन्द्रका सेवक हूं। प्रभुका ध्यान करते हुए बुढ़ापेका दिन काट रहा हूं। तुम मेरे पिताके वर दिये हुए पुत्र हो। तुम पर मैं अपने भाई का सा स्नेह रखता हूं। इस रास्तेसे मनुष्य नहीं जाते। इसीलिये मैंने तुमको रोका है।

इसके बाद भीमने अपने जानेका मतलब कह सुनाया। हनुमानने प्रसन्नतासे उनका आलिङ्गन कर कहा—जिन फूलोंको तुम ढूंढ़ने निकले हो, वे केवल कुबेरके सरोवरमें ही होते हैं। वह सरोवर समीप ही है। यह कह हनुमानने कुबेरके [illegible]

प्रियतमाकी इच्छा पूर्ण करनेके लिये भीम वन, पहाड़ आदि पार करते हुए बड़े वेगसे लगातार चले गये। जाते जाते गन्धमादन पर जा पहुंचे। वहां पर उन्होंने एक नदी देखी जिसमें बड़े बड़े कमलके फूल खिले हुए थे। वह नदी वह कर कुवेरके सरोवरमें गिरती थी।

उस सरोवरको देख भीम बड़े प्रसन्न हुए। वे उस सरोवरमें उतर पड़े और बड़ी देर तक स्नान करने लगे। कुवेरके बागके रक्षक यक्षोंने भीमको देख बड़े गर्वसे पूछा—तुम कौन हो? तुम्हारा वेश मुनि और वीर दोनोंका है। तुम किस मतलबसे यहां आये हो?

भीमने कहा—मैं द्वितीय पाण्डव भीमसेन हूं। मैं अपनी पत्नीके लिये फूल लेने आया हूं।

यक्षोंने कहा—हे भीमसेन, यह सरोवर यक्षराज कुवेरका है। यह उनका अतिप्रिय है। वे यहीं जलक्रीड़ा करते हैं, उनकी विना आज्ञा इसमें कोई घुस नहीं सकता।

भीम बोले—यह सरोवर पहाड़ी झरनेसे निकला है। इसलिये इस पर सभीका अधिकार समान है। फूल चुनना एक मामूली बात है, इसके लिये किसीसे पूछनेकी जरूरत ही क्या है?

यह सुन यक्ष बड़े क्रुद्ध हुए और मारो, काटो, पकड़ो कह कर भीम पर टूट पड़े। भीमने भी अपनी गदा सम्हाल ली और उनको मारने लगे। देखते देखते घोर युद्ध होने लगा।

इधर भीमको न देख कर युधिष्ठिरने द्रौपदीसे पूछा—प्रिये भीम कहां हैं?

द्रौपदीने कहा—आर्य! जो सुगन्धित फूल मैंने उपहारमें दिया था, उसे पाकर मैंने भीमसे कहा था—हे भीम! ऐसा फूल क्या कहीं और देखा है? जान पड़ता है मेरा अधिक प्यार करनेके कारण ऐसे फूलोंकी खोजमें वे पूर्वोत्तर दिशाको गये हैं।

युधिष्ठिरने कहा—चलो हम लोग भी उधर ही चलकर उनसे मिलें। मुझे शङ्का बनी रहती है कि कहीं बलके गर्वमें भीम किसी देवता आदिका कोई अपराध न कर बैठें।

घटोत्कचकी सहायतासे पाण्डव लोग अति शीघ्र कुवेरके सरोवर पर जा पहुंचे। भीम क्रोधसे ओंठ चबा रहे थे और उनके चारों ओर बहुतसे घायल यक्ष पड़े हुए थे। यह देख कि भीमको जरा भी चोट नहीं लगी है, युधिष्ठिरने बार बार उनको गलेसे लगाया। फिर बोले—भाई! तुमने यह क्या किया? यदि तुम मुझे चाहते हो तो कभी ऐसा न करना।

युधिष्ठिरके आनेकी खबर कुवेरको लगी। कुवेरने अपने विश्वास-पात्र नौकरको भेज कर पाण्डवोंका खूब आतिथ्य सत्कार करवाया और कहला भेजा कि जब तक अर्जुन नहीं लौटते तब तक आप लोग गन्धमादन पर रहें। द्रौपदी फूलोंको पाकर बड़ी खुश हुई। भीम भी उसको प्रसन्न देख बड़े आनन्दित हुए।

इधर अर्जुन भी देवताओंसे दिव्यास्त्र आदि प्राप्त करके लौटे। उनके आनेसे द्रौपदी आदि सब लोग बड़े प्रसन्न हुए। कुछ दिन वहां रहकर पांडवोंने अपने राज्यके समीप ही रहना निश्चय किया। यह स्थिर करके पाण्डव लोग काम्यक वनमें लौट आये। उनका आना सुन कर श्रीकृष्ण बड़े प्रसन्न हुए। वे अपनी पत्नी सत्यभामाके साथ काम्यक वनमें रथ पर चढ़ कर आ पहुंचे। रथसे उतर कर श्रीकृष्णने युधिष्ठिर, भीम आदिको प्रणाम कर अर्जुनको बार बार हृदयसे लगाया। इधर सत्यभामाने भी द्रौपदीको बार बार भेंटा। अर्जुन अपने प्रिय मित्र कृष्णको देख बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने अपना भ्रमण वृतान्त कृष्णको सुना कर सुभद्रा और अभिमन्युका समाचार पूछा।

श्रीकृष्णने युधिष्ठिरसे कहा—आपने राज्य प्राप्तिकी अपेक्षा धर्म ही को बड़ा समझा है। यह है भी बहुत ही उचित। इधर अर्जुनने भी दिव्यास्त्र प्राप्त कर क्षत्रियोचित ही काम किया है। आपकी प्रतिज्ञा पूरी होते ही आपकी आज्ञा पाकर मैं कुरुवंशका समूल नाश करूंगा और आपका राज्य आपको लौटाऊंगा।

इसके बाद कृष्ण द्रौपदीसे कहने लगे—

हे द्रौपदी ! प्रतिविन्ध्य आदि तुम्हारे पुत्र बड़े ही सुशील हैं। तुम्हारे ही समान सुभद्रा उनका लालन-पालन बड़ी सावधानीसे करती है। उनकी सब तरहकी शिक्षाकी देख रेख प्रद्युम्न करते हैं।

इसके बाद युधिष्ठिरने कृष्णकी बड़ी प्रशंसा की और उनकी बातोंके उत्तरमें कहा—हे केशव ! पाण्डवोंके कर्त्ताधर्ता और सब विषयोंका उपदेश देनेवाले तुम्हीं हो। अब बारह वर्ष लगभग पूरे हो चुके। अब एक वर्ष अज्ञातवास और बिताना है। इसके बाद तुमसे मिलूंगा और तुम्हारी सहायता लूंगा।

इधर सत्यभामा और द्रौपदीका मिलन बहुत दिनोंके बाद हुआ था वे आपसमें मीठी मीठी बातें कर बड़े आनन्दसे दिन बिता रही थीं।

एक दिन एकान्तमें सत्यभामा द्रौपदीसे कहने लगी—हे द्रौपदी ! महाबली पाण्डव तुमसे इतने प्रसन्न रहते हैं यह देख मुझे आश्चर्य होता है। तुम्हारे पति एक दिन भी तुमसे अलग नहीं होते। तुमको छोड़ वे और किसीको चाहते भी नहीं। हे सखी ! मुझसे बताओ कि किस व्रत, मन्त्र या औषधिसे उनको इस तरह वशमें कर लिया है। मालूम होने पर मैं भी कृष्णको अपने वशमें करूंगी और तुम्हारी तरह सौभाग्यवती बनूंगी।

पतिपरायणा द्रौपदीने कहा—हे सखी पतिको वशमें करनेके

लिये तुमने जिन उपायोंको कहा उनको नीच स्त्रियां ही किया करती हैं। तुम कृष्णकी स्त्री हो। तुम्हारे मुंहसे ये बातें शोभा नहीं देतीं। तुमको ऐसी बातें पूछना उचित नहीं। यह जाननेसे कि मेरी स्त्री मुझे वशमें करनेके लिये यन्त्र मन्त्र सिद्ध करती है, कभी किसी स्त्रीका पति सुखी और शान्त नहीं रह सकता। औषधि देने-से शारीरिक ही हानि नहीं होती, किन्तु प्राण जानेका भी डर रहता है। हे सखी! इन उपायोंसे पति कभी वशमें नहीं होते। इन सब उपायोंका अन्तिम फल बहुत बुरा और भयानक होता है। मैं अपने पतियोंके साथ जो व्यवहार करती हूं वह सुनना चाहो तो सुनो। मैं पाण्डवोंकी दूसरी स्त्रियोंसे बैर नहीं करती न कोई बुरा बर्ताव ही उनके साथ करती हूं। मैं अपने पतियोंके साथ अभिमान नहीं करती। सदा उनकी इच्छानुसार काम करती हूं। मैं इस बातका सदा ध्यान रखती हूं कि कहीं मेरे मुंहसे कोई अनुचित बात न निकल जाय। इशारा पाते ही मैं सबकी बराबर सेवा करती हूं। मैं सारा गृहस्थीका काम स्वयं करती हूं। मैं आंगन-घर खूब साफ रखती हूं। यथास्थान सब वस्तुओंको रखती हूं। पतियोंके लिये यथासमय भोजन तैयार करती हूं। उनके भोजन करनेके बाद भोजन करती हूं। उनके सोनेके बाद सोती हूं और उठनेके पहले उठती हूं। मैं उनसे सच्चा और निष्कपट प्रेम रखती हूं। मैं उनसे कटु-वचन नहीं बोलती। मैं सदा मीठी बातें बोलती हूं। मैं उनका अपमान नहीं करती। मैं अपना रमणीय-प्रिय वेश बनाये रहती हूं। मनलुभानेवाली सुगन्धित मालाओंसे सजी रहती हूं। हे सखी! पतिको वशमें करनेका सबसे अच्छा उपाय मैं यही जानती हूं। नीच और दुराचारिणी स्त्रियोंके समान बुरा बर्ताव करनेकी इच्छा कभी न

न। करनी चाहिये

सत्यभामाने कहा—हे सखी ! मेरी इस हँसी दिल्लगीसे क्रोध न करना । मुझसे अपराध हुआ । क्षमा करो ।

द्रौपदीने कहा—सखी ! पतिको वशमें रखनेका जो उपाय मैंने बतलाया है, उसके अनुसार चलोगी तो कृष्ण पूरे तौरसे तुम्हारे वशमें हो जायंगे । सती स्त्रियोंको पहले तो दुःख भोगना पड़ता है अन्त में वे सुखी होती हैं ।

इधर श्रीकृष्ण पांडवोंसे विदा होकर रथपर सवार हुए और सत्य-भामाको बुलाया । सत्यभामाने द्रौपदीको बड़े प्रेमसे गलेसे लगाकर कहा—प्रिय सखी ! दुःख न करो । तुम्हारे पति अपने बाहुबलसे शीघ्र ही राज्य पावेंगे । तबतक तुम्हारे बालकोंका लालन पालन हम लोग बड़ी सावधानी और स्नेहसे करेंगी ।
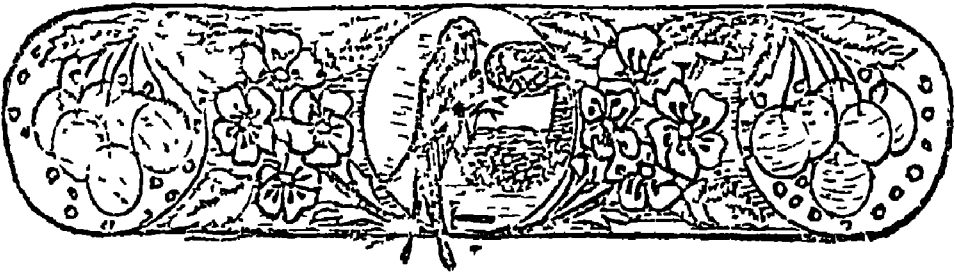
पंचम-परिच्छेद।

—०※०—

द्रौपदी-हरण।

एक दिन पाण्डवोंकी इच्छा शिकार खेलनेकी हुई। उन्होंने द्रौपदीको महर्षि तृणविन्दुके आश्रममें रख दिया और अपने पुरोहित धौम्य ऋषिको सौंप कर कहा—आप इनकी देख भाल स्वयं कीजियेगा। इन्हें किसी बातका कष्ट न होने पावे। इसके बाद सब लोग भिन्न भिन्न दिशाओंको शिकार खेलने चले गये।

इसी समय धृतराष्ट्रका दामाद सिन्धु देशका राजा जयद्रथ फिर विवाह करनेकी इच्छासे काम्यक बनसे होकर शाल्व देशको जाता था। उसके साथमें और भी राजा लोग थे। उनकी निगाह द्रौपदी पर पड़ी जो कि एक झुके हुए केलेके पेड़के सहारे खड़ी थी। जिसकी अलौकिक सुन्दरता से आश्रमके चारों ओर प्रकाश फैला हुआ था। द्रौपदीको देख उन सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। वे सब आपसमें कहनेलगे—यह कौन स्त्री है? क्या मानवी है, या अप्सरा है, या दैवी माया? किस कारणसे कांटोंसे भरे वनमें यह आयी है?

जयद्रथ द्रौपदीकी अलौकिक सुन्दरता पर मोहितसा हो गया। उसने कोटिकास्य नामक राजासे कहा—हे कोटिक! तुम शीघ्र जाओ, इस बातका पता लगाओ कि यह सुन्दरी कौन है?

आश्रमके द्वार पर जाकर कोटिकने कहा—हे मृगनयनी! तुम अकेली इस बनमें क्या करती हो। अपने पिता और पतिका परि-

द्रौपदी-चीर-हरण ।

चय देकर मेरे कौतूहलको दूर करो। मैं शिवि राजाका पुत्र कोटिकास्य हूं। जो सोनेके रथ पर सवार हैं, वे त्रिगर्तराजके पुत्र हैं। वे सुन्दर युवा जो तालाबके पास खड़े हैं और तुम्हारी ओर एक टक देख रहे हैं सिंधुराजके पुत्र जयद्रथ है। उनके नामसे तुम अवश्य परिचित होगी। हे सुकेशी! अब तुम अपना परिचय देकर हम लोगोंके सन्देहको दूर करो।

कोटिकास्यको देखते ही द्रौपदीने केलेके पेड़को छोड़ दिया और अपनी ओढ़नी सम्भाल ली। कनखीसे उसकी ओर देखकर उसने कहा:—हे राजपुत्र! यहां अकेली रहकर मेरे जैसी स्त्रियोंसे तुमसे बातचीत करना शिष्टताके विरुद्ध है। पर तुम्हारे प्रश्नोंका उत्तर देनेवाला अन्य कोई यहां उपस्थित नहीं है, तुमने अपने उत्तम कुलका परिचय भी दिया है, इसलिये मैं भी अपना परिचय स्वयं देती हूं। मैं पाञ्चालनरेश द्रुपदकी कन्या और पञ्चपाण्डवोंकी धर्मपत्नी द्रौपदी हूं। मेरे पति शिकार खेलने गये हैं। वे अभी आते ही होंगे। तबतक आपलोग यहां विश्राम करें। महात्मा पाण्डव लोग बड़ी प्रसन्नतासे आप लोगोंका यथोचित सत्कार करेंगे।

यह कह द्रौपदी अतिथि-सत्कारकी तैयारी करनेकी इच्छासे पर्णकुटीमें चली गयी। इधर कोटिकास्यने जयद्रथसे सब हाल कह सुनाया। द्रौपदीकी सुन्दरता देख पापी जयद्रथका मन उस पर पूर्णरूपसे आसक्त होगया था। उसे अपनी स्त्री बनानेका उसने अपने मनमें निश्चय कर लिया। इसलिये वह स्वयं आश्रमके भीतर चला गया और द्रौपदीसे कहने लगा हे सुन्दरी, कुशल तो है तुम्हारे पति सब अच्छे तो हैं? द्रौपदीने शिष्टताके साथ उत्तर दिया हे राजन्! तुम्हारे राज्यका खजानेका और सेनाका, मङ्गल तो है? मेरे पति जिन लोगोंकी बात तुमने पूछी है कुशलसे हैं। यह जल और आसन

यह मृग-चर्म, फल, मूल आदि प्रातःकालका भोजन ग्रहण कीजिये। पाण्डवोंके शिकारसे लौटनेपर मैं उचित भोजनका प्रबन्ध कर सकूंगी।

निर्लज्ज जयद्रथने कहा—हे सुन्दरी! मेरे पास प्रातःकालीन भोजनकी कमी नहीं है। उसके देनेकी तुम्हारी इच्छासे ही मेरी तृप्ति हो गयी। मैं भोजन करना नहीं चाहता। मैं तो तुम्हारे प्रेमका भूखा हूं। तुम्हें बिना पाये मुझे शान्ति नहीं। तुम राज्यविहीन दरिद्री पाण्डवोंके पास रहने योग्य नहीं हो। इससे तो यह उत्तम है कि तुम मेरी स्त्री बनो और मेरे सारे राज्यका सुखसे भोग करो।

जिस बातका द्रौपदीको स्वप्नमें भी खयाल न था, ऐसी बात जयद्रथके मुंहसे सुनकर उसका हृदय दहल उठा। उसने क्रुद्ध होकर और भौंहें टेढ़ी करके उसे धिक्कारते हुए कहा:—

अरे नीच, दुराचारी! तुझे लज्जा नहीं आती—यह कह द्रौपदी कुछ अलग हट गयी। पर उस निर्ल्जका हृदय शान्त न हुआ। उसकी पापवासना दूर न हुई। इससे डरकर और क्रोधसे द्रौपदी, कांपने लगी।

द्रौपदी उससे तरह तरहकी बातें कहकर पाण्डवोंके लौटने तकका समय बिताने लगी। उसने कहा—हे राजपुत्र! क्या तुम्हारे साथ एक भी मनुष्य ऐसा नहीं जो खन्दकमें गिरते हुए तुमको बचावे। तुम्हारा जन्म सत्कुलमें हुआ है, फिर सताये हुए पांडवोंका अपमान करनेमें तुम्हें लज्जा नहीं आती? रे मूर्ख! क्या सोचकर तुम मस्त हाथीपर डण्डेसे आक्रमण करना चाहते हो। क्या तुम सोते हुए सिंहको जगाकर अपना प्राण बचा सकोगे, या विषधर नागकी पूंछ पर पैर रखकर तुम जीते बचे रहोगे? जब क्रुद्ध भीम और अर्जुनसे सामना पड़ेगा तब क्या तुम्हारे प्राण पखेरू बिना उड़े रह जायंगे?

जयद्रथने कहा—हे द्रौपदी! तुम्हारी इन बनावटी बातोंसे या भय दिखानेसे मैं माननेवाला नहीं। क्या तुम मेरी वीरताको नहीं जानती? मैं पाण्डवोंसे डरनेवाला नहीं हूं। उनसे मैं वीरतामें किसी तरह कम नहीं। वे किस खेतकी मूली हैं। वे मेरा सामना क्या कर सकते हैं? उनको मैं तृणके बराबर भी नहीं समझता हूं। वे हैं किस गिनतीमें। अब तुम चुपचाप मेरे रथ या हाथी पर चढ़ चलो नहीं तो मैं बलपूर्वक तुम्हें ले चलूंगा!

द्रौपदीने कहा—क्या तुम मुझे अबला समझते हो? मुझे असहाया जान कर वशमें करना चाहते हो? यह तुम्हारी भूल है, मुझे अबला मत समझो। मैं निर्बला नहीं हूं। मेरे रक्षक महाबली हैं। तुम मुझे इन धमकियोंसे डरा नहीं सकते हो। रे पापी! जिस समय महावीर भीम गदा लेकर आवेंगे, उस समय तुम्हारी हड्डियोंका पता भी न लगेगा। प्रबल प्रतापी अर्जुन जिस समय अपने गाण्डीव धनुषसे तीक्ष्ण बाणोंको छोड़ेंगे, उस समय तुम्हारी क्या दशा होगी? क्या तुम्हारा यह प्राण बचा रहेगा? रे नीच! जरा इन बातोंको भी तो सोच लो। क्यों तुम करालकालके कवलमें स्वयं गिर रहे हो?

द्रौपदी इस तरहकी बातें कर रही थी और वह पापी उसकी ओर बढ़ा चला जाता था। अपना शरीर छूनेसे बचानेके लिये द्रौपदीने बार बार मना किया और धौम्य ऋषिको कातर स्वरसे बुलाने लगी, पर पापात्मा जयद्रथने इन बातों पर जरा भी ध्यान न दिया। उसने द्रौपदीकी चादर पकड़ ली।

द्रौपदीने झटका देकर अपनी चादर छुड़ाली और वह पापी कटे वृक्षके समान धड़ामसे पृथ्वी पर गिर पड़ा। पर वह चटपट उठ बैठा

इसी समय महात्मा धौम्य आकर कहने लगे, रे नीच! क्षत्रिय-धर्मानुसार पाण्डवोंको युद्धमें हरा ले, तब द्रौपदीको ले जाना। महात्मा पाण्डवोंके आते ही तुझे तेरे इस पापका फल मिल जायगा।

महर्षि धौम्यने जयद्रथसे बहुत कुछ कहा पर उनकी बातोंका उसपर कुछ भी असर न पड़ा। यह देख महर्षि धौम्य उसकी पैदल सेनाके पीछे पीछे चलने लगे और द्रौपदीको छोड़ देनेके लिये कहने लगे।

इधर पांचों पाण्डव भी मृगयासे लौट कर इकट्ठे हुए। वे आश्रमकी ओर लौटने लगे, इतनेमें युधिष्ठिरको अपशकुन होने लगे। वे बोले—आज बड़े बुरे अपशकुन हो रहे हैं। मेरा मन डावांडोल हो रहा है। मालूम होता है—कौरवोंने आश्रममें आकर कोई उपद्रव तो नहीं मचाया। चलो जल्दी चल कर देखें, क्या बात है? क्यों मुझे ऐसे अपशकुन हो रहे हैं।

इस बातसे सभीके मनमें सन्देह हुआ और शीघ्रतासे आश्रमकी ओर बढ़े। काम्यक वनमें आते ही उन्होंने देखा कि द्रौपदीकी दासी जमीन पर पछाड़ खाकर पड़ी रो रही है।

यह देख सारथि इन्द्रसेन रथसे झट कूद पड़ा और बड़ी तेजीसे उसके पास जाकर बोला—तुम क्यों रो रही हो? तुम्हारा मुंह क्यों फीका पड़ गया है? क्या किसी दुष्टने पाञ्चालीका अपमान तो नहीं किया?

दासीने कहा—हे सारथि, पाण्डवोंकी कुछ भी परवा न करके जयद्रथ द्रौपदीको हर ले गया है। वे लोग इसी मार्गसे गये हैं। अभी वे बहुत दूर न गये होंगे। अब विलम्ब न करो, शीघ्रतासे इस मार्गसे

सारथिने कहा:—भयकी कोई बात नहीं अजेय पाण्डवोंकी प्रियतमा द्रौपदी अनाथा नहीं है। आज ही पाण्डवोंके तीक्ष्ण वाण उस दुष्टके वक्षस्थलको विदीर्ण करेंगे, इसमें जरा भी सन्देह नहीं। युधिष्ठिर आदि पाण्डव क्रुद्ध होकर धनुष टङ्कार करके बड़े वेगसे उस मार्गसे दौड़े। वे थोड़ी ही दूर गये होंगे कि जयद्रथकी सेनाके घोड़ोंकी टापोंसे उड़ी हुई धूल उनको दिखायी दी और धौम्यकी पुकार सुनाई पड़ी। उस समय पाण्डवोंका क्रोध और भी अधिक उमड़ उठा। वे सेनाकी उपेक्षा करके सीधे जयद्रथके रथकी ओर दौड़े।

जयद्रथकी रक्षाके लिये कोटिकास्य अपना रथ भीमके सामने ले आया। पर भीमने एक गदा ऐसी मारी कि रथ चूर चूर हो गया और प्रास नामक अस्त्रसे उस राजपुत्रको भी मार डाला। इधर अर्जुनने अकेले ही पांचसौ पहाड़ी वीरोंका संहार किया। त्रिगर्त-राजने युधिष्ठिर पर आक्रमण किया। उनके रथके चारों घोड़ोंको मार गिराया। युधिष्ठिर इससे जरा भी शङ्कित न हुए। उन्होंने अर्द्धचन्द्र बाणसे मार कर त्रिगर्तराजको जमीन पर गिरा दिया। फिर सहदेवके रथ पर आ बैठे। नकुल रथसे कूद पड़े और अपनी तलवारकी तीक्ष्ण धारसे सिपाहियोंको यमलोक भेजने लगे। यह देख राजा सुरथने नकुलको मारना चाहा और अपना हाथी नकुल पर दौड़ाया। पर नकुलने तलवारका एक ऐसा हाथ मारा कि उसके दोनों दांत और सूंड कट गयी और वह जमीन पर गिर पड़ा।

क्षत्रियकुल-कलङ्क जयद्रथने अपने हजारों वीरोंको मरा हुआ और पाण्डवोंको अति क्रुद्ध देख द्रौपदीको भरी सेनाके बीचमें उतार दिया और स्वयं युद्धके मैदानसे भाग पड़ा। यह देख भीमसेन द्रौपदीको धर्मराजके पास ले आये और बोले—महाराज! लगभग शत्रुओंकी सारी सेना मार चुकी है। बचे खचे लोग भी भाग

रहे हैं। द्रौपदीको आप आश्रममें ले जाइये। इनको ढाढ़स दीजिये। मैं देखूं पापी जयद्रथ गया किधर ? यदि वह पातालमें भी गया होगा तो भी आज उसके प्राण न बचेंगे।

युधिष्ठिर बोले—हे वीर ! निःसन्देह उसने बड़ा बुरा काम किया है ! उसका उचित दण्ड तो प्राणदण्ड ही है। पर बहन दुःशला और माता गान्धारीका खयाल करके उसको मत मारना। उसका प्राण दान कर देना।

यह सुनकर क्रोधसे कांपती हुई द्रौपदीने बड़ी व्याकुलतासे भीम और अर्जुनसे कहा—हे वीर ! यदि मुझे प्यार करते हो, मुझे प्रसन्न रखना चाहते हो, तो उस नीचको जीता न छोड़ना। स्त्री और राज्यका हरण करनेवाला व्यक्ति यदि शरणमें आवे तो भी वह बधके योग्य है।

द्रौपदीकी बातें सुनकर भीम और अर्जुन बड़ी शीघ्रतासे जयद्रथको ढूंढ़नेके लिये दौड़े। इधर द्रौपदीको लेकर धौम्य ऋषिके साथ युधिष्ठिर आश्रमको लौट आये। द्रौपदीको सकुशल लौटते देख आश्रमवासी बड़े प्रसन्न हुए। उनकी चिन्ता दूर हो गयी। नकुल और सहदेवके साथ द्रौपदी कुटीमें चली गयी। युधिष्ठिर ब्राह्मण-मण्डलीमें बैठकर सब हाल कहने लगे।

जयद्रथ थोड़ी ही दूर गया होगा कि वायुके समान वेगसे दौड़ते हुए भीम और अर्जुन उसके पास जा पहुंचे। अर्जुनने अपने तीक्ष्ण वाणोंसे उसके घोड़ोंको मार गिराया। तब जयद्रथ रथसे उतर पैदल ही भागने लगा। यह देख भीम भी रथसे कूद पड़े और बड़ी तेजीसे उसका पीछा किया। किन्तु दयालु अर्जुनने कहा—"उसे मारना मत।"

भीमने कहा—रे क्षत्रियकुल-कलङ्क, क्या तुमने इसी साहसपर

द्रौपदीको हरना चाहा था ! नौकरोंको शत्रुके हाथ सौंप पीठ क्यों दिखा रहे हो ?

भीमके रोकनेपर भी वह न रुका । वह भागता ही चला गया । पर भीमने हवाके समान उसका पीछा किया । वे क्षण भरमें उसके पास पहुंच गये । इसके बाल पकड़ लिये । फिर उसको उठाकर जमीन पर चारों पांव चित्त पटक दिया और ऊपरसे लगे धड़ाधड़ मारने । उसने उठना चाहा, पर भीमने एक ऐसी लात उसके सिर पर जमायी और छाती पर दोनों घुटने इस तरह रख दिये कि वह मूर्छित हो गया ।

उसकी वह दशा देख अर्जुन बोले—भाई ! बहन दुःशला और माता गान्धारीके विषयमें धर्मराजने जो बात कही है, उसे न भूलना ।

भीम बोले—इस पापीने प्रिया द्रौपदीको बहुत सताया है । इसे तो मैं मार ही डालता पर तुम्हारे कहनेसे और धर्मराजकी आज्ञासे इसे जीता छोड़ता हूं । इस पापीके लिये उचित दण्ड यही था कि इसको यमलोक पहुंचा देता । यह कह भीमने धारदार अर्द्धचन्द्रबाण से उसका सिर मूड दिया और केवल पांच चोटियां रहने दीं । जब उसकी मूर्छा भङ्ग हुई तब भीम उसको धिक्कारते हुए बोले—रे अधम यदि तू जीनेकी लालसा रखता है तो तुझे सबके सामने मेरा दासत्व स्वीकार करना पड़ेगा ।

इस समय सिवाय इसके कि जयद्रथ भीमका दासत्व स्वीकार करे उसके लिये अन्य कोई गति न थी । अतः भीमकी बात उसको माननी पड़ी ।

उसको उन्होंने खूब कसकर बांधा और रथ पर चढ़ा लिया । इसके बाद धर्मराजके सामने उसको ले गये । युधिष्ठिरने हंसकर कहा हे भीम इसको प द ड मिल चुका । अब छोड दो ।

भीम बोले—महाराज ! यह मेरा दास है, अतः इसके सम्बन्ध में जो कुछ द्रौपदी कहेगी वही करूंगा ।

युधिष्ठिरने फिर कहा—हे भीम, यदि तुम मेरी बात मानना अपना कर्त्तव्य समझते हो तो उसे छोड़ दो ।

इस विषयमें धर्मराजकी उत्कण्ठा और भीमकी स्थिरता देख द्रौपदी बोली—जब इस अधर्मीने तुम्हारा दासत्व मान लिया है और पांच चोटियोंके सिवाय इसका सब सिर मूंड दिया गया है तब यह यथेष्ट दण्ड पा चुका । अब इसको अधिक दण्ड देनेकी आवश्यकता नहीं ।

द्रौपदीके कहनेसे जयद्रथके सब बन्धन खोल दिये गये । वह अत्यन्त विह्वल होकर सबके पैर पांवों गिर पड़ा—उसने सबके चरण छुए ।

धर्मराजने कहा—तुम दासत्वसे मुक्त हुए । अब कभी ऐसा नीच काम न करना । तुम अपने हाथी, घोड़े, सेना और सब कुछ लेकर अपने घरको लौट जाओ । ईश्वर तुम्हें सुबुद्धि दे जिससे सुमार्ग पर चलो ।

षष्ठ परिच्छेद ।
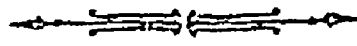
गुप्त परामर्श ।

प्रायः वनवासके बारह वर्ष बीत गये । अब पाण्डवोंको एक वर्ष अज्ञातवास बिताना है । इस वर्षमें यदि कौरवोंको उन लोगोंका पता चल गया तो फिर उनको बारह वर्ष वनमें बिताने पड़ेंगे । इसलिये पाण्डव लोग अज्ञातवासकी तैयारी करने लगे ।

वनवासी ब्राह्मणोंसे विदा लेकर पाण्डव अपने पुरोहित धौम्य ऋषिको लेकर एकान्त स्थानमें गये और वहां अपने अज्ञातवासके विषयमें सलाह करने लगे ।

युधिष्ठिर बोले—भाई ! अब हमको एक ऐसा रमणीक स्थान ढूंढ़ना चाहिये जहां हम लोग स्वतन्त्रतापूर्वक रह सकें और हमारे शत्रुओंको भी हम लोगोंका पता न चले ।

अर्जुनने कहा—महाराज ! कुरुमण्डलके चारों ओर पञ्चाल, मत्स्य आदि बहुतसे ऐसे राज्य हैं, जहांके राजा हमारे मित्र हैं, हम लोगोंसे बन्धुभाव रखते हैं, उनमेंसे किसी भी राज्यमें हम लोग गुप्त-भावसे रह सकते हैं, और परमात्मा चाहेगा तो शत्रुओंको भी पता न चलेगा ।

युधिष्ठिरने कहा—हे अर्जुन ! मैं इनमें मत्स्यराजको ही पसन्द करता हूं । हमारे पिता मत्स्यराजके मित्र थे । विराटनरेश हम [illegible] हैं वे बड़े धर्मात्मा और दानी हैं । उनके

यहां यदि हम लोगोंमेंसे प्रत्येक आदमी एक एक काममें नियुक्त हो जाय तो निःसन्देह हमारा एक वर्ष बेखटके बीत जायगा।

अर्जुनने कहा—हाय! आप सदा सुखमें पले हैं, आपने राज्य किया है, अब परवश आप कैसे रह सकेंगे? दूसरेका काम आप कैसे कर सकेंगे।

युधिष्ठिरने—कहा भाई घबड़ानेकी कोई बात नहीं। मैंने जो काम करनेका निश्चय किया है, उसे सुनो। मैं अपना नाम कङ्क रखूंगा। जुवाड़ी ब्राह्मणके वेशमें चौपड़, हाथीदांतकी गोटें और सुनहले पासे लेकर विराटराजकी सभाका सभासद बननेकी प्रार्थना करूंगा। यदि वे मेरा अधिक हाल जानना चाहेंगे तो मैं कहूंगा कि मैं राजा युधिष्ठिरका प्रिय मित्र था। इस कामसे बिना किसी कष्टके ही मैं राजाका मन बहला सकूंगा। भीम! अब तुम कहो कौनसा काम करके अपना दिन काटोगे?

भीमने कहा—हे धर्मराज! मैंने सोचा है कि मैं अपना नाम बल्लभ रखूं और अपनेको रसोइया बताऊं। इस विद्यामें मैं अति निपुण हूं। विराटराजके यहां जितने रसोइये हैं, उन सबसे उत्तम भोजन बनाकर मैं अवश्य ही राजाको प्रसन्न कर सकूंगा। इसके अतिरिक्त जब अखाड़ेमें मैं अपना बाहुबल दिखाऊंगा तब सभी मेरा आदर सत्कार करने लग जायंगे। यदि वे लोग मेरा विशेष हाल पूछेंगे तो मैं कहूंगा कि मैं युधिष्ठिरका रसोइया और पहलवान था। इस प्रकार मैं बिना किसी आपत्तिके समय बिता सकूंगा।

इसके बाद युधिष्ठिर अर्जुनकी ओर इशारा करके कहने लगे—जिस वीरका शरीर आगके समान दीप्त है, जिसकी भुजाओंपर धनुषकी प्रत्यञ्चाकी रगड़से चिन्ह बन गये हैं, वह अर्जुन कौनसा गुप्तवेश धरेगा?

अर्जुनने कहा—हे राजन्! आप यथार्थ कह रहे हैं। धनुष की डोरीके चिन्हवाली अपनी भुजाओं, युद्धके गर्वसे भरा अपना हट्टा कट्टा शरीर, छिपाना मेरे लिये सहज काम नहीं है। इसीसे मैंने सोच रखा है कि माथेपर वेणी धारण करूं, कानोंमें कुण्डल, और बाजूबन्दोंसे अपनी बांहोंके चिन्ह छिपा लूं। अपना नाम बृहन्नला रखूं और अपनेको नर्तक बताऊं। जब मैं इन्द्रलोकमें था, उस समय मैंने गाने बजाने और नाचनेका अच्छा अभ्यास कर लिया था। यदि मैं, स्त्रियोंको नाच गान सिखाऊं तो अवश्य वे मेरा आदर करेंगी। यदि वे मेरे विषयमें अधिक कुछ पूछेंगी तो मैं कहूंगा कि मैं युधिष्ठिरके यहां द्रौपदीकी सेवामें था। इस प्रकार राखमें छिपी हुई अग्निके समान मैं विराटके घरमें सुखसे रह सकूंगा।

युधिष्ठिरने नकुलसे पूछा—हे नकुल! तुम सुकुमार हो, तुम्हारी अवस्था सुख भोगनेके लायक है। तुमने कौनसा काम अपने लिये पसन्द किया है?

नकुलने कहा—महाराज! मैं घोड़ोंको बहुत चाहता हूं। उनको चाल सिखाने और उनकी दवा दारू करनेका मुझे अच्छा अभ्यास है। अतः मैं अपना नाम ग्रन्थिक रखूंगा और घोड़ोंके दारोगा बननेका प्रयत्न करूंगा। मैंने अपने लिये यही निश्चय किया है। इस कामसे राजाको मैं प्रसन्न भी कर सकूंगा। यदि वे मेरा विशेष हाल जानना चाहेंगे, तो मैं अपनेको राजा युधिष्ठिरके अस्त-बलका निरीक्षक बतलाऊंगा।

इसके बाद युधिष्ठिरने सहदेवसे पूछा,—हे भाई तुम अपने लिये कौनसा काम पसन्द करते हो?

सहदेवने कहा,—महाराज! जब आप मुझे गायोंकी देखभालके

लिये भेजते थे, उस समय गायोंका दुहना, उनका पालन करना, उनका शुभाशुभ लक्षण पहचानना मैंने सीख लिया था। इससे मेरे लिये आप विशेष चिन्ता न करें। मैं अपना नाम तन्त्रिपाल रखूंगा। *गायोंकी सेवा करके राजाको प्रसन्न करनेमें मैं अवश्य* सफल हूंगा।

सभीने तो अपना अपना काम पसंद कर लिया। अब रह गयी द्रौपदी, उसका समय कैसे कटेगा, यह सोच धर्मराज दुःखसे विह्वल हो उठे। वे कहने लगे,—भाई! हम लोग प्राणपणसे द्रौपदी का लालन पालन और सम्मान करते हैं। वह हम लोगोंको प्राणसे भी अधिक प्रिय है, उसको परसेवा करते हुए हम लोग कैसे देख सकेंगे? जन्मभर उसकी सेवा दूसरोंने की है। शृङ्गार करनेके अतिरिक्त उसने अपने हाथसे और कोई काम नहीं किया। इसलिये प्राणप्रिया द्रौपदी कौनसा काम करेगी?

द्रौपदीने कहा—महाराज! कङ्घी चोटी और अनेक प्रकारके शृङ्गार करनेके लिये राजाओंके यहां औरतें नौकर रहती हैं। मैं यह कहूंगी कि मैं द्रौपदीकी दासी थी, मेरा नाम सैरिन्ध्री है। मैं शृङ्गार करनेमें बड़ी चतुर हूं। मैं यह कह कर रानी सुदेष्णाकी नौकरी कर लूंगी। यह काम अनाथ और साध्वी स्त्रियों ही का है! ऐसा करना मैं अनुचित नहीं समझती। रानी अवश्य मेरा आदर करेंगी। आप मेरे लिये अधिक दुःख न करें।

युधिष्ठिरने कहा—हे प्रिये! तुमने उत्तम ही काम पसन्द किया है। इस तरहसे तुम्हारा भी समय कट ही जायगा।

इसके बाद युधिष्ठिर सबसे कहने लगे:—

यह तो निश्चय हो गया कि हम लोग कौन कौनसा काम करेंगे और किस प्रकार गुप्त रहेंगे। अब पुरोहित धौम्य, हमारे नौकर,

द्रौपदीकी दासियां आदि द्रुपदराजके यहां जाकर हम लोगोंके अज्ञात-वासकी समाप्तिकी प्रतीक्षा करें । इन्द्रसेन आदि सारथि खाली रथ लेकर द्वारिका चले जांय और उनकी रक्षा करें । किसीके पूछने पर सब लोग कह देंगे कि पाण्डव हम लोगोंको द्वैतवनमें छोड़कर कहीं चले गये ! वे कहां हैं, हमलोगोंको मालूम नहीं ।

पाण्डवोंके विदा होते समय पुरोहित धौम्यने स्नेहपूर्ण वाक्योंसे इस तरह उपदेश दिया:—हे पाण्डव ! लोक-व्यवहारकी बातें तो तुम लोगोंको मालूम हैं, पर यह नहीं जानते हो कि राजाके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये । चाहे तुम्हारा मान हो या अपमान, एक वर्ष तुम्हें राजभवनमें बिताना ही पड़ेगा । जैसे हो राजाको प्रसन्न रखना तुम्हारे लिये परम आवश्यक है । बिना पूछे राजाको किसी बातमें अपनी राय न देना । राजभवनकी छिपी बातें प्रकट न करना यदि कोई गुप्त बात मालूम भी हो जाय, तो उसे न कहना । राजा चाहे तुमपर कितना ही स्नेह रखे पर उसकी आज्ञा बिना कभी उसकी सवारी, पलङ्ग आदि पर न बैठना । अपनी मर्यादासे परे कोई काम न करना । राजसभामें उचित स्थानपर चुपचाप बैठना । हाथ पैर आदि न हिलाना, न जोरसे बोलना, राजा प्रसन्नता प्रकट करे तो अवश्य प्रसन्न होना । उसके अप्रसन्न होने पर भी किसी तरहका द्वेष न करना और न कुछ कहना । ऐसा करनेसे वह फिर प्रसन्न हो जायगा । राजाओंके अन्तःपुरमें बड़े बड़े खोटे काम होते हैं । अतः द्रौपदी पर गुप्तभावसे सदा निगाह रखना ।

युधिष्ठिरने कहा:—भगवन् ! ऐसा समयोपयोगी और हितकर उपदेश आपके सिवाय कोई नहीं दे सकता था । अब ऐसा अनुष्ठान करें जिससे हम लोगोंका मङ्गल हो ।

इसके बाद अग्निमें होम करके द्रौपदी सहित

प्रदक्षिणा कर चल दिये। इधर धौम्य ऋषि भी अग्निहोत्र लेकर पञ्चाल नगर आये और वहां उसकी रक्षा करने लगे। इन्द्रसेन आदि यादवोंके आश्रयमें गये।

पाण्डव केवल अस्त्रशस्त्र लेकर पैदलही मत्स्यराज्यकी ओर चल दिये। रात होनेपर कभी वे पहाड़की खोहमें विश्राम करते, कभी घने जङ्गलमें। धीरे धीरे वे मत्स्य देशमें जा पहुंचे। द्रौपदी बहुत थक गयी थी। अब उसके लिये एक पग भी चलना कठिन था। वह बोलीः—हे धर्मराज! मालूम होता है कि विराटनगर अभी बहुत दूर है। मैं बहुत थक गयी हूं। इसलिये आज यहीं बिताइये।

युधिष्ठिरने कहा—हे अर्जुन! तुम द्रौपदीको निबाह ले चलो। अब जङ्गल पार कर लिया है। अब राजधानीमें पहुंच कर ही ठहरना उचित है।

यह सुन अर्जुनने द्रौपदीको उठा लिया। जल्दी जल्दी चलकर विराटराजकी राजधानीके समीप उतार दिया। अब सब लोग मिल कर सलाह करने लगे कि नगरमें किस तरहसे प्रवेश करना चाहिये।

युधिष्ठिरने कहाः—हम लोगोंने गुप्तवेश धारण करनेका निश्चय किया है। अतः साथमें हथियार रखना उचित नहीं। अर्जुनके गाण्डीव धनुषको सभी पहचानते हैं। इसलिये हथियारोंको कहीं ऐसे सुरक्षित स्थानमें रखना चाहिये कि जहांसे कोई उठा न ले जाय।

अर्जुनने कहाः—महाराज! इस पहाड़ पर श्मशान है। वह एक शमीवृक्ष दिखाई देता है। उसपर आसानीसे कोई चढ़ नहीं सकता। यदि हम अपने हथियारोंको कपड़ेमें लपेट कर उसी शमीवृक्षके डाल पर रख दें, तो सुरक्षित रह सकते हैं, क्योंकि न तो कोई उसपर रखते हुए ही हम लोगोंको देख सकता है और न किसीके

ौर किस प्रकार गुप्त रहेंगे। अब पुरोहित धौम्य, हमारे नौकर,

वहां जानेकी सम्भावना ही जान पड़ती है। अर्जुनकी इस बातको सभीने पसन्द किया और अपने अपने हथियार रखनेको तैयार हुए। सबके हथियार एक कपड़ेमे लपेट कर बांध दिये गये और नकुलने शमीवृक्ष पर चढ़कर एक पत्तियोंसे ढकी हुई मजबूत डाल पर कपड़ेमें लपेटे हुए हथियारोंको बांध दिया। इसके बाद आस-पासके किसानोंसे उन लोगोंने कह दिया कि उस पेड़पर मुर्दा बंधा है। इससे उसके पास जानेका किसीको साहस भी न हुआ।

इसके बाद उन लोगोंने नगरमे प्रवेश किया। वहां प्रत्येकने अपने पसन्द किये हुए गुप्तवेशके उपयुक्त सामान इकट्ठा किया और अपना वेश बनाकर वे लोग राज-दरबारमें नौकरी ढूंढ़नेके लिये अलग अलग हो गये।

सप्तम-परिच्छेद ।

अज्ञातवास ।

—*०*—

सबसे पहले ब्राह्मण-वेशमें युधिष्ठिर विराटराजके दरबारमें पहुंचे वे बगलमें सुनहले पासे और चौपड़में लिपटी हुई गोटें दबाये हुए थे। आगके समान तेजस्वी युधिष्ठिरको देख विराटराज चौंक पड़े। वे विस्मित होकर अपने सभासदोंसे पूछने लगे—हे सभासद! अग्निके समान तेजस्वी ये ब्राह्मण कौन हैं? इनका अङ्ग राजाओंके समान शोभायमान हो रहा है। न तो इनके पास नौकर है, न सवारी है, कुछ भी नहीं है फिर भी ये राजाओंके समान निधड़क हमारे पास चले आ रहे हैं।

विराटराज अपने सभासदोंसे ये बातें कह ही रहे थे कि युधिष्ठिर उनके पास जा पहुंचे और बोले—महाराज! मैं ब्राह्मण हूं। अभाग्य-वश मेरा सब कुछ जाता रहा। मैं बहुत गरीब हो गया हूं। इससे नौकरीके लिये आपके पास आया हूं। यदि आज्ञा हो तो मैं यहां रहूं और आपकी इच्छानुसार काम किया करूं।

यधिष्ठिरको देख और उनकी मधुर बातें सुन राजा विराट बड़े खुश हुए। उन्होंने कहा—हे तात! आपको नमस्कार है। आप किस राज्यसे आये हैं? आपका शुभ नाम और गोत्र क्या है? आप किस विद्याके जानने वाले हैं?

युधिष्ठिरने कहा—महाराज! मैं व्याघ्रपदी गोत्रका ब्राह्मण हूं। मेरा नाम कङ्क है। मैं जुवा खेलनेमें बड़ा चतुर हूं। मैं पहले

उसपर रखते हुए ही हम लोगोंको देख सकता है और हमारे नौकर,

युधिष्ठिरका प्रिय मित्र था। मैं अपनी विद्या द्वारा सदा उनको प्रसन्न रखता था।

विराटने कहा—महाराज! मैं द्यूत-विद्यामें निपुण मनुष्यको बहुत चाहता हूं। आजसे आप मेरे मित्र हुए। आप मेरे साथ रहिये और यहां ही काम काज देखिये। आप नीच कामके पात्र नहीं हैं।

युधिष्ठिरने कहा—महाराज! आपकी वातें मुझे स्वीकृत हैं। केवल यही एक प्रार्थना है कि मुझे किसी नीच और कपटी पुरुषके साथ जुवा न खेलना पड़े।

युधिष्ठिरकी इस वातको विराटने मान लिया। उन्होंने सवको सुनाकर कहा—आपके साथ जो कोई अन्याय करेगा वह अवश्य दण्ड-भागी होगा। मैं नगर-निवासियोंको सुनाकर कहता हूं कि आजसे इस राज्यमें मेरे ही समान आपकी प्रभुता होगी। जो कोई इसके विरुद्धाचरण करेगा वह दण्ड पावेगा।

युधिष्ठिरको राजाने अपने यहां रख लिया। इस आदरसे नौकरी पाकर उनका समय सुखसे वीतने लगा।

भीम भी रसोइयेका वेश धारण कर राज-सभामें आये। वे काले वस्त्र पहने हुए थे, हाथमें उनके काली छुरी और भोजन वनानेका सामान था। उनको देखकर विराटराज बोले—यह सुन्दर अङ्गों और ऊंचे कन्धेवाला युवा पुरुष कौन है? ऐसे पुरुषको मैंने पहले कभी नहीं देखा था। देखो, कोई जल्दी जाकर पूछो, यह क्या चाहता है?

राजाकी आज्ञा पाकर सभासद लोग वड़ी शीघ्रतासे भीमके पास गये और उनसे सव वातें पूछीं। भीमसेन दीनभावसे राजाके सामने आकर बोले—महाराज! मैं पाक-विद्याका पण्डित हूं। मुझे लोग वल्लभ कहते हैं। कृपाकर आप मुझे अपने यहांके रसोईदारके पदपर नियुक्त करें।

विराटने कहा—हे सौम्य ! देखनेसे तुम साधारण रसोइया नहीं मालूम होते हो । तुम्हारे अङ्ग अङ्ग कह रहे हैं कि तुम राजा बनने योग्य हो ।

भीमने कहा—महाराज ! पहले मैं राजा युधिष्ठिरके यहां रसोईदार था । मेरे बनाये हुए भोजनसे वे बड़े प्रसन्न होते थे । मैं उनके यहां केवल रसोईदार ही नहीं था, किन्तु उनके अखाड़ेका पहलवान भी था । मैं कुश्ती लड़नेमें भी बड़ा होशियार हूं । इसलिये मुझे विश्वास है कि आप मेरे कामोंसे अवश्य प्रसन्न होंगे ।

राजाने कहा—बल्लभ ! मेरी समझमें तुम इस कार्यके पात्र नहीं हो, पर तुम्हारी इच्छा मैं पूर्ण करता हूं । तुमको मैंने अपने प्रधान रसोईयाके पदपर नियुक्त किया ।

इस प्रकार भीमको भी मनमाना काम मिल गया । किसीको उनपर सन्देह भी न हुआ । उनका भी समय सुखसे कटने लगा ।

इसके बाद मधुर भाषिणी द्रौपदी राजभवनकी ओर चली । वह एक मैला वस्त्र पहने हुई थी । सैरिन्ध्रीकी तरह बड़ी दीनतासे वह मार्गमें चली जा रही थी । पर उसकी अलौकिक सुन्दरता देखनेवालेको विस्मित कर देती थी । नगरनिवासी स्त्री-पुरुषोंको उसे देख बड़ा ही कौतूहल हुआ । एक एक कर सब पूछने लगे—तुम कौन हो ? कहांकी रहनेवाली हो ? कहां जाओगी ? क्या चाहती हो ?

द्रौपदी सबको यही उत्तर देती थी कि मैं सैरिन्ध्री हूं । मैं सिंगार करनेमें बड़ी चतुर हूं । जो कोई मुझे नौकर रखेगा उसको मैं अपने कामसे प्रसन्न कर दूंगी ।

विराटराजकी रानी सुदेष्णा महलके ऊपरसे इधर उधर देख रही थी । उसकी निगाह द्रौपदी पर पड़ी । [illegible]

खते हुए ही हम लोगोंको देख सकता है, हमारे नौकर,

सैरन्ध्रीके रूपमें द्रौपदीका दासी-कार्य ।

मैले-कुचैले कपड़े पहननेपर भी बड़ी सुन्दर है। उसने उसको अपने पास बुलाया और कहा—हे सुन्दरी ! तुम कौन हो और क्या चाहती हो ?

द्रौपदीने कहा—मेरा नाम सैरिन्ध्री है। मैं सिंगार-विद्यामें बड़ी चतुर हूं। मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे अपने यहां इस कामके लिये रख लें।

सुदेष्णाने कहा—मैं तुमको अपनी सखी बनाना चाहती हूं। पर तुम्हारी सुन्दरताको देख मुझे डर लगता है कि कहीं राजघरानेके लोग तुम्हें देख चञ्चल होकर कोई तुम्हारा अनिष्ट न कर बैठें, और कोई बात नहीं मैं केवल इसी बातसे डरती हूं।

द्रौपदीने कहा—हे रानी ! मेरे पति महाप्रतापी पांच गंधर्व हैं। अतः मेरा अपमान कोई नहीं कर सकता। ऐसा कौन होगा जो यह जानकर भी मेरे लिये मनमें बुरा विचार लावेगा। इसलिये आप किसी बातकी चिन्ता न करें। बेखटके मुझे नौकर रख लीजिये। मैं श्रीकृष्णकी स्त्री सत्यभामा और पाण्डव-पत्नी द्रौपदीकी सेवा कर चुकी हूं। मैं बाल संवारनेमें, उबटन लगानेमें और रङ्ग-विरङ्गे हार गूंथनेमें बड़ी चतुर हूं। आपसे मेरा एक और नम्र-निवेदन है कि मुझे जूठी चीज न छूनी पड़े और न किसीका पैर धोना पड़े ऐसी व्यवस्था कर दें।

रानीने द्रौपदीकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। उसको अपने यहां रख लिया। इसके बाद उसको उपयुक्त वस्त्र और गहने भी दिये। अब द्रौपदी भी अपने मनके अनुसार काम पाकर बड़ी प्रसन्न हुई।

इसके बाद सहदेव आये। उनका वेश ग्वालोंका सा था और बोली भी उन्हीं की सी। राजमहलसे मिली हुई गोशालाके पास आकर वे खड़े हो गये। उनके तेज और ग्वालेका वेश देख राजा

बड़े विस्मित हुए। उन्होंने उनको अपने पास बुलवाया और पूछा—मैंने इसके पहले तुमको कभी नहीं देखा है। तुम किसके लड़के हो? तुम्हारा नाम क्या है और तुम कहांके रहने वाले हो? ये सब बातें मैं जानना चाहता हूं।

सहदेवने कहा—मैं ज़ातिका वैश्य हूं। मेरा नाम तन्त्रिपाल है। मैं पहले राजा युधिष्ठिरकी गोशालामें नौकर था। उनकी गायोंकी देख रेख किया करता था। अब वही काम पानेके लिये आपसे प्रार्थना करने आया हूं।

सहदेवके शरीरकी बनावट और सुघराई देख राजा विराट, बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा—आजसे मैंने तुमको अपनी सारी पशु-शालाका अध्यक्ष नियत किया। तुम जो वेतन मांगो वही मिलेगा।

यह कह राजाने सहदेवको मुंह मांगा वेतन देनेके लिये मन्त्रीको आज्ञा दे दी। इस प्रकार आदर सहित नौकरी पाकर सहदेवका भी समय सुखसे कटने लगा।

इसके बाद अर्जुन आये। उनका वेश विचित्र था। उन्होंने अपना रूप नाचनेवाली स्त्रीकी तरह बनाया था। कानमें कुण्डल, हाथमें कड़े और शङ्ख धारण किये हुए थे। उनके शरीरकी ऊंचाई और गठीलापन और स्त्रीवेश देख लोग बड़े आश्चर्यमें पड़ गये। राजाने अपने सभासदोंसे पूछा—ये कौन हैं? कहांसे आ रहे हैं? यह विचित्र मूर्त्ति है! ऐसी मूर्त्ति तो मैंने कभी नहीं देखी थी। सभासदोंने कहा—हम लोगोंकी समझमें नहीं आता कि ये हैं कौन?

इतनेमें अर्जुन विराटराजके पास पहुंचे। राजाने पूछा—तुम कौन हो? तुम्हारा बलवीर्य तो पुरुषोंका सा है, पर वेश स्त्री का! यह देख मैं बड़ा विस्मित हूं। तुम अपना हाल शीघ्र बताओ यथार्थ में तुम कौन हो?

अर्जुनने कहा—महाराज! मेरा नाम बृहन्नला है। मैं युधिष्ठिर के अन्तःपुरमें नौकर था। मैं नाच गाकर स्त्रियोंका मन वहलाया करता था और उनको नाचने गानेकी शिक्षा भी देता था। मैं इस विद्यामें बड़ा चतुर हूं। मेरे मां बाप वचपन ही में स्वर्ग सिधार गये। अव मेरा अपना और कोई नहीं है। इसलिये मेरी प्रार्थना है कि आप अपना लड़का समझ मुझे उत्तराको नाचगान सिखानेकी आज्ञा दीजिये।

राजाने कहा—बृहन्नला! मैं तुम्हारी प्रार्थनाको स्वीकार करता हूं। तुम मेरी कन्या उत्तरा और अन्तःपुरकी अन्य स्त्रियों तथा नगरकी दूसरी स्त्रियोंको नाचना गाना सिखाया करो। इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं।

राजाकी आज्ञा पाकर अर्जुन अन्तःपुरमें गये और उत्तराकी नृत्य-विद्याके शिक्षक नियुक्त हुए। राजकुमारी उत्तरा उनको पिताके समान मानने लगी। धीरे धीरे अन्तःपुरकी सभी स्त्रियां उनको प्यार करने लगीं। अर्जुन राजमहलमें ही रहने लगे। वाहर आने की कोई जरूरत ही नहीं थी। इस वातका भय भी न रहा कि उन्हें कोई पहचान लेगा।

इसके वाद नकुल भी आये। वे अस्तवलके घोड़ोंको देख रहे थे। इसी समय राजाकी निगाह उनपर पड़ी। राजाने उनको अश्वविद्याका जाननेवाला समझकर नौकरोंको आज्ञा दी कि उस असाधारण कान्तिवाले पुरुषको मेरे सामने ले आओ।

राजाकी आज्ञा सुनकर नकुलने उनके पास आकर कहा—महाराजका मङ्गल हो। मै अश्वविद्याका वहुत अच्छा ज्ञाता हूं। इसके पहले मैं राजा युधिष्ठिरकी अश्वशालामे नौकर था। अव आपसे मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे अपनी घुड़शालमे नौकर रख लें।

ग्नेष्णाके पास फिर गया और कहने लगा,—"हे वहन! याद तुम

राजाने कहा—तुम मेरे अश्वपाल होनेके योग्य हो। मैंने बड़ी प्रसन्नतासे तुमको अपनी अश्वशालाका अध्यक्ष नियुक्त किया। आजसे सब सवारियोंका मालिक मैंने तुमको बनाया।

इस प्रकार पाण्डवोंको मनमानी नौकरी मिल गयी। एक ही स्थानमें वे छिपे छिपे सुखसे रहने लगे। राजा भी उनके कामोंसे सदा प्रसन्न रहते थे। इस प्रकार उन लोगोंके दिन बीतने लगे। इसी प्रकार पाण्डवोंके अज्ञातवासके तीन महीने बीत गये। चौथा महीना आरम्भ हुआ। इसी महीनेमें मत्स्यनगरमें एक बड़ा भारी उत्सव मनाया गया। इस उत्सवमें बड़े बड़े पहलवान आये। उन्होंने अपने अपने बलकी परीक्षा दी। उनमें सबसे बड़ा भारी एक मोटा ताजा पहलवान था। उसने सबको हरा दिया और अखाड़ेमें तालियां ठोंक ठोंक कर लोगोंको ललकारने लगा। पर उसके साथ लड़नेका साहस किसीको न हुआ। यह देख राजाको बहुत ही गुस्सा आया पर कर ही क्या सकते थे।

इतनेमें भीमकी बात याद आ गयी। उन्होंने भीमको लड़नेके लिये कहा। पर भीम लड़ना नहीं चाहते थे, क्योंकि वे डरते थे कि मेरे बाहुबलको देख लोग पहचान न लें। पर राजाका कहना न मानना भी उचित नहीं यह सोच धर्मराजकी ओर देखने लगे। अन्तमें उन्होंने लड़ना ही निश्चय किया।

राजाको प्रणाम करके वे अखाड़ेमें उतर आये। उनका हट्टा कट्टा शरीर देख कर लोग बड़े प्रसन्न हुए। इसके बाद उस पहलवान-से द्वन्द्व-युद्ध होने लगा।

वे आपसमें एक दूसरेको पछाड़नेका उपाय ढूंढ़ने लगे। कभी वे घूंसे मारते, कभी पैरसे ठोकर मारते, कभी सिरसे सिर लड़ा देते थे। इस प्रकार घोर युद्ध होने लगा। अन्तमें भीमने एक

ऐसा दांव लगा कि वह जमीन पर गिर कर चूर चूर हो गया। दर्शकोंने भीमकी बड़ी प्रशंसा की।

भीमकी वीरता देख राजा बड़े ही प्रसन्न हुए। राजाने बहुमूल्य वस्तुएं उनको पारितोषिकमें दीं। उस दिनसे क्या राजा क्या प्रजा सभी भीमको आदरकी दृष्टिसे देखने लगे।

इस घटनाके बादसे राजा विराट, भीमको कभी कभी मनोरञ्जनके लिये बाघ आदि हिंसक जन्तुओंसे भी लड़वाया करते थे। इस तमाशेको देखनेके लिये अन्तःपुरकी स्त्रियां भी आती थीं। उनमें द्रौपदीको भी आना पड़ता था। वह भीमको हिंसक जन्तुओंसे लड़ते देख डरती थी कि कहीं उनको कुछ हो न जाय। इससे उसका मन बड़ा व्याकुल होता था। उसका यह भाव कभी कभी प्रकट भी हो जाता था। इससे लोग समझते थे कि वह रसोइये पर आसक्त है। इस कारण बहुधा उसको व्यङ्ग-वचनोंकी बौछार भी सहनी पड़ती थी, इससे उसको बड़ा कष्ट होता था।

अष्टम-परिच्छेद ।

कीचक-वध

—:००:—

द्रौपदीके कष्टका अभी ठिकाना नहीं। इधर अपने पति-पाण्डवोंको परसेवा करते देख जो कष्ट होता था सो तो था ही। इसके अलावा एक ऐसी घटना हुई जिससे उसका दुःख और भी बढ़ गया। रानी सुदेष्णाका कीचक नामका एक भाई था। वह बड़ा बली था। वह राजाका सेनापति था। वह और उसके भाई बन्धु ही राजदरबारमें भरे थे। वे बड़े बली थे, योद्धा थे। उनके बिना राज्यकी रक्षा होनी भी असम्भव थी, इसलिये राजा स्वयं उनसे डरा करते थे। वे जो चाहते थे वही करते थे। उनके सामने किसीका कुछ बस न था।

एक दिन कीचककी निगाह द्रौपदी पर पड़ी। उसकी अलौकिक सुन्दरताको देख वह मोहित हो गया। उसने अपनी बहनके पास जाकर कहा—इस सुन्दरीको अन्तःपुरमें पहले मैंने कभी नहीं देखा। इसको देखनेसे मेरा चित्त चञ्चल हो रहा है। इसने मेरे मनको अपने वशमें कर लिया है। मैं इसके साथ अपना विवाह करना चाहता हूं। इसलिये मैं तुमसे कहता हूं कि इसके साथ मेरा विवाह करवा दो।

ये बातें बहनसे कहकर वह स्वयं द्रौपदीके पास गया और कहने लगा—हे सुन्दरी ! ईश्वरने तुमको सौन्दर्य, परसेवाके लिये नहीं दिया है। तुम इस योग्य नहीं हो कि दूसरोंकी सेवा करो। तुम

खते हुए हीं हम लागाका

दूसरोंसे सेवा कराने योग्य हो। तुम दूसरोंकी सेवा क्यों करती हो? इससे यह बहुत ही अच्छा है कि तुम मेरे साथ विवाह करलो, मेरी स्वामिनी बनो। हे कमलाक्षी! मेरी जितनी स्त्रियां हैं उन सबको मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूंगा। वे सब तुम्हारी दासी बन कर रहेंगी। मैं तुम्हारा दास होकर तुम्हारी सेवा करूंगा।

द्रौपदीने कहा :—हे सेनापति! मैं नीच वंशमें उत्पन्न हुई हूं। मैं आपके द्वारा देखी जाने योग्य भी नहीं हूं। इसके अतिरिक्त मैं दूसरेकी स्त्री हूं। इसलिये धर्मका विचार कर ऐसी बातें आप कभी न कहियेगा।

पर कीचकका मन अपने काबूमें न था। उसको धर्माधर्मका विचार कहां? वह द्रौपदी पर अपनेको निछावर कर चुका था। यह जान कर भी कि यह परायेकी स्त्री है, उसने फिर कहा :—हे सुन्दरी! मेरा मन अपने वशमें नहीं, मैं तो तुमपर मोहित हो चुका हूं। मेरा मन तुम्हारे वशमें है। मैं अपनेको तुम्हारा सेवक बना चुका हूं। अब तुमको उचित नहीं कि मेरी बात टालो। ऐसे पतिकी स्त्री बननेसे क्या लाभ, जो तुमसे दासीका काम करवाता है। ऐसे पतिको छोड़ कर महान् ऐश्वर्यकी अधिकारिणी बनो।

यह सुन द्रौपदीके सारे शरीरमें आग सी जल उठी। उसने क्रुद्ध होकर कहा—हे सारथि पुत्र! अपनी होश संभालो। तुम्हें मालूम नहीं कि मैं महाबली गन्धर्वोंकी स्त्री हूं। उनके क्रुद्ध होने पर तुम्हारा बचना असम्भव है। मेरे पानेकी अभिलाषा अपने मनसे दूर कर दो। यदि जीना चाहते हो तो सुमार्ग पर चलो।

द्रौपदीकी ये फटकार भरी बातें सुनकर और कुछ कहनेकी हिम्मत उसे न पड़ी। अपनेको असफल मनोरथ देख वह अपनी बहन सुदेष्णाके पास फिर गया और कहने लगा,—"हे बहन! यदि तुम

चाहती हो कि मैं जीता रहूं तो इस रूपवती स्त्रीको मेरे वशमें कर दो। ऐसा प्रयत्न करो कि यह मुझसे राजी हो जाय, नहीं तो मैं अपना प्राण दे दूंगा। उसको बिना पाये मेरा प्राण बचना कठिन है।" भाईकी ये बातें सुन रानीको दया आ गयी। उसने कहा,—"हे कीचक! मैं एक उपाय बताये देती हूं। त्यौहारके दिन मैं उसको तुम्हारे घरसे मद्य आदि सामान लानेके लिये भेजूंगी। उस समय उसको एकान्तमें पाकर तुम अपने मनके अनुसार बातें करके अपने वशमें कर लेना।"

इस बातसे कीचकको कुछ शान्ति मिली। उसने अपने घर राजाओंके पीने योग्य बढ़िया शराब तैयार की और रानीके पास इसकी खबर भेज दी।

रानीने द्रौपदीको बुलाकर कहा,—"सैरिन्ध्री मुझे बड़ी प्यास लगी है। तू कीचकके घर चली जा और वहांसे उत्तम मद्य ले आ।"

द्रौपदीने कहा,—"हे रानी! मैं कीचकके घर नहीं जा सकती। वह कितना निर्लज्ज है यह बात मुझे मालूम है। मैंने आपसे पहले ही कहा है कि मैं अपमानित होकर आपके यहां न रहूंगी। इसलिये आप किसी औरको भेजें।"

रानीने कहा—हे सुन्दरी! मैं तुम्हें भेज रही हूं। कीचक तुम्हारा अपमान क्यों करेगा? यह कह उसने वस्त्रसे ढका हुआ एक सोनेका प्याला द्रौपदीके हाथमें दिया। लाचार होकर द्रौपदीको जाना पड़ा।

व्याधसे त्रसित चौकन्ने हिरनके समान द्रौपदी कीचकके घरके पास गयी। उसके नेत्रोंसे आंसू गिर रहे थे। उसको आते देख कीचक बड़ा प्रसन्न हुआ। वह कहने लगा—प्रिये! तुम्हारे आनेसे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। इस आनन्दका मैं वर्णन नहीं कर सकता।

आज मेरा अहोभाग्य है कि तुम्हारे दर्शन मिले। यह घड़ी मेरे लिये बड़ी शुभदायक है।

कीचककी नीचता द्रौपदीको पहले ही मालूम थी। वह इसका कुछ उत्तर न दे सकी। भयसे कांपती हुई बोली—रानी बड़ी प्यासी हैं, उन्होंने मुझे शरावके लिये भेजा है। मैं उसीके लिये आयी हूं।

कीचक मुस्कराकर बोला—रानीके लिये कोई दूसरा शराब ले जायगा। आओ, तुम मेरे पास बैठो। यह कह उसने द्रौपदीका दाहिना हाथ पकड़ लिया। द्रौपदी आर्त्तस्वरसे चिल्लाकर कहने लगी—अरे नीच! यदि मैंने मनसे भी अपने पतियोंका कभी निरादर न किया होगा, स्वप्नमें भी पर-पुरुषको न देखा होगा, तो उस पुण्यके प्रभावसे मेरी रक्षा हो।

कीचकने इसपर कुछ ध्यान न दिया। उसने द्रौपदीकी चादर पकड़ ली। इससे द्रौपदी मारे क्रोधके जल उठी। उसने बड़े जोरसे झटका देकर अपना कपड़ा खींच लिया। इस झटकेसे कीचक जमीनपर गिर पड़ा। यह मौका पाकर वह दौड़ कर राजसभाकी ओर जाने लगी। गिरने और अपमानित होनेसे कीचक बड़ा क्रुद्ध हुआ। वह क्रोधसे अन्धा होकर द्रौपदीके पीछे दौड़ा। द्रौपदी सभामें पहुंच गयी थी। इधर कीचक भी उसी समय पहुंचा। द्रौपदीके उसने बाल पकड़ कर खींचे और भरी सभामें उसे लात मारी। इसके बाद वह वहांसे चला गया।

उस समय भीम भी सभामें थे। द्रौपदीका यह अपमान होते देख उनपर वज्रसा टूट पड़ा। उनकी आंखें रक्तवर्ण होगयीं। क्रोधसे वे दांत पीसने लगे और कीचकको इस पापका दण्ड देनेके लिये

लिये तैयार हुए। यह देख युधिष्ठिर डरे कि कहीं हमलोग पहचान

—कौरवोंकी सभा और ... जो ... मैंने ... हैं

न लिये जांय। इसलिये भीमको सावधान करनेके लिये उन्होंने संकेतसे कहा—हे सूत! क्या तुम लकड़ीके लिये वृक्ष देख रहे हो, यदि तुम्हें लकड़ीकी आवश्यकता हो, तो बाहरके वृक्षोंसे ले लेना।

उस समय द्रौपदीने पतियों और विराटराजकी ओर ऐसे देखा मानो उन्हें भस्म करना ही चाहती है। वह बोली—हाय! आज मुझे मालूम हुआ कि मत्स्यराज बड़े अधर्मी हैं। एक निर्दोष स्त्रीको मार खाते देखकर भी चुप रह गये। जब राजा ही के यहां न्याय नहीं, राजा एक अबला पर अन्याय होते हुए देख भी चुप है, तो मैं और किसके पास न्यायके लिये प्रार्थना करूं?

विराटने कहा—मैं तुम लोगोंके झगड़ेका पूरा पूरा हाल नहीं जानता, विना जाने कैसे विचार कर सकता हूं? बिना जाने-बूझे मैं क्या न्याय करूं?

इसी प्रकार सभासदोंमेंसे कोई कीचककी निन्दा और कोई द्रौपदीकी प्रशंसा करने लगा।

प्राणसे प्यारी द्रौपदीका अपमान होते देख युधिष्ठिरके माथेसे पसीना बहने लगा। पर लाचारी थी। बड़े ही कष्टसे अपने क्रोध को उन्होंने दबाया। तिरस्कारके बहाने द्रौपदीको उपदेश देते हुए बोले—हे सैरिन्ध्री! अब अधिक देर यहां न ठहरो। तुम रानीके भवनमें चली जाओ। तुम साधारण स्त्रियोंके समान राजसभामें क्यों रो रही हो? तुम्हारे रक्षक गन्धर्व सुयोग पाते ही तुम्हारे शत्रुओंका संहार करेंगे। तुम क्यों अधिक दुःख सह रही हो?

यह सुन क्रोधसे रक्तवर्ण नेत्रवाली द्रौपदी, रानीके भवनमें चली गयी। उसको बेहद क्रोधित देखकर रानीने पूछाः—हे सुन्दरी! तुम क्यों रो रही हो? क्या किसीने तुम्हें सताया है?

द्रौपदीसे सब वृत्तान्त सुनकर रानी सुदेष्णा क्रोधसे जल उठीं।

वे कहने लगीं—मेरी आश्रिता स्त्रीके साथ ऐसा बुरा वर्त्ताव ! कीचक की ऐसी उद्दण्डता ! कहो उसे क्या दण्ड दिया जाय ?

द्रौपदीने कहा—मेरे अपमानसे मेरे पति गन्धर्वोंका जो अपमान हुआ है, वे ही उस नीचको समय पाकर उचित दण्ड देंगे ।

इसके बाद द्रौपदी अपने घर चली गयी, वहां जाकर उसने स्नान किया और वस्त्रोंको धोया । कीचकके इस अपमानसे उसका हृदय जल रहा था । वह मन ही मन कीचककी मृत्यु-कामना कर रही थी । उसके नेत्रोंसे अश्रुधारा बह रही थी और वह सोच रही थी कि इस समय क्या करना चाहिये । अन्तमें उसे एक बात सूझी और वही बात करनेका उसने निश्चय किया । अपने उद्देश्यकी सिद्धिके लिये रातको वह भीमके घर गयी । भीम सो रहे थे । उनके शरीरसे वह ऐसे लिपट गयी, जैसे शालके बड़े बड़े वृक्षोंसे लता लिपट जाती है । वह वीणाके समान मधुर स्वरसे कहने लगी—हे नाथ ! बड़े आश्चर्यकी बात है । मालूम होता है कि तुम सदाके लिये सो गये हो, यदि ऐसा न होता, तो तुम्हारे जीतेजी तुम्हारी स्त्रीका अपमान करनेवाला दुष्ट कीचक, अबतक क्यों जीता रहता ? कभीका वह यमलोकको पहुंच गया होता ।

द्रौपदीकी ये बातें सुनकर भीम उठ बैठे और कहने लगे:—तुम इस समय मेरे पास क्यों आयी हो ? तुम्हारा शरीर इतना क्यों कृश हो गया है ? तुम इतनी दुःखी क्यों हो ? तुम अपना हाल शीघ्र कहो और किसीके जागनेके पहले अपने घर चली जाओ । मैं अवश्य तुम्हारा दुःख दूर करूंगा ।

द्रौपदी बोली—हे आर्य ! जिसके पति राजा युधिष्ठिर हों, उसको सुख कहां ? तुम भी मेरे दुःखोंको जानकर ऐसा क्यों पूछ रहे हो ? कौरवोंकी सभा और वनवासमें जो [illegible] मैंने भोगे हैं

कोई अन्य राजकुमारी इतने दुःखोंको भोगकर क्या जीवित रह सकती थी? भरी सभामें दुष्ट कीचकने मुझे लात मारी। तब भी तुम मेरे दुःखोंको दूर नहीं करते हो तो मैं जीकर ही क्या करूंगी?

भीमने कहा—प्रिये! यथार्थमें तुमको वहुत दुःख सहना पड़ा। मेरे वाहुवल और अर्जुनके गाण्डीव धनुपको धिक्कार है! जिस समय भरी सभामें दुष्ट कीचकने ऐश्वर्यके मदमें आकर तुम्हारा अपमान किया था, उसी समय मैं अपने पदाघातसे उसका सिर चूर चूर कर देता, सारे मत्स्यराजको धूलमें मिला देता! पर महाराज युधिष्ठिरने इशारेसे मुझे ऐसा करनेसे रोक दिया। क्या कहूं धर्मराज समयानुसार ही काम करना अच्छा समझते हैं। पर तुम्हें जो दुःख हो रहा है, तुम्हें जो अपमान सहने पड़े हैं, वे कांटेके समान मेरे हृदयमें चुभ रहे हैं।

द्रौपदीने कहा—यदि तुम्हें मेरे साथ किये गये बुरे वर्तावसे कष्ट हो रहा है, तो तुम अपने जुवारी भाईका कहना न मानो। यदि धनसे प्रति दिन सुवह शाम धर्मराज जुवा खेलते तो वर्षोंमें भी हमारा इतना बड़ा कोष खाली न होता! जुवा खेलनेका ऐसा शौक किसको होगा कि अपने भाई और स्त्रीको भी दांवपर रख दे! उन्होंने एक वार इसका वुरा फल भोग कर भी फिर वनवास जानेकी प्रतिज्ञाको दांव पर रखा! जुवेके नशेमें चूर होकर उन्मत्तके समान उन्होंने सब कुछ गंवा दिया! आर्य, कुन्तीको छोड़ मैंने किसीकी सेवा नहीं की थी। किन्तु आज मुझको सुदेष्णाके पीछे पीछे घूमना पड़ता है। उसके लिये चन्दन रगड़ती हूं। कौरवोंके घरमें मैं किसीका भी डर नहीं करती थी, पर आज दासी होकर विराटसे बेहद डरा करती हूं। चन्दन अच्छी तरह घिसा गया है या नहीं, कहीं राजा अप्रसन्न तो न होंगे। इन शङ्काओंसे मैं थर-थर कांपा करती हूं।

ही घिसा हुआ चन्दन पसन्द करते हैं। दूसरेका घिसा चन्दन वे पसन्द ही नहीं करते। इसीसे मुझे और भी डर बना रहता है।

इस प्रकार द्रौपदी अपने दुखोंको भीमसे वर्णन कर उनकी ओर देख कर रोने लगी। उसके करुणापूर्ण रुदनसे भीमका हृदय टूक टूक होने लगा। इसके बाद उसने ठण्डी सांस भर कर फिर कहा—मैंने पूर्व जन्ममें देवताओंका बड़ा भारी अपराध किया था। इसीसे इतने दुःखोंको भोग कर भी मैं जीती हूं।

भीमने द्रौपदीके दोनों हाथ पकड़ लिये और उसके बहते हुए आंसुओंको पोंछ कर कहा—प्रिये! अब और कुछ न कहो, धर्मराजका तिरस्कार जो तुमने किया है, वे सुन पावेंगे तो अवश्य प्राण त्याग देंगे। उनके प्राण त्यागनेपर अर्जुन, नकुल, सहदेव कोई भी जीवित न रहेंगे। उन लोगोंके बिना मैं भी जीवन धारण न कर सकूंगा।

द्रौपदी बोली—हे नाथ, मैंने धर्मराजका तिरस्कार नहीं किया है। बात यह है कि—दारुण दुःखके कारण मेरी अश्रुधाराका वेग नहीं रुकता था। जो हो, बीती बातोंके कहनेसे लाभ ही क्या? उनका कहना व्यर्थ है। दुःख सदा बना नहीं रहता। उसका भी अन्त होता है। यह सोचकर मैं भी तुम्हारे समान समयकी प्रतीक्षा करूंगी। पर इस समय जो कर्त्तव्य हो उसे करो। कामान्ध कीचक सदा ही मुझसे न कहने योग्य बातें कहा करता है और उसके लिये मेरा अपमान किया करता है। यह मैं कैसे सहन करूं? उस नीचने तुम लोगोंके सामने ही मुझे लात मारी है। अधिक और क्या कहूं, यदि कल सुबह तक वह जीता बचा तो मुझको विष खाकर प्राण छोड़ना पड़ेगा! इतना कह कर द्रौपदी भीमकी छाती पर अपना मुंह रख कर अश्रुधारासे उनके वक्षस्थलको भिगोने लगी।

भीमने द्रौपदीको हृदयसे लगा लिया और उसके आंसुओंको पोंछ कर धीरज दिया। इसके बाद उन्होंने कीचक पर अत्यन्त क्रोध करके अपने होठोंको दांतसे चबाते हुए कहा---प्रिये ! अधिक दुःख न करो, तुमने जो कुछ कहा, मैं वह अवश्य करूंगा। तुम रातको किसी बहाने उस पापीको निर्जन नाट्यशालामें लिवा जाना। उस पापीको मैं वहां उचित दण्ड दूंगा, उसकी करनीका फल चखाऊंगा। पर उसके साथ जो तुम बातचीत करो इसका पता किसीको न लगने पावे इस बातका खयाल रखना।

भीमकी सान्त्वनासे द्रौपदीको धीरज हुआ। वह अपने घर लौट आयी और कीचकको फंसानेका उपाय सोचने लगी। भीम भी बड़ी धीरतासे समयकी प्रतीक्षा करने लगे।

दूसरे दिन कीचक द्रौपदीके पास फिर आया और कहने लगा—हे सुन्दरी ! देखो जब मैंने तुम पर क्रोध किया तब विराट भी तुम्हारी रक्षा न कर सके। वे तो नाम मात्रके मत्स्य-देशके राजा हैं, राज्य तो मैं ही करता हूं। इस देश पर पूर्ण अधिकार मेरा है। यदि तुम मुझे चाहने लगो तो मैं स्वयं तुम्हारा दास बना रहूं। अतः मेरी बात मान लो।

द्रौपदी इस ढङ्गसे बोली मानो वह कुछ कुछ राजी हो गयी है। उसने धीरे और मधुर स्वरसे कहा—देखो तुम सबके सामने ऐसी बातें कहा करते हो और ऐसा करनेमें मुझे लज्जित होना पड़ता है। आज रातको निर्जन नाट्यशालामें मिलो तो तुम्हारी बात मान भी लूं। किन्तु ये बातें किसीको मालूम न होने पावें।

द्रौपदीकी इन बातोंसे कामान्ध-कीचकको बड़ा आनन्द हुआ। उसके हृदयकी आशा-लता लहलहा उठी। वह बड़े ही प्रसन्न मनसे अपने घर गया। इधर द्रौपदी भी अपना मतलब गांठ कर भीमके पास आयी और सब बातें उनको कह सुनायीं।

इधर कीचकके आनन्दका ठिकाना न रहा। अपनी मनोकामना सिद्ध होते देख कर रातको सुगन्धित माला आदि विहारकी सामग्रीसे वह अपनेको सजाने लगा। इस समय उसका मन बहुत ही व्यग्र हो रहा था। एक क्षण भी उसके लिये कल्पके बराबर मालूम पड़ता था। यथासमय वह उस निर्जन और अंधेरे स्थान पर पहुंचा। भीम वहां पहले ही डटे हुए एक कोनेमें बैठे थे। कामातुर कीचक ने उन्हें द्रौपदी ही समझा और कहने लगा—देखो! असंख्य सुन्दरियोंको छोड़ मैं तुम्हारे लिये इस अंधेरेमें आया हूं। स्त्रियां सदा कहा करती हैं कि मेरे समान सुन्दर दुनियांमें कहीं कोई नहीं देखा होगा।

"तुमने भी ऐसा स्पर्श सुखका अनुभव कभी न पाया होगा।" यह कह कर भीम कीचककी ओर बढ़े और उसके बाल पकड़ उस पर टूट पड़े।

कीचक चौंक पड़ा और जोरसे झटका देकर उसने अपने बाल छुड़ा लिये तथा भीमके दोनों हाथ पकड़ लिये। अब दोनोंमें विकट बाहु-युद्ध होने लगा। कीचकने भीम पर बड़े जोरसे आघात किया। पर भीम इससे विचलित नहीं हुए। वे उसको घरके मध्यभागमें घसीट लाये और इधर उधर घसीटने लगे। क्रोधसे भीमकी धीरता जाती रही, वे बड़ी ही अधीरतासे लड़ रहे थे। इससे कीचकने मौका पाकर एक टांग मारी और भीम एक दमसे पृथ्वी पर आ गिरे। पर भीम तुरन्त उठ खड़े हुए और पहलेसे दूने क्रोध और सावधानीसे उन्होंने उस पर आक्रमण किया। उन्होंने कीचकको बड़े जोरसे धक्का मारा, जिससे वह जमीन पर गिर पड़ा और उठने लायक न रहा। उसके गिरते ही भीम उसके बाल पकड़ कर फिर उसको जमीन

होने लगा। अपना कुछ वश न चलते देख वह जोरसे चिल्लाने लगा।
तब भीमने उसका गला दबा कर उसका चिल्लाना बन्द कर दिया
और उसको बुरी तरहसे पशुओंके समान मार डाला।

कीचकको मार डालने पर भी भीमका क्रोध शान्त न हुआ।
उनके हृदयमें क्रोधकी ज्वाला धधक रही थी। इससे उन्होंने उसके
मृत-शरीरको कई बार पृथ्वी पर रगड़ा। इसके बाद उसके हाथ, पैर
और शिर उसके पेटमें घुसेड़ दिये। इससे उसके शरीरकी यह दशा
हो गयी कि देखने वाले यह नहीं पहचान सकते थे कि यह मृत
मनुष्यका शव है।

द्रौपदी भी उसके बगलवाले घरमें बैठी हुई युद्ध-समाप्तिकी प्रतीक्षा
कर रही थी। कीचकको मार डालने पर भीमने उसे बुलाकर आग
जलायी। इसके बाद उस लाशको ठोकर मार कर द्रौपदीके सामने
कर दिया और कहा—देखो! इस कामान्ध पापीकी कैसी दुर्गति
हुई, जो तुम्हारा अपमान करेगा, वह भी इसी गतिको प्राप्त होगा।
यह कह कर भीम वहांसे चले गये।

इसके बाद द्रौपदीने सभासदोंके पास सन्देशा भिजवाया कि हे
सभासदगण! देखिये जिस व्यक्तिने मेरा अपमान किया था, उसको
मेरे गन्धर्व पतियोंने किस गतिको पहुंचाया है।

यह खबर पाकर सब लोग मशाल जला जला कर नाट्यशालामें
आये। वहां मृत कीचकके हाथ, पैर और शिर-विहीन खूनसे लथपथ
शरीरको देख कर वे बड़े चकित हुए। उन लोगोंको विश्वास हो
गया कि यह काम मनुष्योंका नहीं है, किन्तु गन्धर्वोंका ही है।
कीचकके भी महाबली आत्मीयजन एक एक कर वहां आ गये और
उस शवके चारों ओर बैठ कर रोने लगे। इसके बाद कीचककी

पास ही खड़ी द्रौपदी पर पड़ी। वे कहने लगे—हे भाइयो! जिसके कारण हमारे भाईकी यह दशा हुई है, वह पापिनी खम्भा पकड़े खड़ी है। अतः इसको अवश्य मारना चाहिये। यदि इस समय इसको न मारो तो कीचककी चिताके साथ इसे भी जला दो, जिससे इस लोकमें न सही परलोकमें कीचक प्रसन्न होगा।

कीचकके भाई बन्धुओंने द्रौपदीको बांध कर मुर्देके ऊपर रख दिया और श्मशानकी ओर चले। विराटराज कीचकके आत्मीयजनों के पराक्रमको जानता था। इसलिये यह अन्याय देख कर भी उसको यह साहस न हुआ कि उन लोगोंको इस अत्याचारसे रोके।

प्राण जानेके भयसे द्रौपदी अत्यन्त व्याकुल हो उठी। वह आर्त्त-स्वरसे विलाप करती हुई कहने लगी—हे गन्धर्वो! मेरी रक्षा करो, सूतपुत्र मुझे भस्म करनेके लिये श्मशान लिये जाते हैं!

भीमसेनने द्रौपदीका करुणापूर्ण रुदन सुना। वे पलङ्गसे उठ बैठे और उन्होंने अपना वेश बदल डाला और सदर दरवाजेको छोड़ कर एक अन्य जगहसे दीवार फांद कर बाहर निकल आये। बड़ी शीघ्रता से श्मशानके पास पहुंचे। वहां पहुंचते ही उन्होंने एक विशाल वृक्ष उखाड़ लिया—और साक्षात् यमके समान उन्होंने सूतपुत्रों पर आक्रमण किया।

भीमसेनके अद्भुत पराक्रमको देख उन लोगोंने उनको गन्धर्व ही समझा। इसलिये द्रौपदीको वहीं छोड़ वे भयसे नगरकी ओर भागने लगे। पर भीम कब छोड़नेवाले थे। क्रुद्ध सिंहके समान भीम वृक्षसे उन पर प्रहार करने लगे। भीमकी मारसे वे विकल हो उठे। कितनों ही को भीमने यमलोक भेज दिया। कितने ही अपना प्राण लेकर भाग गये। इसके बाद आंसुओंसे भरे नेत्रोंसे उन्होंने अपनी प्रियतमा द्रौपदीका बन्धन खोल कर कहा—प्रिये! जो लोग निरपराध तमको

दुःख पहुंचावेंगे, उनकी यही दशा होगी। अब किसी बातका भय नहीं है। तुम निर्भय हो नगरको चली जाओ। अव तुमसे कोई छेड़छाड़ न करेगा। मैं दूसरे रास्तेसे राजमहलको जाता हूं। कीचक की रथीके साथ जो कुछ लोग उसका अग्निसंस्कार देखनेके लिये आये थे, उसके आत्मीयजनोंको मारा गया देख, वे लोग राजाके पास गये और राजासे सब बातें कह सुनायीं। गन्धर्वोंके उपद्रवसे राजा बहुत डरा और रानीके पास जाकर कहने लगा—प्रिये! तुम्हारी सैरिन्ध्री नामक दासी बड़ी रूपवती है, और उसके रक्षक पांच गन्धर्व हैं, वे वड़े पराक्रमी हैं। इसलिये उसको अपने घरमें रखनेसे राज्यकी रक्षा करना कठिन है, अतः उसको अपने घरसे निकाल दो।

भीमके इस अद्भुत साहस और पराक्रमको देख लोग बहुत ही डर गये थे। जब द्रौपदी मरघटसे नगरको लौटने लगी, तब जिस किसीकी ओर वह देखती थी, वह मारे डरके व्याकुल हो उठता और अपने प्राण लेकर भागने लगता।

जिस समय द्रौपदी राजमहलमें पहुंची, उस समय राजा विराट-की कन्या और उसकी सखियां अर्जुनसे नाच-गान सीख रही थीं। उसको सकुशल लौटते देख कर उन सबको बड़ा आनन्द हुआ। वे सब उसके पास आकर कहने लगीं—सैरिन्ध्री! बड़े सौभाग्यकी बात है कि तुम इस दुःखसे छुटकारा पा गयी और सकुशल लौट आयी, जिन लोगोंने तुम्हें सताया वे भी मारे गये।

अर्जुनने कहा—हे सैरिन्ध्री! यह सुननेकी मेरी उत्कट अभि-लाषा है कि विपद्से तुम्हारा छुटकारा कैसे हुआ और पापी कैसे मारे गये?

द्रौपदीने कहा—हे कल्याणी बृहन्नले! तुमको अन्य बातोंसे क्या

मतलब ? तुम्हें तो कन्याओंके साथ आनन्दपूर्वक रहनेसे काम है । जो आपत्तियां मुझको झेलनी पड़ती हैं, वे तुमको तो भोगनी पड़तीं ही नहीं । इसलिये तुम मुझे अत्यन्त दुःखी देख कर भी हंसी की बातें करती हो ।

अर्जुनने कहा—हे सैरिन्ध्री ! वृहन्नलाको तुम्हारे दुःखसे वहुत दुःख हुआ है । तुम इसको निरा पशु न समझो, सच तो यह है कि किसीके हृदयकी बातें कोई क्या जाने ? इसीसे तुम मेरे मनकी बात नहीं समझती हो ।

इसके बाद द्रौपदी रानीके पास गयी । उसे देखते ही रानीने राजाज्ञा सुना कर कहा—सैरिन्ध्री ! तुम्हारे रक्षक गन्धर्वोंके उपद्रव से सब लोग बहुत डर गये हैं । अब तुम्हारा यहां रहना उचित नहीं । तुम जहां चाहो चली जाओ !

द्रौपदीने कहा—हे देवी ! राजा कुछ दिनके लिये और क्षमा करें । मैं बहुत दिनों तक आपके यहां न रहूंगी । थोड़े दिनोंमें मेरे गंधर्व पति मुझे ले जायंगे । यदि गन्धर्व लोग राजासे प्रसन्न रहेंगे तो इस राज्यकी बहुत कुछ भलाई होगी । उन लोगोंके कारण इस राज्य की बुराई होनेका सन्देह आप जरा भी न करें । उनकी प्रसन्नतासे अवश्य इस राज्यका मङ्गल होगा ।
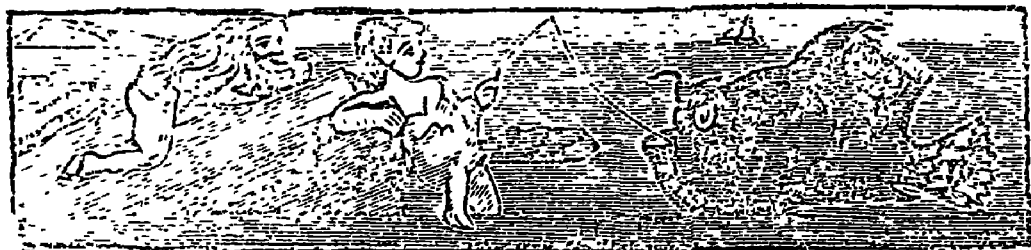
नवम-परिच्छेद।

द्रौपदीसे श्रीकृष्णकी भेंट।

——:o:——

पाण्डवोंके अज्ञातवासकी अवधि समाप्त हो गयी। वे सब अपने असली वेशमें प्रकट हुए। उनकी प्रतिज्ञा पूरी हुई। उन्होंने अपना राज्य कौरवोंसे लेना चाहा। परामर्शके लिये उनके इष्टमित्र सब इकट्ठे हुए। शान्ति स्थापनाके लिये उन लोगोंने श्रीकृष्ण भगवान्‌को अपना दूत बना कर कौरवोंके पास भेजना चाहा। वे शांतिपूर्वक ही राज्य लेना चाहते थे युद्ध करके नहीं। यह देख द्रौपदी जीती ही मुर्दासी हो गयी।

अपने भाइयोंका यह नम्रभाव देख सहदेवसे भी न रहा गया। उन्होंने श्रीकृष्णसे कहा—हे शत्रुसंहारक केशव! महाराज युधिष्ठिर और अन्य दूसरे सब भाई धर्ममार्ग ही को उत्तम समझते हैं। वे अपनी भलाई, शान्तिकी चेष्टामें ही समझते हैं। पर मेरी राय यह नहीं है। मैं तो किसी प्रकार भी इस चेष्टाको उत्तम नहीं समझता। मैं तो समझता हूं कि भरी सभामें द्रौपदीका अपमान किया गया है, उसका प्रायश्चित्त दुर्योधनकी मृत्यु है। उसके मारे बिना मेरे हृदयका संताप किसी तरहसे भी दूर नहीं हो सकता।

सहदेवकी बातोंकी प्रशंसा करते हुए उसका समर्थन कर सात्यकि ने कहा—हे पुरुषोत्तम! श्रीमान् सहदेवने जो कुछ कहा है, वह बहुत ही उचित है। पांचों पाण्डवों और तपस्विनी द्रौपदीको वनवास और अज्ञातवासमें जो महान् क्लेश उठाने पड़े हैं. उनसे हम सबके मनमें

ओंसे मैं थर थर कांपा करती हूं। राजा [illegible]

"हे केशव; सन्धिका संदेश लेकर तो जाते हो, इन केशोंके अप-
मानकी बातको मत भूलियेगा।"

क्रोधाग्नि धधक रही है । इस अग्निकी शान्ति बिना दुर्योधनका रक्त-पात किये नहीं हो सकती । ऐसा कौन योद्धा होगा—जो इस बात का अनुमोदन न करेगा—जिसके मुंहसे यह न निकलेगा कि ऐसे बड़े भारी अपराधका दण्ड दुर्योधनकी मृत्यु है !

महाबली सात्यकिकी बातें सुन उपस्थित वीरोंमें कोलाहलसा मच गया । सभी सात्यकिकी बातकी बारबार प्रशंसा करने लगे ।

सहदेव और सात्यकिकी बातें सुन द्रौपदीके हृदयमें भी नवीन जीवनका सञ्चार हुआ । अपने मनकी बातें सुन उससे चुपचाप न रहा गया । उसने जाना कि मेरे दुःखमें दुःखी होनेवाला भी यहां कोई है । अविरल अश्रुधारा बहाती हुई वह कृष्णसे कहने लगी—"हे मधुसूदन ! धृतराष्ट्रके पुत्रोंने हम लोगों पर क्या अत्याचार किये हैं, उनको बार बार बतानेकी आवश्यकता नहीं । वे सब बातें आपसे छिपी नहीं है । धर्मराजने केवल पांच गांव लेकर आपके सामने ही सन्धि करनेकी इच्छा प्रकट की थी, पर उसे भी कौरवोंने स्वीकृत नहीं किया । आप कौरवोंकी सभामें जाते तो हो, पर सम्पूर्ण राज्य लिये बिना और किसी शर्त पर सन्धि न करना । कौरवोंकी सभामें जब मेरा घोर अपमान किया गया, उस समय भी मेरे पति नम्रभाव धारण किये बैठे रह गये । सब अपमान सब निरादर उन्होंने चुपचाप सह लिये, चूं तक नहीं की । अब वे अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर चुके । इस समय वे किसी प्रकारके बन्धनमें नहीं हैं । अब काम करनेका समय आ गया है । इस समय भी भीम और अर्जुन नम्रता धारण किये हुए हैं । उनकी बातें सुन कर मेरा हृदय टूक टूक हो रहा है । इस समय मेरी रक्षा करनेवाला अगर कोई है, तो तुम्हीं हो । मैं तुम्हारी शरण हूं ! तुम्हीं धृतराष्ट्रके पापी पुत्रोंको उचित दण्ड दो । यदि मेरे पति युद्ध करना न चाहें न करें, कुछ भी हानि नहीं । मेरे

वृद्ध पिता और मेरा महावीर भाई युद्ध करेंगे। अभिमन्युको आगे करके मेरे महाप्रतापी पुत्र युद्ध करेंगे ! वे युद्धसे हटनेवाले नहीं। मेरा प्यारा पुत्र अभिमन्यु शत्रुओंका संहार करेगा !"

इतना कह कर द्रौपदी दुःखसे विह्वल हो उठी। वह दुःखके आवेगको न रोक सकी, वह फूट फूट कर रोने लगी। जब दुःखका वेग कुछ कम हुआ, तो वह अपने बिखरे हुए का केशोंको हाथमें लेकर कहने लगी—"हे केशव ! जब कौरव-सभामें शांतिकी चर्चा छिड़े, तब पापी दुःशासनके हाथके स्पर्शसे अपवित्र हुए, मेरे इन केशोंकी बात न भूल जाना !"

कृष्ण द्रौपदीको सान्त्वना देते हुए बोले—

हे कल्याणी ! जिस तरह आज तुम रो रही हो, उसी तरह कौरवोंकी स्त्रियां भी बहुत शीघ्र ही रोवेंगी। अब अधिक मत रोओ, आंसू पोंछ लो। पाण्डव बहुत शीघ्र शत्रुओंका नाश कर अपना राज्य प्राप्त करेंगे।

इसके बाद श्रीकृष्ण भगवान् अपना रथ अस्त्र शस्त्रोंसे सजवाकर हस्तिनापुर जानेको तैयार हुए और सबसे बिदा होकर सात्यकिके साथ रथ पर जा बैठे। उनके साथ हथियारोंसे सजे दश महारथी, एक हजार सवार, एक पैदल सेना भी रवाना हुई। इनके अलावा भोजनकी सामग्री भी साथमें थी। श्रीकृष्णके सारथि दारुकके घोड़ों का रास थामते ही वे हवासे बातें करने लगे। इस प्रकार सज कर श्रीकृष्णने हस्तिनापुरके लिये प्रस्थान किया।

—:०:—

दशम-परिच्छेद ।

अश्वत्थामाका कुलघातक कार्य ।

श्रीकृष्ण यथासमय हस्तिनापुरसे लौट आये । अदूरदर्शी दुर्योधन पाण्डवोंको राज्य देना नहीं चाहता था । उसकी दुर्बुद्धिसे सन्धि नहीं हुई । पाण्डव राज्य लिये बिना नहीं रह सकते थे, पर उनके लिये सिवा युद्धके अन्य कोई मार्ग राज्य पानेके लिये नहीं रहा । अतः अन्तमें उन लोगोंने युद्ध करना ही निश्चित किया ।

दोनों ओरसे कुरुक्षेत्रके मैदानमें शिविर पड़ने लगे । बाल-बच्चे और दलबलके साथ पाण्डव और कौरव समरभूमिमें आ डटे । दोनों ओरकी सेनायें नियत दिनके आनेकी राह बड़ी उत्सुकताके साथ देखने लगीं ।

युद्धका नियत दिन आ पहुंचा । दोनों सेनाओंकी मुठभेड़ हो गयी । अब क्या था, योद्धागण अपना अपना कला-कौशल और हाथकी सफाई दिखाने लगे । प्रलयकारी युद्ध होने लगा । जिसका वर्णन करनेकी आवश्यकता यहां नहीं है । इस भयङ्कर युद्धका अन्तिम फल यही हुआ कि कौरव सेनाके इने गिने दो चार वीरोंके सिवाय और कोई न बचा । पाण्डवोंके भी बहुतसे वीर इस युद्धमें मारे गये । अर्जुनके वीरवर पुत्र अभिमन्यु भी इस महायुद्धमें कौरव-महारथियोंके षड्यन्त्रमें फंस कर अपना अपूर्व बल-विक्रम दिखा कर स्वर्ग पधारे । इस षड्यन्त्रके मुखिया जयद्रथको वीर अर्जुनने मारकर पाण्डवोंका शोक शान्त किया । अभिमन्युकी मृत्युके समय अभि-

मन्युकी स्त्री विराटपुत्री उत्तरा, गर्भवती थी । इसलिये वह सती न हुई और उसके गर्भसे यथासमय परीक्षितने जन्म लिया ।

कौरव वीरोंमें कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कृतवर्मा और दुर्योधन, जो मृत्युकी बाट देख रहे थे बच गये । पिताकी मृत्यु और दुर्योधनकी यह दशा देख गुरु द्रोणाचार्यके पुत्र अश्वत्थामासे न रहा गया । उसने प्रतिज्ञा की कि मैं पिताके वध करनेवालोंसे अवश्य बदला लूंगा चाहे धर्मसे या अधर्मसे ।

उसकी ये बातें सुन कर कृपाचार्यने बहुत कुछ उसे धर्मकी शिक्षा दी पर उस क्रोधांधने एक न मानी ।

दुर्योधनके कहनेसे कृपाचार्यने शास्त्रानुसार अश्वत्थामाको सेनापतिके पद पर नियुक्त किया । इसके बाद वह अपने रथमें घोड़े जोत पाण्डवोंके शिविरकी ओर चल पड़ा । कृपाचार्य और कृतवर्मा भी उसके पीछे पीछे हो लिये ।

शिविरके द्वारपर पहुंचकर कृपाचार्य और कृतवर्मा ठहर गये । अश्वत्थामा द्वारपालोंकी निगाह बचाकर शिविरके भीतर चला गया ।

उस समय पाण्डव और पाञ्चाल वीर गाढ़ी नींदमें सो रहे थे । सोते हुए धृष्टद्युम्नको लात मार कर अश्वत्थामाने जगाया । धृष्टद्युम्नका शरीर सोतेसे जागने और अचानक आक्रमणसे काबूमें न था । अश्वत्थामाने लात मार मार कर पशुके समान उसे मार डाला ।

धृष्टद्युम्नकी चिल्लाहटसे स्त्रियां और द्वारपाल जाग पड़े । उन्होंने अश्वत्थामाको भूत समझा । इससे डरके मारे किसीके मुंहसे साफ शब्द न निकला ।

स्त्रियोंके रोने और चिल्लानेका शब्द सुनकर प्रधान प्रधान पञ्चालवीर जाग पड़े और अपने अपने अस्त्र लेकर अश्वत्थामाका सामना करने लगे । पर उसने रुद्रास्त्र द्वारा सबको मार डाला ।

इसके बाद अश्वत्थामाने पांचों पाण्डवोंके भ्रमसे द्रौपदीके पांचों पुत्रोंके शिर काट लिये और उनको लेकर दुर्योधनके पास चला गया। वहां जाकर उसने कहा—राजन्! मैं पांचों पाण्डवोंका सिर काटकर लाया हूं! लीजिये, यह भीमसेनकी खोपड़ी है!

दुर्योधनने उस खोपड़ीको ले लिया और पैरके नीचे दबाया, दबाते ही खोपड़ी चूर चूर हो गयी। तब दुर्योधनने आश्चर्यमें आकर कहा—रे मूढ़! यह शिर भीमका नहीं है, भीमकी खोपड़ी इतनी कमज़ोर न होगी कि दबाते ही टूट जाय। यह बच्चेका शिर है! जान पड़ता है कि ये द्रौपदीके पांचों पुत्रोंके शिर हैं! हे मूढ़! तूने मेरे वंशका भी समूल नाश कर दिया! यह कह दुर्योधनने अपने प्राण छोड़ दिये!

एकादश-परिच्छेद ।

—:*०*:—

दयावती द्रौपदी ।

अपने पांचों पुत्रोंकी मृत्युका संवाद पाकर द्रौपदी संज्ञाहीन होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी । मूर्छा पर मूर्छा आने लगी । इस असह्य वेदनासे उसका हृदय फटने लगा । उसके लिये संसार निराधार हो गया । इस समय शोकसे वह अत्यन्त विह्वल हो गयी और हा पुत्र ! हा पुत्र ! कहकर विलाप करने लगी ।

अन्तमें शोक और क्रोधसे अधीर होकर अर्जुनके पास गयी । उनसे वह रो रो कर कहने लगी—हा नाथ ! मैं जीकर ही क्या करूंगी । मेरे प्यारे पुत्र सोते हुए मारे गये । हाय ! आप लोगोंके रहते हुए मेरे पुत्र इस क्रूरतासे मारे गये । मेरे पुत्रोंका मारनेवाला क्या जीता ही बचा रहेगा ? जब तक मेरे पुत्रोंके मारनेवालेको प्राणदण्ड न मिलेगा, तब तक मैं अन्न जल ग्रहण न करूंगी !

द्रौपदीका करुणापूर्ण विलाप सुनकर अर्जुन क्रोधसे उबल पड़े । उसको धीरज देते हुए उन्होंने कहा—मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि तुम्हारे पुत्रोंके मारनेवालेका शिर काटकर तुम्हारे सामने उपस्थित करूंगा, तुम उस पर खड़ी होकर स्नान कर अपने हृदयकी ज्वाला शान्त करना !

यह कह वीर अर्जुनने श्रीकृष्णसे कहा, हे केशव ! मेरा रथ शीघ्र ले चलिये । उन्होंने क्षणभरमें रथ अश्वत्थामाके पास पहुंचा दिया । वह भी युद्ध करनेके लिये डट गया । अर्जुनको देखते ही उसने

करने लगे । पर उसने रुद्रास्त्र द्वारा सबको मार डाला

इस प्रलयकारी अस्त्रको देख अर्जुनने किंकर्तव्यविमूढ़ होकर श्रीकृष्ण भगवान्‌से पूछा—"हे केशव ! अब क्या करना चाहिये ?"

श्रीकृष्णने कहा—हे अर्जुन ! तुम भी ब्रह्मास्त्र छोड़ो। दोनों ब्रह्मास्त्रोंका युद्ध अन्धेरेमें होगा। अश्वत्थामा यह अस्त्र छोड़ना जानता है, पर लौटाना नहीं जानता और तुम छोड़ना लौटाना दोनों जानते हो। तुम दोनों अस्त्रोंको लौटा लेना।

श्रीकृष्णकी आज्ञा पाकर अर्जुनने भी ब्रह्मास्त्र छोड़ा। दोनों अस्त्रोंमें प्रलयकारी युद्ध होने लगा। उनके तेजसे संसार व्याकुल हो उठा। यह देख श्रीकृष्णने कहा—हे वीर ! तुम मन्त्र द्वारा दोनों अस्त्रोंको लौटा लो। अर्जुनने ऐसा ही किया।

इसके बाद अर्जुनने अश्वत्थामाको परास्त कर वन्दी कर लिया। उन्होंने प्रतिज्ञा तो की थी उसे मार डालनेकी, पर गुरुपुत्र और ब्राह्मण होनेसे उनको दया आ गयी। इसलिये उसका वध नहीं किया। उन्होंने यह निश्चय किया कि द्रौपदीके पास ले चलूं जो वह कहेगी, वही होगा। अतः उसे द्रौपदीके पास ले आये।

उसे देखकर द्रौपदीका शोकसागर उमड़ आया। वह अधीर होकर रोने लगी। उसका हृदय दयासे आर्द्र हो गया। वह रोती हुई कहने लगी—हे आर्यपुत्र ! इसे छोड़ दो ! इसे न मारो ! जिस प्रकार आज मैं अपने पुत्रोंके लिये रो रही हूं, जितना शोक मुझे हो रहा है, वही दशा इसकी माताकी भी होगी। दूसरे यह गुरुपुत्र और ब्राह्मण है। इसको मारनेसे अब मेरे पुत्र तो लौट ही नहीं सकते।

युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, आदिने भी द्रौपदीकी प्रशंसा करते हुए उसकी बातका समर्थन किया। अन्य जितनी भी स्त्रियां वहां उपस्थित थीं, द्रौपदीको सभी धन्य धन्य कहने लगीं

यह सुन भीमसेनसे न रहा गया। उन्होंने क्रोधसे अपनी गदा जमीन पर पटक कर कहा—

अर्जुनने इसको वध करनेकी प्रतिज्ञा की है। यदि इसको जीता छोड़ दिया जायगा तो अर्जुनकी प्रतिज्ञा भङ्ग हो जायगी। इसको मारनेमें पाप भी न लगेगा। इसमें ब्राह्मणत्व अब रहा ही नहीं। इसने हत्यारेका काम किया है। अतः इसको मार डालना ही चाहिये !

अर्जुनने श्रीकृष्णसे कहा—हे माधव ! क्या कहते हो ? इस समय क्या करना चाहिये ?

श्रीकृष्णने कहा—हे अर्जुन, ऐसी कोई युक्ति निकालो, जिससे इसको मारनेका पाप भी न लगे और द्रौपदीका वचन भी पूरा हो जाय। धर्मराजकी भी बात रहनी चाहिये और तुम्हारी प्रतिज्ञा भी पूर्ण हो।

अर्जुन बड़े समझदार थे। कृष्णका मतलब समझ गये। उन्होंने सोचा कि अब कोई ऐसा उपाय करना चाहिये जिससे सब बातें निपट जायं। उन्होंने पहले उसके शिरके बाल मुड़वा दिये। इसके बाद तलवारकी नोककी तीक्ष्ण धारसे उसका शिर चीर कर उसके माथेमेंसे मणि निकाल ली और सेनासे बाहर करवा दिया। ब्राह्मण-का धन हर लेना, देशसे बाहर निकाल देना, मृत्यु ही के समान है, ऐसी धर्मशास्त्रकी आज्ञा है। इससे द्रौपदीकी बात भी रह गयी और गुरुपुत्र तथा ब्राह्मणके प्राण भी बच गये।

करने लगे। पर उसने रुद्रास्त्र द्वारा सबको मार डाला।

कौरव महारथियोंके चक्रव्यूहमें वीर बालक अभिमन्युका युद्ध ।

द्वादश-परिच्छेद ।

—:*:o:*:—

युधिष्ठिरकी विरक्ति ।

—:o::o:—

महाभारतकी भयङ्कर समराग्निमें भस्मीभूत आत्मीय जनोंके शोक से युधिष्ठिर व्याकुल हो उठे। मृत वीरोंके पारिवारिक जनोंका करुणापूर्ण विलाप सुनकर विश्वास हो गया कि इस सारे अनर्थका मूल कारण मैं ही हूं। अतएव इस पापके प्रायश्चित्तके लिये उन्होंने तपस्या करनेका निश्चय किया। किन्तु धर्मराजकी यह दशा वीर अर्जुनसे न देखी जा सकी और उन्होंने क्षात्रधर्मके अनुकूल सब प्रकारसे युधिष्ठिरको समझाया। उन्होंने कहा कि गुरुजनोंके बतलाये हुए मार्गका अनुसरण करनेहीसे कर्तव्यपूर्ति और धर्मरक्षा हो सकती है। इसपर फिर युधिष्ठिरने कहा कि अब मेरा मोह दूर हो गया है, अतएव ज्ञानके मार्गसे वैराग्यका सहारा लेकर मैं सदैवके लिये शान्ति प्राप्त करूंगा। बनवासी बनकर तप करनेसे ही मेरे पापोंका प्रायश्चित्त होगा।

अग्रजकी ये बातें सुनकर भीमने कहा—महाराज, यदि अन्तमें आपको विरक्त बनकर ही रहना था, तो व्यर्थके लिये क्यों इतना नर-संहार कराया? यदि कर्म त्यागकर बनवासी बन जानेका ही नाम मोक्ष है, या पेट पालनेसे ही सिद्धि प्राप्त होती हो, तो पशु-पक्षी सभी मुक्त कहे जा सकते हैं? किन्तु नहीं सच्चा मोक्ष धर्मानुसार कर्तव्य पालनसे ही प्राप्त होता है।

इसके बाद नकुलने कर्मों की महिमा और वेदोक्त नियमोंके पालन

का महत्व दिखलाते हुए कहा कि सच्चा त्यागी वही है, जो संसारमें रहकर भी विकारोंके वशीभूत नहीं होता। राजा यदि अपने प्रजा-पालनादि धर्म छोड़ बैठे तो वह पापका भागी होता है।

महाराज युधिष्ठिरने जब इन लोगोंकी युक्तिपूर्ण बातोंका कोई उत्तर नहीं दिया, तो द्रौपदीसे चुप न रहा गया। उसने कहा,—हे नाथ! क्या आप द्वैत वनकी बात भूल गये? उस समय आप हीने तो कहा था कि जब शत्रुओंकी लाशोंसे पृथ्वी भर जायगी, तभी युद्ध रूपी प्रलयकारी यज्ञकी दक्षिणा पाकर यह वनवासका दुःख दूर होगा। क्या वे बातें आपके आजके वर्त्तावको देखकर हमें दुःखित नहीं करतीं? इससे तो उचित यह था कि आपको एकान्त-वासकी सम्मति देकर शेष चारों पाण्डव, सारा राजकाज सम्हालते? क्या मुझ पुत्रहीनाकी दशापर भी आप ध्यान नहीं देंगे?'

इन सबकी बातें सुनकर धर्मराजने कहा कि भाई, मैं वेद और धर्मशास्त्र दोनोंको भलीभांति जानता हूं! तुम लोग वीर हो, अतः तुम्हें ये बातें ठीक नहीं जान पड़तीं। तुम लोग सांसारिक ऐश्वर्यको प्रधानता देते हो, परन्तु मैं इसे असार मानता हूं। क्योंकि ऐश्वर्य भोगनेसे वासना बढ़ती है और उसके त्यागसे निवृत्ति होती है। अतएव त्यागको ही ब्रह्मज्ञानका साधन समझकर विषय-वासना छोड़ कर ही सच्ची शान्ति प्राप्त हो सकती है। धर्मराजकी यह दशा देख कर व्यासदेव और श्रीकृष्णने उन्हें समझाया, तब जाकर उन्होंने राज्य करना स्वीकार किया और उनको हस्तिनापुर लानेकी तैयारी होने लगी।

त्रयोदश-परिच्छेद ।

समृद्धिशील पाण्डव ।

सोलह सफेद घोड़ोंसे खींचे जानेवाला रथ जोता गया। उसपर महाराज युधिष्ठिर सवार हुए। भीम उनके सारथि हुए, अर्जुनने उनके मस्तक पर छत्र लगाया, नकुल और सहदेव चंवर डुलाने लगे। कृष्ण आदि मित्र भी दूसरे रथ पर सवार हुए और धृतराष्ट्र और गंधारी पालकी पर। कुन्ती-द्रौपदी आदि अनेक प्रकारकी सवारियों पर विदुरके साथ रवाना हुईं। इस तरह युधिष्ठिर सपरिवार हस्तिनापुरके लिये चले।

राजा युधिष्ठिर धीरे धीरे राजपथको पारकर राजभवनके पास पहुंचे। वन्दीजनोंके स्तुतिगानसे नगर गूंज उठा। चारों ओरसे पाण्डव और द्रौपदीके प्रशंसासूचक वाक्य सुनायी पड़ रहे थे और जय जयकार हो रहा था। नगरनिवासी आकर कहने लगे—महाराज ! आपने सौभाग्य और बाहुबलसे शत्रुओंको धर्मानुसार पराजित करके राज्य पाया है, अब हम लोगोंके राजा होकर धर्मानुसार प्रजा-पालन कीजिये ।

इन्द्रलोकके समान शोभित राजभवनमें पहुंच कर युधिष्ठिर रथसे उतरे। घरमें प्रवेश कर उन्होंने प्रथम कुलदेवका पूजन किया, फिर ब्राह्मणोंको बहुतसा धन देकर सन्तुष्ट किया। उस समय जयघोषसे आकाश गूंजने लगा। सर्वत्र आनन्द ही आनन्द हो रहा था।

इसी समय नाना प्रकारके रत्न, सोना, चांदी आदि अनेक धातु-

उत्तरकी ओर चले। रेगिस्तान पार करनेके बाद हिमालयकी पर्वत-मालायें और उनके बीचमें सुमेरुकी चोटी दिखायी देने लगी। यहांसे पहाड़ी रास्ता बहुत ही दुर्गम होने लगा। राजकुमारी द्रौपदी बहुत थक जानेसे योग-भ्रष्ट हो पतियोंके सामने ही पृथ्वी पर गिर पड़ी! यह देख भीमसेनने धर्मराजसे पूछा,-"हे आर्य! हम लोगोंकी प्रियतमा द्रौपदीने कभी कोई अधर्म नहीं किया, फिर इस तरह उसका पतन क्यों हुआ?" धर्मराजने कहा,-"भाई! द्रौपदीके सामने हम सब लोग समान थे, पर अर्जुन पर उसकी प्रीति कुछ अधिक थी, यही उसके इस पतनका कारण है।" कुछ देर बाद सहदेव भूमि पर गिरे। भीमसेनने फिर युधिष्ठिरसे पूछा—"राजन्! भाई सहदेव तो सदा हम लोगोंके आज्ञाकारी थे। सदा हम लोगोंकी सेवा करते थे, फिर वे इस तरह क्यों गिर गये?" युधिष्ठिरने कहा,-"भाई उनके गिरनेका कारण यही है कि वे अपनेको सबसे अधिक बुद्धिमान् समझते थे।" द्रौपदी और सहदेवके गिरनेसे युधिष्ठिरके चित्तमें जरा भी विकार पैदा न हुआ। अटल चित्तसे बचे हुए भाइयोंके साथ महाराज युधिष्ठिर चलने लगे। कुत्तेने धर्मराजका साथ नहीं छोड़ा, वह भी साथ साथ चलने लगा। थोड़ी दूर जानेके बाद द्रौपदी और सहदेवके गिरनेसे दुःखित और योगभ्रष्ट होकर नकुल भी पृथ्वी पर गिर पड़े। तब भीमसेनने वही प्रश्न युधिष्ठिरसे किया—महाराज! नकुलने सदा हम लोगोंकी आज्ञा बड़ी सावधानीसे पालन की है, धृष्टताका व्यवहार कभी नहीं किया, तब इस समय उनको क्यों पतित होना पड़ा? युधिष्ठिर बोले—भाई! नकुल अपनेको बड़ा रूपवान् समझते थे इसी अहङ्कारके कारण उनका पतन हुआ। इन शोककारक बातोंको महावीर अर्जुन अधिक देर तक न सह सके और थो[illegible] देर [illegible] वे भी शीघ्र ही पृथ्वीपर गिर गये। यह दे

पहलेहीके समान फिर प्रश्न किया—महाराज ! सर्व गुणागार अर्जुनने हंसीमें भी कभी झूठ नहीं बोला, इस समय उसका पतन क्यों हुआ ?

युधिष्ठिरने उत्तर दिया—भाई अर्जुनको अपनी शूरताका बड़ा अभिमान था, उसके अनुसार वे काम नहीं कर सके। इसीसे उन का पतन हुआ। तुम उनकी ओर न देखो। मेरे साथ चले आओ। यह कह कर युधिष्ठिर दृढ़तासे आगे चलने लगे। कुत्ता भी उनके साथ चला जाता था। प्रिया भार्या और प्यारे भाइयोंके वियोगको अन्तमें भीमसेन भी न सह सके। वे भी शीघ्र ही भूमि पर गिर पड़े। गिरते गिरते उन्होंने बड़े जोरसे धर्मराजको पुकार कर कहा—हे आर्य ! मैं आपका प्रिय भाई हूं। मुझे किस पापसे गिरना पड़ा ? युधिष्ठिरने कहा—भाई ! तुम दूसरोंकी परवा नहीं करते थे। अपने बाहुबलके मदमें मस्त रहते थे। इसीसे तुम्हारा पतन भी हुआ। अब केवल धर्मराज बच गये। सिवाय उस कुत्तेके और कोई उनके साथ न रहा। अटल चित्तमें धर्मराज चलने लगे। इसी समय रथके शब्दसे पृथ्वी और आकाशको गुंजाते हुए देवराज इन्द्रने आकर कहा—राजन् ! अब अधिक कष्ट न उठाओ। मेरे साथ इस रथ पर चलो।

दुःखी युधिष्ठिरने उत्तरमें कहा—हे देवराज ! कोमलाङ्गी द्रौपदी और अपने प्यारे भाइयोंको पृथ्वीपर पड़ा छोड़ मैं स्वर्गको नहीं जाना चाहता। उनके बिना मेरे लिये स्वर्ग नर्कके समान है। इन्द्रने कहा—द्रौपदी और तुम्हारे चारों भाई, पार्थिव शरीर त्याग कर तुमसे पहले स्वर्ग चले गये। उनके लिये शोक न करो। तुम सदेह मेरे साथ चलो, वहीं वे लोग भी मिलेंगे।

इन्द्रकी इस बातसे धर्मराजको कुछ धीरज बंधा। उन्होंने फिर ... । यह कुत्ता मेरा परम भक्त है इसने मेरा साथ कहीं

नहीं छोड़ा । इसको भी मेरे साथ स्वर्ग चलनेकी आज्ञा दीजिये । इसके उत्तरमें इन्द्रने कहा—धर्मराज ! आज तुमने सबसे बड़ी सिद्धि लाभ की है, तुम अतुल सम्पत्तिके अधिकारी हुए हो। स्वर्गमें सुख भोग करो । इस सामान्य कुत्तेके लिये क्यों दुःखी होते हो ? युधिष्ठिरने कहा—हे देवेन्द्र ! मैं अपने सुखके लिये इस असहाय, भक्त और शरणागत कुत्तेको नहीं छोड़ सकता !

इन्द्रने कहा—हे धर्मराज! कुत्ता एक अपवित्र जीव है। यह यज्ञ क्रियाको देखले तो यज्ञका फल नष्ट हो जाता है। अतः स्वर्गमें इसको स्थान कैसे मिल सकता है ? यह सुन दृढ़संकल्प धर्मराज बोले—हे इन्द्र ! इस कुत्तेको छोड़ मैं स्वर्ग नहीं जाना चाहता। जब धर्मराजने यह प्रतिज्ञा की तब वह कुत्ता धर्म स्वरूप होकर उनसे कहने लगा—बेटा मैं केवल तुम्हारी परीक्षा लेता था। अब मैं समझ गया तुम पूरे समझदार, सच्चे धर्मात्मा और सब जीवों पर दया करनेवाले हो। मैं तुम्हारे धर्माचरणसे अति प्रसन्न हुआ हूं, तुम स्वर्गमें अक्षय सुख लाभ करो। इसके बाद देवताओंने आकर धर्मराजको इन्द्रके साथ रथ पर बैठा दिया और धर्मराज सदेह स्वर्गको चले गये ।

भारतीय-नारी-रत्नमालाके

* दस रत्न *

सावित्री-सत्यवान ।

अनेक रङ्ग बिरंगे चित्रोंसे सुसज्जित। सुन्दर ऐण्टिक पेपर। इस पुस्तकमें सती-शिरोमणि सावित्रीके अद्भुत चरित्रको सरल और प्राञ्जल भाषामें ऐसे अच्छे ढङ्गसे लिखा गया है कि जिसके पढ़ने से हिन्दू बालक-बालिकायें तथा हिन्दू रमणियां पातिव्रत्यके मर्मको सरलतासे हृदयङ्गम कर सकें। सती-शिरोमणि सावित्रीके पुण्यमय चरितको युगयुगान्तरसे सती-रमणियोंका आदर्श माना जाता है। सावित्री-सत्यवानके हृदय-ग्राही, मनोरञ्जक, शिक्षाप्रद उपाख्यानको पढ़कर हरएक हिन्दू सन्तानको अपना मन और प्राण पवित्र करने चाहिये। मूल्य सर्वसुलभ ।।) मात्र। हमारी इस सीरीज़की अनेक प्रसिद्ध पत्रोंके सम्पादकों और शिक्षा-विभागके डायरेक्टरोंने मुक्त-कण्ठसे प्रशंसा की है।

हिन्दू जातिके कीर्ति-स्तम्भ—

नल-दमयन्ती ।

अनेक रङ्ग बिरंगे चित्रोंसे समलंकृत। सुन्दर ऐण्टिक पेपर। इसमें पुण्यश्लोक राजा नल और परम पति-भक्ति-परायणा महिमान्विता दमयन्तीकी पवित्र और हृदयग्राही मनोरञ्जक कथाका उल्लेख है। राजा नल परम धार्मिक थे। उनमें जुवा खेलनेका एक भयङ्कर व्यसन था, जिसके प्रभावसे पुण्यश्लोक राजा नल, अपना सर्वस्व खोकर वनमें मारे-मारे फिरे। पतिभक्ति परायणा दमयन्ती, राजकुमारी होकर भी उनके पीछे पीछे भिखारिणी वेश धारण कर फिरने लगी। वनमें कितने कष्ट उठाने पड़े और अन्तमें पति-पत्नी-विच्छेद हुआ। किन्तु दमयन्तीके पातिव्रत्यके ही प्रभावसे अन्तमें सुधर-मिलन और स्वराज्य प्राप्त हुआ। मूल्य ।।) मात्र।

भारतके सौभाग्य सूर्य ।

शैव्या-हरिश्चन्द्र ।

अनेक रङ्ग विरंगे चित्रोंसे सम्वलित । हिन्दू जातिके कीर्ति-स्तम्भ, भारतके सौभाग्य-सूर्य, गौरव-रवि, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र और उनकी महिमामयी सती-शिरोमणि पत्नी शैव्या, अयोध्याके राजा और रानी थे । ऋषि विश्वामित्रके साधारण कोपके कारण इन्हें अपना समस्त राज्य क्षणभरमें छोड़कर पथका भिखारी बनना पड़ा ! शैव्या ब्राह्मणकी दासी बनी । स्वयं महाराज हरिश्चन्द्र दक्षिणा की पूर्तिके लिये एक चाण्डालके दासत्वको स्वीकार करनेके लिये विवश हुए । शैव्या और हरिश्चन्द्रके एकमात्र पुत्रके आकस्मिक काल-कवलित हो जानेके कारण एकाकिनी शैव्या पुत्रको कन्धे पर लाद कर जब काशीके श्मशानमें पहुंची, तो चाण्डाल रूपी राजा-हरिश्चन्द्रसे भेंट हुई ! शैव्या-हरिश्चन्द्र पौराणिक उपाख्यान है । इसमें लिखी करुण-कहानीको पढ़ कर रोमाञ्च हो जाता है । मूल्य ॥)

नारी-समाजका सुन्दर शृंगार ।

सीता-देवी ।

अनेक रङ्गीन चित्रोंसे सुसज्जित । रामप्रिया महीयसी भगवती सीताको कौन नहीं जानता । कैसे विचित्र ढङ्गसे जन्म हुआ । हर-धनु भंग होने पर स्वयं मर्यादापुरुषोत्तम रामसे विवाह हुआ । माता कैकेयीका कोप और वन-गमन । राजा दशरथकी मृत्यु, पञ्चवटीमें सीता-हरण, हनुमान-सुग्रीवकी मित्रता, लङ्का पर चढ़ाई और रावण का सकुटुम्ब वध । अशोक-वनसे सीताका आगमन । रामकी शङ्का और सीताकी अग्नि-परीक्षा । रामचन्द्रजीकी राज्य-प्राप्ति । लोकापवादके कारण रामका सीताको निर्वासित करना । कुश और लवका जन्म । रामचन्द्रजीका अश्वमेध-यज्ञ, वाल्मीकि मुनिका कुश-लवको लेकर जाना । बालकों द्वारा अद्भुत रामचरित-कीर्तन । सीताका पुनः आगमन । लोगोंकी फिर आशङ्का और सीताकी पुनः परीक्षाकी तैयारी । माता वसुन्धराका वक्ष-विदीर्ण और सीता की अपूर्व समाधि ! इस उपाख्यानको पढ़ कर हृदय पवित्र भावोंसे पूर्ण हो जाता है । मूल्य सर्वसुलभ ॥=) मात्र रखा गया है ।

शङ्कर-प्रिया सतीशिरोमणि—

सती-पार्वती ।

हरएक हिंदू घरमें हर-पार्वतीका पवित्र नाम बड़ी श्रद्धा और भक्तिके साथ स्मरण किया जाता है। इस उपाख्यानमें सती-पार्वती का बाल्यकाल, सतीकी शिक्षा, सतीकी तपस्या, सतीका शिव-दर्शन, सती-स्वयम्वर, सतीका विवाह, दक्ष यज्ञमें शिवका अपमान, सतीका देह त्याग। वीरभद्र द्वारा दक्ष-यज्ञ भङ्ग तथा दक्ष-वध। सतीका दूसरा अवतार, बाल्यकाल, शिव-पूजन, मदन-भस्म, पार्वती की घोर तपस्या, प्रेम-परीक्षा, सतीका विवाह और गणेश तथा कार्त्तिकेयका जन्म। इसको पढ़नेसे साधारण पढ़ी लिखी भारतीय-रमणियां और अल्प-वयस्क बालक-बालिकायें बड़ी सरलतासे हर-पार्वतीकी विचित्र कथाको हृदयङ्गम कर सकती हैं। अनेक रंगीन चित्रोंसे सुसज्जित। सुन्दर कागज पर छपी हुई। मूल्य सर्वसुलभ यही ||) मात्र।

साहित्य-संसारका श्रृङ्गार।

शकुन्तला।

संसारप्रसिद्ध कविकुलचूड़ामणि कालिदासका 'अभिज्ञान-शाकुन्तलम्' नाटक-उपाख्यानके रूपमें अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। संसार-प्रसिद्ध महाकवि कालीदासके इस जगद्व्यापी संस्कृत नाटक का उपाख्यानके रूपमें उल्लेख किया गया है। उपाख्यानकी एक एक पंक्ति, कवित्व और कल्पना-कौशलसे परिपूर्ण है। शकुन्तला उपाख्यानमें दाम्पत्य स्नेह, नारी-कर्त्तव्य, सती-धर्म और विश्व-विमुग्ध प्रेमको जगमगाता-उज्ज्वल चरित्र-चित्रित किया गया है। इसके पढ़नेसे इतिहास, उपन्यास, नाटक और काव्यका एक साथ आनंद आता है। बाल, वृद्ध, वनिता सभीको इस अद्भुत चरित्रको पढ़ कर जीवन सफल करना चाहिये। भाषा सरल है। अनेक रंगीन चित्र देकर सुसजित किया गया है। मूल्य सर्वसुलभ ||-) मात्र।

धनुर्धर अर्जुन प्रिया—

देवी-द्रौपदी ।

द्रौपदीके पवित्र उपाख्यानका उल्लेख महाभारतमें बहुत ही अच्छे ढंगसे हुआ है । इस उपाख्यानमें द्रौपदीका जन्म, बाल्यकाल, स्वयम्बर, विवाह तथा भगवान् श्रीकृष्णके साथ बन्धुत्व-स्थापन, चीर-हरण, पाण्डवों पर विपत्ति और राज्य हरण तथा देश-निर्वासन । विराट-राजमहलमें दासी कर्म, कीचक-वध और अन्तमें कौरवोंसे घनघोर संग्राम । पाण्डवोंकी विजय-वैजयन्ती, भगवान् श्रीकृष्णका सहयोग और सहायता आदि समस्त बातोंका उल्लेख बहुत ही सरस और सरल भाषामें किया गया है । द्रौपदीका चरित्र अनेक राजनीतिक रहस्योंसे पूर्ण है । पुस्तकमें अनेक भावपूर्ण रंग बिरंगे चित्र देकर इसकी शोभा द्विगुणित करदी गई है । बढ़िया पेपर और सुन्दर छपाई । मूल्य सर्वसुलभ ॥=) मात्र रखा गया है । सभी लोगोंने इसकी प्रशंसा की है ।

पुराण-प्रसिद्ध उपाख्यान—

शर्मिष्ठा-देवयानी ।

सुन्दर छपाई और बढ़िया कागज़ । अनेक रंगीन चित्रोंसे संग्रलित । देवी-शर्मिष्ठाका चरित्र अपने घरकी बहू बेटियोंको पढ़ाकर हृदय पवित्र कीजिये । श्रीमद्भागवत्में शर्मिष्ठा-देवयानीका उपाख्यान लिखा हुआ है । इस उपाख्यानको पढ़नेसे वृथा अभिमान करने वालियोंका अभिमान नष्ट होता है । शर्मिष्ठाके उदय और करुणा-पूर्ण भावसे सत्यनिष्ठा एवं नारी-कर्तव्यकी शिक्षा मिलती है । पिता की मर्यादाकी रक्षाके लिये शर्मिष्ठाने जो आत्म-त्याग कर दिखाया, उसका उदाहरण मिलना कठिन है । देवयानीने क्रोधवश हो जो भयानक काण्ड उपस्थित कर दिया था, वह शर्मिष्ठाके सौजन्य और कर्त्तव्य-निष्ठा तथा सहृदयताके कारण दूर हो गया । क्रोध पर दया ने विजय प्राप्त की । इसीलिये शर्मिष्ठाकी कर्तव्य-निष्ठाके प्रभावसे देवयानीका नाम भी अमर हो गया मूल्य वही सर्वसुलभ ।।) मात्र रखा गया है ।

मेवाड़के बलिदानोंका रक्त-रञ्जित इतिहास—

मेवाड़-गौरव।

स्वाधीनता-प्राप्ति के लिये संसारमें अनेक देशोंने पग-पग पर बलिदान किये हैं। फ्रान्स, अमेरिका, रूसका नाम अमर हो गया। इनमें भी वीर-प्रसविनी आयर्लैण्डकी भूमिके सुपुत्रोंने जो बराबर बारहसौ वर्ष तक स्वाधीनता-प्राप्तिके लिये आत्म-बलिदान कर दिखाया—उसका उदाहरण संसारमें मिलना कठिन है। परन्तु भारतवर्षमें भी वीर-भोग्या वसुन्धरा मेवाड़ने जो अपूर्व बलिदान कर दिखाया है, उससे निखिल भारतका मस्तक आज भी ऊंचा है। जिस समय मुगल-साम्राज्य की विभीषिकासे समस्त देश कांप रहा था, देशी राज-रजवाड़े एकके बाद एक झुकते जा रहे थे, उस समय एक मेवाड़ ही ऐसा प्रदेश था, जिसके राजा और प्रजा स्वाधीनताकी रक्षाके लिये मैदानमें डट गये थे। उनको भय दिखाया गया, लोभ-लालचकी मृग-मरीचिकाके दर्शन कराये गये, परन्तु मेवाड़वासी टससे मस भी नहीं हुए। उस समय मेवाड़की स्वाधीनता एवं कुल-गौरवकी रक्षाके लिये वहांके महाराणा ही ने नहीं, बल्कि सामन्त-सरदारों, राज कर्मचारियों, रनवासकी अन्तःपुर-वासिनी वीरांगना महिलाओं, ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्रों एवं बाल-वृद्ध-वनिताओं तकने अद्भुत और अभूतपूर्व बलिदान कर दिखाये थे। मातृभूमिकी मान-गौरवकी रक्षाके सामने, सगे-सम्बन्धियोंका स्नेह, रूपवती स्त्रियोंका रूप-सौन्दर्य भी उनके लिये तुच्छ था। सतीत्व-धर्मकी रक्षाके लिये अनेक पद्मिनीसी सुन्दरी महिलायें अग्निमें कूद कर प्राण विसर्जन कर देती थीं। कुल—गौरवकी रक्षाके लिये कृष्णासी अल्प-वयस्का रूपवती बालिकायें, सहर्ष हंसती हुई गरल पान कर तुरत भव-बन्धनसे मुक्त हो जाती थीं। कई शताब्दियों तक मुगलोंका संघर्ष मेवाड़से जारी रहा, परन्तु मेवाड़-वासियोंने जरा भी अपना मस्तक मुगलोंके सामने नहीं झुकाया। इस पुस्तकमें मेवाड़के ग्यारह राणाओं और उनके साथी सामन्त-सरदारों एवं अनेक वीरांगना महिलाओंके आत्म-बलिदानोंका ओजस्विनी भाषामें मर्मस्पर्शी चित्र खींचा गया है। कौन ऐसा भारतवासी है, जो वीर-प्रसविनी मेवाड़की गुण-गरिमाको न पढ़ना चाहता हो। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। पहला संस्करण हाथोंहाथ बिक गया। यह दूसरा संस्करण है। मूल्य सर्व-सुलभ १) मात्र।

कृष्ण-भगिनी-अर्जुन-प्रिया-महीयसी—

सुभद्रा।

अनेक रंगीन चित्रोंसे सुसज्जित। इस उपाख्यानमें सुभद्रा का जन्म, बाल्यकाल और सुभद्रा-हरण, महाबाहु बलदेवका कोप, श्रीकृष्णका उपदेश और अर्जुनकी मैत्री। महाभारतका भयङ्कर युद्ध। वीर-बालक अभिमन्युका सप्तरथियोंके साथ घोर संग्राम। अभिमन्युका बल-विक्रम प्रदर्शनके पश्चात् अन्यायपूर्वक वध। जयद्रथकी नीचता, अर्जुनकी प्रतिज्ञा, कौरवोंका षड्यन्त्र, गुरु द्रोणकी व्यूह-रचना, भगवान् श्रीकृष्णकी राजनीतिक चाल और जयद्रथ-वध आदि बातोंका सरल भाषामें वर्णन किया गया है। महिमामयी वीर-प्रसविनी सुभद्राका पवित्र चरित प्रत्येक भारतीय नारी और बालक-बालिकाओं को पढ़ना चाहिये। इस उपाख्यानको सब लोगोंने बहुत पसन्द किया है। मूल्य सर्वसुलभ ।।=) मात्र रखा गया है।

वीरबाला-महीयसी—

संयुक्ता।

अनेक रंगीन चित्रोंसे सुसज्जित। हिन्दू धर्मरक्षक—महाराज पृथ्वीराज और वीर-रमणी महीयसी संयुक्ताके नामको कौन नहीं जानता? हिन्दू-जातिकी रक्षाके लिये महाराज पृथ्वीराजने सर्वस्व स्वाहा कर दिया और अन्तमें स्वयं भी हिन्दूजातिकी रक्षाके अग्निहोत्रमें बलिदान हो गये। पृथ्वीराजका बदला लेनेके लिये वीर-क्षत्राणी संयुक्ताने शस्त्र उठाया—और सहस्रों यवनोंको मार-काट डाला। संयुक्ताने जैसा बल-विक्रम युद्धमें दिखाया, उसका उदाहरण इतिहासमें नहीं मिलता। इस पवित्र वीरतापूर्ण चरित्रको पढ़ कर प्रत्येक भारतीय-रमणी अपने आत्मगौरवको अनुभव करेगी। हरएक बालक-बालिकाको इस चरित्रको पढ़ कर अपने चरित्र को ऊंचा बनाना चाहिये। हमारी इस पुस्तककी मुक्त-कण्ठसे प्रशंसा की गयी है। मूल्य वही सर्वसुलभ ।।=) मात्र।

रत्नाकर ग्रन्थमाला की

सुप्रसिद्ध सचित्र पुस्तकें।

भक्त-शिरोमणि—

भक्त-ध्रुव।

ऐसा कौन पढ़ा लिखा हिन्दू है, जिसने भक्त-शिरोमणि बालक 'ध्रुव' का नाम न सुना हो। दृढ़ विश्वास, अभूतपूर्व भगवद्भक्तिके कारण ध्रुवका नाम भारतके इतिहासमें अमर हो गया। ध्रुवकी कर्तव्य-परायणता, ईश्वर-विश्वास और कर्तव्य-निष्ठा, विश्व-विश्रुत है। हिन्दुओंके बालकोंका जिस समय उपनयन संस्कार किया जाता है—उनको 'ध्रुव' का स्मरण दिलाकर कहा जाता है, कि वह बालक आजसे अपने धर्म पर ध्रुवकी तरह अटल रहे। इस पुस्तकमें भक्त-श्रेष्ठ उनही भक्त ध्रुवकी सचित्र जीवनी है। प्रत्येक बालक-बालिकाको पढ़ा कर उनका चरित्र गठन करना चाहिये। मूल्य सर्वसुलभ ॥=) है।

सत्याग्रहके आदि जन्मदाता—

सत्याग्रही-प्रह्लाद।

महात्मा गान्धीके असहयोग-आन्दोलनकी कृपासे समस्त संसार, आज सत्याग्रहके स्वरूपको समझ गया है। यहां तक कि महात्माजीसे मतभेद रखने वाले लोग भी जरूरत पड़ने पर सत्याग्रह अस्त्रसे काम लेते हैं। बहुतसे लोग भ्रमवश समझते हैं कि सत्याग्रहके आदि गुरु, महात्मा गांधी ही हैं। परन्तु जिन लोगोंने पुराणोंका पारायण किया है, वे जानते हैं कि आजसे हजारों वर्ष पहले, भक्त-बालक प्रह्लाद द्वारा 'सत्याग्रह' का भारतमें सूत्रपात हो चुका था। बालक प्रह्लादको पर्वतों परसे गिराया गया, विष-पान कराया गया, विषधर सर्पसे डसवाया गया, मत्त हस्तियोंसे रौंदवानेकी चेष्टा की गई, परन्तु धर्म-परायण कर्तव्यनिष्ठ दृढ़व्रती प्रह्लाद, अपने धर्म पर दृढ़ रहे। उनके राक्षस पिताकी कोई भी पाशविक शक्ति, उनको—उनके सत्य-संकल्प और अटल सिद्धान्तसे न डिगा सकी! उन्हीं भक्तवर सत्याग्रही बालक प्रह्लादके जीवन चरित्र तथा उनके विचित्र कार्य-कलापोंका इस पुस्तकमें वर्णन किया गया है। भाषा सरल और अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य वही ॥=) मात्र।

वीर-मुकुट-मणि, चक्र-व्यूह-भञ्जक—

वीर-बालक-अभिमन्यु ।

धनुर्धर गाण्डीवधारी अर्जुन तथा कृष्ण-भगिनी महीयसी सुभद्राके एक मात्र वीरवर पुत्र, वीर बालक अभिमन्युकी वीरताको कौन हिन्दू नहीं जानता । वीरवर अभिमन्यु, अर्जुन और सुभद्राके पुत्र थे और भगवान् श्रीकृष्णके परमप्रिय भानजे और शिष्य । वीरवर अभिमन्यु जैसे सुकुमार बालक थे, उससे कहीं बढ़ कर विद्वान्-नीतिज्ञ, धर्मनिष्ठ और कर्तव्य-परायण थे । वीरतामें तो वे अपने विश्व-विश्रुत पिता धनञ्जय और महागुरु मामा श्रीकृष्णके समान थे । अर्जुनकी अनुपस्थितिमें पाण्डवोंका सर्व-नाश करनेके लिये-जिस समय गुरु द्रोणने चक्र-व्यूह रचा, तो सोलह वर्षके वीर-बालकने उस विचित्र चक्र-व्यूहको भंग कर जो वीरता प्रदर्शित की थी, वह भारतके इतिहासमें सदा अमर रहेगी । इस पुस्तकमें उन्हीं वीरवर अभिमन्युका जीवनचरित सरल भाषामें लिखा गया है । अनेक चित्रोंसे सुसज्जित । हरएक बालक-बालिकाको इस चरित्र को पढ़ना चाहिये । मूल्य वही ।।=) मात्र ।

स्वनामधन्य रामचन्द्र और देवी-सीताके

विश्व-विख्यात पुत्र-द्वय—

लव-कुश ।

कवि-शिरोमणि तुलसीदासजीकी कृपासे भारतके घर-घरमें आज रामायणका प्रचार है । इसलिये मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामके वीरवर पुत्रद्वय लव-कुशका परिचय देना व्यर्थ है । इस पुस्तकमें बालकोपयोगी सरल भाषामें रामायणका संक्षिप्त वृत्तांत, देवी भगवती सीताका निर्वासन, वाल्मीकि-आश्रममें लव कुशका जन्म, और शास्त्र तथा शस्त्र-शिक्षा । रामका अश्वमेध-यज्ञ । लव-कुशका यज्ञके घोड़ोंको पकड़ना । रामचन्द्रजी की सेनाकी चढ़ाई । सुग्रीव, विभीषण, हनुमान, शत्रुघ्न और लक्ष्मणका वीर बालक लव-कुश द्वारा पराजित होना । रामचन्द्रके दरबारमें बालक द्वय द्वारा अद्भुत राम-गुण-गान, इसके बाद, आत्म-परिचय, भगवती सीताका पुनर्ग्रहण और पुनः अग्नि-परीक्षाकी तैय्यारी, परन्तु सीताका पृथ्वीमें-प्रवेश हो जाना आदि बातें, बड़ी ही ओजस्विनी तथा सरल भाषामें लिखी गई है । बालक बालिकाओंके लिये इस पुस्तकका पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह बाल-रामायणकी रामायण और जीवन चरित का जीवन चरित है । मूल्य वही ।।=) मात्र ।

प्रातःस्मरणीय—आदित्य ब्रह्मचारी—

भीष्म ।

महामहिम भीष्म, महाराज शान्तनुके औरस और भगवती गंगाके गर्भजात पुत्र थे। जिस समय महाराज शान्तनु द्वितीय विवाह करना चाहते थे, उस समय महाराजके श्वसुरने महाराजसे यह प्रतिज्ञा करवानी चाही कि राज्यके उत्तराधिकारी भीष्म नहीं होंगे! युवराज, उनकी पुत्रीके गर्भजात पुत्र ही होंगे। महाराज शान्तनु इसके लिये तैयार न हुए। परन्तु जब पितृ-भक्त पुत्र भीष्मको इस बातका पता लगा, तो उन्होंने इसी समय प्रतिज्ञा की, कि मैं उत्तराधिकारी नहीं हूंगा और आजन्म विवाह न कर ब्रह्मचारी रहूंगा! महाराज शान्तनुका विवाह हो गया। भीष्मकी विमाताके गर्भजात पुत्र ही राज्यके अधिकारी हुए। परन्तु भीष्मने आजन्म ब्रह्मचारी रह कर देशकी सेवा की। उस समय भीष्म जैसा सत्य-प्रतिज्ञ, वीर, प्रतापी, महाबली, शास्त्रवेत्ता, देशमें कोई नहीं था। महाभारतके महासमरमें जो प्रचण्ड वीरता भीष्मपितामहने दिखाई थी, वह विश्व-विख्यात है। अनेक चित्र। मूल्य वही ॥=)

हिन्दू जातिके परमप्रतापी अन्तिम चक्रवर्त्ती सम्राट्—

पृथ्वीराज ।

जिस समय भारत पर विदेशी-यवनोंकी लोलुप-दृष्टि लगी हुई थी और वे बार-बार भारत पर आक्रमण करते और मुंहकी खाकर बैरंग लौट जाते थे, यह उसी समयका रक्त-रंजित इतिहास है। उस समय यदि जयचन्द जैसे देश-द्रोही जातीयशत्रु, भारत-वसुन्धराको कलंकित न करते, तो आज भारतका मान-चित्र और ही किसी रूपमें दृष्टिगोचर होता। न आज हिन्दू-मुसलमानोंकी समस्या उपस्थित होती, न स्वाधीनता-प्राप्तिके लिये इतने बलिदानोंकी आवश्यकता पड़ती। आज जो सात करोड़ हिन्दू सन्तान, यवन-धर्मग्रहण करके हिन्दू-देवी-देवताओंके मन्दिरों और मूर्तियों को भ्रष्ट कर रहे हैं, तथा हिन्दी; हिन्दू सभ्यताको रसातलमें भेजनेकी कोशिश कर रहे हैं, इसकी कल्पना भी न होती। उस समय जिस वीरता के साथ वीरवर पृथ्वीराजने यवनोंके छक्के छुटाये थे—वे हिन्दु-इतिहासकी प्रधान सामग्री है। अन्तमें पृथ्वीराज चल बसे! कालातीत समयसे फहराती हुई हिन्दू जातिकी आर्यकीर्त्ति-पताका सदाके लिये नोच-खसोटकर भूमि पर गिरादी गयी! स्वाधीन हिन्दूजातिने पराधीनताकी बेड़ियोंको पहन लिया! भाषा सरल। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य १) मात्र।

हिन्दू-सूर्य, क्षत्रिय-कुल-मुकुट-मणि—

महाराणा—प्रताप ।

जिस समय यवन-साम्राज्यकी अग्नि-ज्वालामें समस्त देश, धू-धू करके बिना रोक टोकके दग्ध हो रहा था,—भारतके प्रसिद्ध विख्यात राजा महाराजागण जिस समय अपनी मुकुट-मणियोंको मुगल सम्राटके पाद-पद्मों निक्षेप करनेमें ही अपना गौरव समझते थे, महा नीतिनिपुण मुगल-सम्राट अकबर, एकके बाद एक हिन्दू राज्यको हड़प करनेमें लगा हुआ था। ऐसे मालूम होता था कि यदि साम्राज्य-लोलुप मुसलमानोंकी यही चाल बराबर जारी रही, तो शीघ्र ही संसारसे हिन्दूजातिका नामोनिशां तक मिट जायगा। सम्राट् अकबरने ओहदों और पदोंका लालच दे और अपनी बाहु शक्तिका आतंक दिखा कर, कुलीन राजपूतोंकी कन्याओं तकसे विवाह करना शुरू कर दिया था। यवन-साम्राज्यकी चिनगारियाँ समस्त देशमें उड़ रही थीं। ऐसा प्रतीत होता था, जैसे इस महा-क्रान्तिकी गोदमें शीघ्र ही विशाल हिन्दूजाति विलीन होनेवाली हो। हिन्दू धड़ा-धड़ मुसल्मान हो रहे थे। इसी समय क्षत्रियकुल-मुकुटमणि महाराणा प्रतापका उदय हुआ। समस्त देशके राजा महाराजा, मुगल-सम्राट् की वश्यता स्वीकार कर चुके थे। कितने ही भूपतिगण अपनी कन्याओं और भगिनियोंको यवनोंकी पर्यंकशायिनी बना कर हिन्दू-जातिको कलंक-कालिमासे कलुषित कर चुके थे—और मुगल सम्राट् की मातहतीमें छोटे बड़े-पद पाकर गुलामों की तरहसे भटकते फिरते थे। इसी समय महाराणा प्रतापने एक ऐसी हुंकार-ध्वनि की, कि समस्त देश कांप उठा! मुगल-सम्राट् का तख्ते-ताऊस हिल गया! हिन्दुओंने बिजलीकी कड़कड़ाहटमें देखा कि हिन्दु-जातिका अस्तोन्मुख सूर्य अभी अस्त नहीं हुआ है! मेवाड़की कन्दराओंमेंसे उसकी रश्मियां पहुंच कर डूबती हुई हिन्दूजातिको आश्वासन दे रही थीं! महाशक्तिशाली मुगल सम्राट् ने हिन्दू जातिके मेवाड़में टिम-टिमाते हुए इस दीयेको गुल करनेके लिये एक बार नहीं, जन्मभर जोर लगाया, परन्तु महाराणा प्रतापका, प्रताप—नहीं—नहीं हिन्दू जातिका प्रताप, बराबर उसको अंगूठा दिखाता रहा। मुट्ठी भर साथियोंको लेकर महाराणा प्रतापने जीवनकी अन्तिम घड़ी तक, हिन्दू-जातिकी विजय-पताकाको बराबर फहराये रखा। यह उन्हीं महामहिम महाराणा-प्रतापका ओजस्विनी भाषामें लिखा सचित्र जीवन चरित और इतिहास है। मूल्य १) मात्र। बालक-बालिकाओंको पढ़ाइये और वीर बनाइये।

वीर-शिरोमणि हिन्दूधर्म-संरक्षक—

छत्रपति शिवाजी।

मुगल-साम्राज्य समस्त देशको हड़प कर चुका था। सम्राट् औरङ्गजेबने हिन्दुओंको मुसल्मान बनानेके लिये अपनी समस्त शक्ति लगा दी थी। हमारे धर्मशास्त्र, मठ-मन्दिर, गो-ब्राह्मण, साधु-संन्यासी, उसकी दया पर जीवित थे! औरङ्गजेब चाहता था कि एक बार समस्त भारतके हिन्दुओंको मुसल्मान बना डालूं! अखिल-भारतवर्षमें मन्दिरोंकी जगह मस्जिदें बन जांय। प्रयाग, काशी, हरद्वार, मथुराको मक्का-मदीना और काबा बना डाला जाय। अज्ञात समयसे जहां वेद-ध्वनिसे अकाश-मण्डल मुखरित होता रहा है, वहां नमाज, कलमा, अजानका बोलबाला हो जाय। इसी समय दक्षिणके एक छोटेसे मुसल्मानी राज्य बीजापुरके कर्मचारीके यहां एक बालकका जन्म हुआ। पूर्वजन्मके पुण्य-प्रतापसे उसे ऐसी सुविधाएं मिलीं कि बचपनमें ही उसे आत्म-बोध हो गया। उसने आसपासके गंवार-मावलोंको साथ लेकर सङ्गठन शुरू किया, और अन्तमें गुरु रामदासके उपदेशसे इसी बालकने बिना विद्या-वैभव और धन-दौलतके, हिंदू-साम्राज्य स्थापित करनेका बीड़ा उठाया! दक्षिणके समस्त राज्योंको छीन-झपट कर महान् हिन्दूधर्मकी शताब्दियोंसे गिरी हुई विजय-पताकाको फहरा दिया। समस्त देशमें हलचल हो उठी। सम्राट् औरङ्गजेबका आसन डोला। उसने अपनी समस्त शक्ति लगा कर शिवाजीको खर्व करना चाहा। इसके लिये लाखों सैनिक रणभूमिकी भेंट चढ़े, करोड़ों रुपया बर्बाद हुआ, परन्तु शिवाजीकी शक्ति बढ़ती ही गयी। औरङ्गजेबने धोखा देकर इमान्दारीका खून किया और इन्हें आगरामें बन्दी तक कर लिया। परन्तु वीरवर शिवाजी कैद तोड़कर भाग गये और जीवनकी अन्तिम घड़ी तक हिन्दूधर्मकी रक्षा करते रहे। इस पुस्तकमें उन्हीं शिवाजीका जीवन-चरित्र तथा उनके अद्भुत कार्य-कलापोंका वर्णन है। शिवाजीका ऐसा अच्छा सचित्र जीवन-चरित आज तक किसी भाषामें नहीं निकला। दर्जनों चित्र हैं। भाषा ओजस्विनी। आप पढ़िये और बालक-बालिकाओंको पढ़ाकर उनके चरित्रको गठित कीजिये। १।)

वैदिक-धर्म-प्रवर्तक बौद्धधर्म-विध्वंसक—

शङ्कराचार्य ।

महात्मा बुद्धके बाद भारतमें बौद्ध-धर्मका बहुत अधि[illegible] हो गया था । राजा और प्रजा तथा पण्डित और मूर्ख स[illegible] धर्ममें दीक्षित हो गये थे । कहीं-कहीं जो थोड़े बहुत वै[illegible] थे भी, उनका बहुत बुरी तरहसे अपमान और तिरस्कार [illegible] जाता था । पाखण्ड और हिन्साको विनष्ट करनेके लिये आविर्भूत हुए बुद्ध-धर्मके अनुयायी, महा-तामसिक, पाखण्डी, दुराचारी और लम्पट होकर हिन्सा करने लगे थे । राजा-महाराजाओंके बौद्ध-मतानुयायी हो जानेके कारण बौद्धोंको वैदिकधर्म पर कुठाराघात करनेके लिये पर्याप्त प्रश्रय मिल गया था । लगातार कई शताब्दियों तक भारतमें नास्तिकतावादका बोलबाला रहा । ऐसा मालूम होता था कि यदि बौद्ध-धर्मके अत्याचार इसी प्रकारसे जारी रहे, तो वैदिक धर्मकी इतिश्री हो जायेगी ! भारतवासी अपने असली स्वरूपको खोकर अज्ञानताके गर्तमें समा जायंगे ! इसी समय भगवान् शंकराचार्यका अवतार हुआ । उन्होंने आजन्म ब्रह्मचारी रह कर नास्तिकतावादका खण्डन किया और पुनः सत्य सनातन-वैदिक-धर्मकी स्थापना कर वेदान्तका प्रचार किया । उस समय यदि शंकर स्वामी न हुए होते तो, आज वैदिकधर्मका नाम भी केवल इतिहास की सामग्री ही होता । शंकर-स्वामीका ऐसा अच्छा सचित्र जीवन-चरित, आज तक किसी भाषामें प्रकाशित नहीं हुआ । इस पुस्तकको पढ़नेसे तत्कालीन भारतका इतिहास, शंकर स्वामीका जीवन, उनके कार्यकलाप तथा बौद्धों और वामियोंके लम्पटतापूर्ण कार्य एवं अद्वैत-वादके सिद्धान्त पढ़नेको मिलेंगे । 'शङ्कर-दिग्विजय' का इसको हिन्दी-संस्करण समझिये । मूल्य १॥) मात्र ।

भारतके सौभाग्यसूर्य, कीर्ति-स्तम्भ गौरव-रवि—

श्रीकृष्ण ।

आनन्द-कन्द गीताके उपदेष्टा, महाभारतके सूत्र-चालक, श्रीमद्भागवत्के प्रधान नायक, महा क्रान्तिकारी भगवान् श्रीकृष्णको कौन नहीं जानता ? जिनके निष्काम-कर्मके आदर्श उपदेश, कर्तव्य-पालन करनेकी गम्भीर वाणीको अपनानेके लिये, अखिल ब्रह्माण्ड व्याकुल हो रहा है। श्रीकृष्णके समान सोलहों कलापूर्ण अवतार न संसारमें कभी हुआ है—न होगा। धन्य हैं वे गोपाल-बाल, जिनके साथ श्रीकृष्ण खेले-कूदे। धन्य हैं वे गोपियां, जिनके साथ रासलीला की। हमारा कोटि कोटि प्रणाम है—वृन्दावन-गोकुलके उस कालिन्दी-तटको तथा वहांके जल, वन, पर्वतोंको—जहां श्रीकृष्णने बाल्यकाल व्यतीत किया। जिस समय श्रीकृष्णका अवतार हुआ, उस समय क्षत्रिय-राजकुल नष्ट हो रहे थे। वर्णव्यवस्था नष्ट होती जाती थी। अधर्माचरण और अनीतिने पुण्यभूमि भारतवर्षके वायुमण्डलको अपवित्र कर दिया था। वैदिकधर्मके माननेवाली आर्यजाति अधःपतित हो रही थी। राज-काजमें, समाजमें और धर्ममें क्रान्तिकी जरूरत आ पड़ी थी। भगवान् श्रीकृष्णने अवतार धारण कर समस्त देशमें भीषण क्रान्ति की। लोप होते हुए वैदिकधर्मको बचाया और कवचस्वरूप गीताका ऐसा उपदेश दिया, जिसके प्रभावसे कल्प-कल्पान्तरमें भी आर्यजातिका विनाश नहीं हो सकता। इसमें श्रीकृष्णके चरित की सभी बातें ओजस्विनी भाषामें लिखी गई हैं। तीस चित्रोंसे सुसज्जित है। श्रीकृष्णका ऐसा अच्छा सर्वाङ्गसुन्दर सचित्र, सस्ता, जीवन-चरित, किसी भाषामें भी नहीं छपा। आप पढ़िये, अपने घरकी स्त्रियोंको पढ़ाइये तथा बालक-बालिकाओंको पढ़ा कर उनके चरित्रको आदर्श बनाइये। केवल इस चरित्रको पढ़नेसे ही श्रीमद्भागवत् और महाभारतका सार-तत्त्व आप सरलतासे हृदयङ्गम कर सकेंगे। मूल्य १॥) मात्र।

हिन्दी-बंगला-शिक्षा ।

समृद्ध साहित्य, बंग-साहित्यके पढ़नेकी रुचि प्रायः सभी साहित्य-प्रेमियोंको रहती है। इस पुस्तकमें वर्ण-परिचयसे लेकर सन्धि-ज्ञान, शब्द रूपावली, धातुओंके रूप, तद्धित, समास, कृदन्त आदि व्याकरणके समस्त आवश्यक विषयोंका सन्निवेश कर दिया गया है। बंगला शब्दोंकी प्रचुरता और अनुवाद-विधिका निदर्शन ऐसे अच्छे ढङ्गसे किया गया है, कि अच्छी हिन्दी और साधारण संस्कृत जानने वाले पाठक सरलतासे विना शिक्षकके दो मासमें ही अनुवाद करने योग्य बंगला सीख जाते हैं। बंगला सीखनेके लिये इससे अच्छी और सस्ती कोई भी पुस्तक हिन्दीमें नहीं है। केवल इसी एक पुस्तकको मननपूर्वक पढ़नेसे बंगला आ जाती है, यह गारण्टी है। मूल्य ||।) मात्र।

हिन्दी-अंग्रेजी-शिक्षा ।

भारत पर अंग्रेजोंका राज्य है। शहर, स्टेशन, अदालत, पोस्ट-आफिस, तारघर, थियेटर, बायस्कोप, सभा-सोसाइटी कहीं भी जाइये, यदि आप अंग्रेजी नहीं जानते, तो मूर्ख हैं! संसारकी गतिका आपको पता ही नहीं लग सकता। आप सफलतापूर्वक कोई व्यवसाय ही नहीं कर सकते। यहां तक कि सभ्य-समाजमें बैठनेकी योग्यता भी आपमें नहीं है। इसके सिवा अंग्रेजी 'लिङ्गो-फ्रैङ्का' है। चाहे जहां चले जाइये। यदि आपमें साधारण अंग्रेजी लिखने-पढ़ने और बोलने तथा समझनेकी योग्यता है, तो आपके लिये कोई कठिनाई पेश नहीं आवेगी। आपके लिये समस्त संसार के रास्ते खुले हैं। इस पुस्तकसे आप स्वयं हिन्दीके सहारे अंग्रेजी सीख सकते हैं। वर्ण-परिचयसे लेकर चिट्ठी-तार लिख पढ़ लेने तककी योग्यता इससे हो जाती है। दो चार मास परिश्रम करनेसे ही आप खूब अच्छी अंग्रेजी लिखने-पढ़ने, समझने तथा बोलने लगेंगे। मूल्य सर्वसुलभ ||।)।